सी-डैक
CDAC

सुधा

सी-डैक वार्षिक हिंदी पत्रिका

अंक - 2 | वर्ष - 2 | विक्रम संवत 2082 | सितंबर 2025

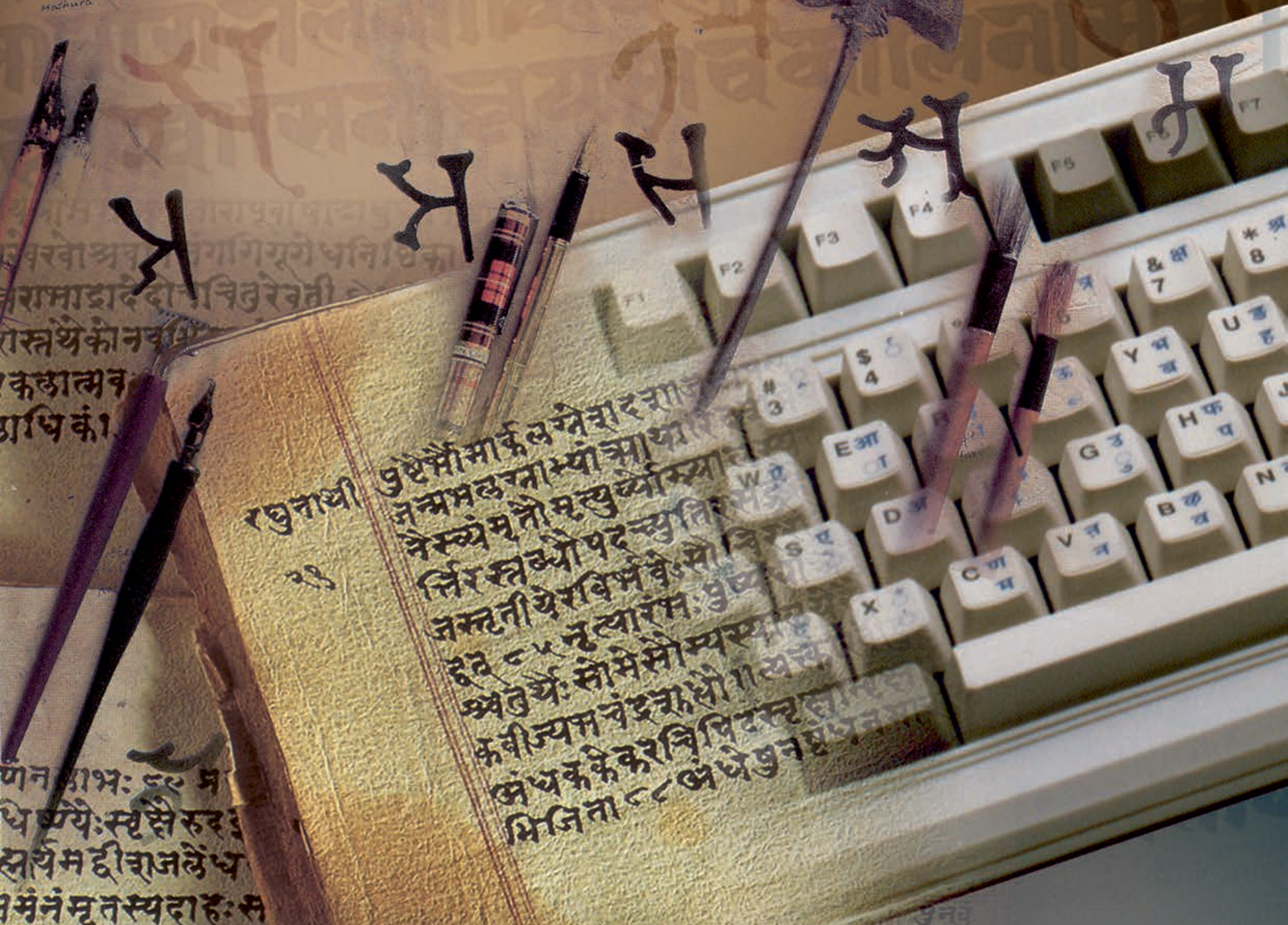

प्रगत संगणन विकास केंद्र, पुणे
CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING, PUNE

अनुक्रमणिका

राजभाषा गतिविधियाँ

अनुक्रमणिका

ई. मगेश
महानिदेशक
E. Magesh
Director General

प्रगत संगणन विकास केंद्र
CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING

इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की वैज्ञानिक संस्था, भारत सरकार
A Scientific Society of the Ministry of Electronics and Information Technology, Government of India

सी-डैक इनोवेशन पार्क
पंचवटी, पाषाण, पुणे - 411008, भारत
C-DAC Innovation Park, Panchavati
Pashan, Pune - 411008, India
फ़ोन / Tel:+91-20-2586 8080
फ़ैक्स / Fax: +91-20-2586 8081
ई-मेल / email: dg@cdac.in /
magesh@cdac.in
www.cdac.in

संदेश

यह गौरव की बात है कि प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक), पुणे द्वारा सुधा वार्षिक हिंदी पत्रिका का प्रकाशन अनवरत रूप से किया जा रहा है। सी-डैक पुणे में राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इससे सी-डैक में राजभाषा हिंदी पल्लवित और पुष्पित तो हो ही रही है, साथ ही अधिकारी व कर्मचारी गण भी अपनी लेखनी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के साथ ही इस पत्रिका को समृद्ध कर रहे हैं। यह पत्रिका सी-डैक, पुणे द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पण और प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह पत्रिका न केवल सी-डैक, पुणे केंद्र के सदस्यों को प्रतिभा दिखाने का अवसर प्रदान करती है, बल्कि हिंदी भाषा और साहित्य में रुचि रखने वाले सभी भाषा प्रेमियों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन भी है।

मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका ज्ञान और रचनात्मकता के लिए एक उत्कृष्ट मंच के रूप में सी-डैक पुणे के सदस्यों और सुधी पाठकों को गौरवान्वित करती रहेगी।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका, अपने दूसरे अंक के साथ अपनी लोकप्रियता में चार चाँद लगाएगी और राजभाषा हिंदी के विकास में अपना अनवरत योगदान जारी रखेगी।

सुधा वार्षिक हिंदी पत्रिका के द्वितीय अंक के प्रकाशन पर सी-डैक, पुणे केंद्र को हार्दिक बधाई एवं अभिनंदन।

ई. मगेश

ई. मगेश

● बेंगलुरु / Bengaluru: +91-80-2509 3400 (Knowledge Park), +91-80-2852 3300 (Electronics City) ● चेन्नई / Chennai: +91-44-2254 2226 ● हैदराबाद / Hyderabad: +91-9100034446
● कोलकाता / Kolkata: +91-33-2357 9846 ● मोहाली / Mohali: +91-172-223 7052-55 ● मुंबई / Mumbai: +91-22-2620 1606 ● नई दिल्ली / New Delhi : +91-11-2651 0221 ● नॉएडा / Noida: +91-120- 3063311 / 14
● नॉर्थ ईस्ट (सिलचर) / North East (Silchar):+91-3842-242009 ● पटना / Patna: +91-612-221 9021 ● पुणे / Pune: +91-20-2550 3100 ● तिरुवनंतपुरम / Thiruvananthapuram: +91-471-272 3333 / 3456

अनुक्रमणिका

संजय वांढेकर
केंद्र प्रमुख, पुणे
Sanjay Wandhekar
Centre Head, Pune

प्रगत संगणन विकास केंद्र
CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING

ITUWTSA NEW DELHI 2024

सी-डैक CDAC

इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की वैज्ञानिक संस्था, भारत सरकार
A Scientific Society of the Ministry of Electronics and Information Technology, Government of India

सी-डैक इनोवेशन पार्क
पंचवटी, पाषाण, पुणे - 411008, भारत
C-DAC Innovation Park, Panchavati
Pashan, Pune - 411008, India
फ़ोन/Tel:+91-20-2586 8082
फ़ैक्स/Fax: +91-20-2586 8083
ई-मेल/email: centrehead-pune@cdac.in
www.cdac.in

शुभकामना संदेश

यह प्रसन्नता और गौरव का विषय है कि सीडैक पुणे कार्यालय सुधा वार्षिक हिंदी पत्रिका के द्वितीय अंक का प्रकाशन कर रहा है। राजभाषा हिंदी न केवल कार्यालयीन कामकाज की भाषा है, बल्कि हम सभी का एक संवैधानिक दायित्व भी है, जिसका अनुपालन करना एवं विनिर्दिष्ट दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्य करना अति आवश्यक है।

गृह पत्रिकाओं के प्रकाशन से कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए अनुकूल वातावरण बनता है। इसके माध्यम से हिंदी के प्रति रुचि रखने वालों के लिए मार्ग प्रशस्त होता है। हिंदी भाषा की सहजता एवं सुगमता ने लोगों के बीच अपनी पहचान बनाई है। हमें विश्वास है कि कलाकृति में समाहित लेख, रचनाएँ एवं पाठ्य सामग्री पाठकों के लिए प्रेरणादायक तथा ज्ञानवर्धक सिद्ध होगें। नई तकनीक और प्रौद्योगिकी के सहयोग से इसकी क्षमता और सामर्थ्य का और भी अधिक विस्तार हुआ है।

मैं पत्रिका प्रकाशन के इस अथक प्रयास के लिए संपादक मण्डल एवं अपना उत्कृष्ट योगदान प्रदान करने वाले समस्त रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि सुधा वार्षिक हिंदी पत्रिका का यह अंक पूरे सीडैक परिवार के लिए अत्यंत रोचक, संग्रहणीय एवं प्रेरणादायक सिध्द होगा।

संजय वांढेकर

संजय वांढेकर
केंद्र प्रमुख, सीडैक पुणे

● बेंगलुरू / Bengaluru: +91-80-2509 3400 (Knowledge Park), +91-80-2852 3300 (Electronics City) ● चेन्नई / Chennai: +91-44-2254 2226 ● हैदराबाद / Hyderabad: +91-9100034446
● कोलकाता / Kolkata: +91-33-2357 9846 ● मोहाली / Mohali: +91-172-223 7052-55 ● मुंबई / Mumbai: +91-22-2620 1606 ● नई दिल्ली / New Delhi : +91-11-2651 0221 ● नॉएडा / Noida: +91-120- 3063311 / 14
● नॉर्थ ईस्ट (सिलचर) / North East (Silchar):+91-3842-242009 ● पटना / Patna: +91-612-221 9021 ● पुणे / Pune: +91-20-2550 3100 ● तिरुवनंतपुरम / Thiruvananthapuram: +91-471-272 3333 / 3456

अनुक्रमणिका

"

निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के,
मिटत न हिय को सूल।।

भारतेंदु हरिश्चंद्र

"

संपादक की कलम से

अत्यंत हर्ष एवं प्रसन्नता के साथ प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक) पुणे की वार्षिक गृह पत्रिका 'सुधा' के द्वितीय अंक का ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशन किया जा रहा है । तकनीकी संस्था में हिंदी की पत्रिका का प्रकाशन सोचना भी कठिन होता है, किन्तु किसी भी संस्थागत पत्रिका के द्वितीय अंक का प्रकाशन प्रथम अंक के प्रकाशन की तुलना में सरल एवं सहज होता है । सरलता का अभिप्राय यहाँ पर प्रक्रियागत चरणों का सुनिश्चित हो जाना होता है और सदस्यों से लेख सहजता से मिल जाते हैं, क्योंकि उनके अंदर की झिझक कुछ हद तक दूसरों को देखकर दूर हो चुकी होती है ।

हिंदी, भारत के संघ की राजभाषा है, जिसकी लिपि देवनागरी है। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार, हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के अनुसार राजभाषा अर्थात् राज-काज की भाषा, सरकारी कार्यालयों में किए जाने वाले कार्यों की भाषा, जन-जन की भाषा, राष्ट्र के गौरव की भाषा, एक-दूसरे को जोड़ने की भाषा, विविधता में एकता की भाषा, विचारों के आदान-प्रदान की भाषा, देश के इतिहास, विरासत, सभ्यता, संस्कृति और परंपराओं आदि को जोड़ने की भाषा है। हिंदी भाषा का प्रसार और विकास करना संघ का कर्तव्य है, जिससे वह भारतीय संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। हिंदी भाषा देश की उन्नति का मार्ग है और इसके प्रयोग से देश को आगे बढ़ाया जा सकता है।

हिंदी भाषा ने विश्व पटल पर अपनी पहचान बनाई है। विश्व स्तर पर हिंदी ने एक सशक्त संपर्क भाषा के रूप में अपना मुकाम हासिल किया है। हिंदी दुनिया की तीसरी और भारत की सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा है। हिंदी सिर्फ भारत देश में ही नहीं बल्कि कई देशों जैसे नेपाल, भुटान, फिजी, बांग्लादेश, मॉरीशस, सिंगापुर, त्रिनिदाद और टोबैगो सहित कई अन्य देशों में भी प्रमुखता से बोली जाती है। हिंदी की जड़े जितनी गहरी हैं, उतना ही समृद्ध इसका इतिहास भी है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली, जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग, भारत सरकार ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी 'बृहत शब्दकोश' के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द-संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।

पत्रिकाएँ संस्थान के उद्देश्यों, लक्ष्यों एवं उपलब्धियों को संस्थान के सभी लोगों के साथ साझा करने का एक सशक्त माध्यम है। गृह-पत्रिका के द्वितीय अंक के प्रकाशन हेतु सीडैक पुणे केंद्र के 50 से अधिक लोगों ने अपनी रचनाएं भेजकर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस अंक में प्रकाशन के लिए 70 से अधिक प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई थी, जिनमें से 56 को ही इस वर्ष प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया और शेष पर अपेक्षित सुधारों के साथ आगामी अंक में विचार किया जाएगा।

पत्रिका का यह अंक आपको कैसा लगा? अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवश्य अवगत कराकर अनुग्रहित करें। आपके बहुमूल्य सुझावों से पत्रिका को समृद्ध बनाने में अत्यधिक सहायता मिलेगी। पत्रिका का पल्लवित एवं पुष्पित, नवीनतम द्वितीय अंक आप सभी तक पहुँचाने में अपना श्रम एवं समय देने के लिए मैं सभी लेखकों, रचनाकारों, संपादक मण्डल के सदस्यों, पत्रिका डिजाइन और प्रकाशन से संबंधित सभी सदस्यों को उनके बहुमूल्य योगदान के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। आशा है कि आप सभी का यह सक्रिय सहयोग निरंतर प्राप्त होता रहेगा।

- डॉ. सुधीर कुमार मिश्र

सुधा वार्षिक हिंदी पत्रिका

अंक - 2 | वर्ष - 2 | विक्रम संवत 2082 | सितंबर 2025

संरक्षक
कार्यकारी निदेशक/केंद्र प्रमुख
सी-डैक, पुणे
ई-मेल: edpo@cdac.in

प्रधान संपादक
डॉ. सुधीर कुमार मिश्र
संयुक्त निदेशक, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: smishra@cdac.in

संपादक मण्डल
सुश्री लक्ष्मी पानट
वैज्ञानिक-एफ, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: lakshmip@cdac.in

सुश्री असीमा मिश्रा
वैज्ञानिक-एफ, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: asima@cdac.in

श्री अमित गुप्ता
वैज्ञानिक-एफ, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: gamit@cdac.in

सुश्री ऋचा रस्तोगी
वैज्ञानिक-एफ, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: richar@cdac.in

सुश्री सायली गोडबोले
वैज्ञानिक-डी, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: sayalia@cdac.in

श्री प्रभाकर पाण्डेय
परियोजना अधिकारी, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: prabhakarp@cdac.in

सुश्री अस्मिता गारगोटे
प्रबंधक, मा.सं.वि., सी-डैक, पुणे
ई-मेल: asmitag@cdac.in

सुश्री जयश्री पोकळे
कार्यकारी व्यवस्थापक, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: jayshreep@cdac.in

कला निर्देशक एवं मुखपृष्ठ रचना
श्री मनोज गोपीनाथ
विभाग प्रमुख, ब्रांडिंग और संचार समूह, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: manoj@cdac.in

पुस्तिका संरचना एवं कलाकृति
ब्रांडिंग और संचार विभाग, सी-डैक, पुणे

डिजिटल संस्करण
श्री शशांक कुमार
निजी सहायक, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: kshashank@cdac.in

पत्रिका हेतु सुझाव
ई-मेल: sudha-pune@cdac.in

राजभाषा अनुभाग
प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक)
पंचवटी, पाषाण, पुणे - 411008 महाराष्ट्र (भारत)

मुखपृष्ठ संकल्पना- हिंदी भाषा का विकास

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

1. तकनीकी लेख संकलन

आईडीएन, यूनिवर्सल एक्सेप्टेन्स और बहुभाषी इंटरनेट - नेहा गुप्ता 1
भारत के लिए स्वदेशी एलएलएम की आवश्यकता - मनीष कुमार गुप्ता 4
भारतीय भाषाओं के लिए कीबोर्ड: वेब और डेस्कटॉप विंडोज पर विकास और उपयोग - सविता सोलंके 8
जीरो नॉलेज प्रूफ - पुनीत बक्शी 12
साइबर सुरक्षा: डिजिटल दुनिया में सुरक्षा की ढाल - शुभांगनी असाटी 15
हिमनद झीलों विस्फोट से उत्पन्न बाढ़ के प्रशमन एवं जोखिम न्यूनीकरण - बिनय कुमार 18
एआई में डेटा गोपनीयता - नेहा गुप्ता 23
चैट सहायक: वेब और दस्तावेज खोज के लिए एआई संचालित स्मार्ट सहायक - मनीष कुमार गुप्ता 26

2. साहित्य यात्रा

'अनुवाद विज्ञान की भूमिका' पुस्तक की समीक्षा - डॉ. शिल्पा 28
द 40 रूल्स ऑफ लव - धवल सोपचंद बारेवार 30

3. भाषा विमर्श

संस्कृत भाषा विमर्श - शुभांगनी असाटी 32
हिंदी-खोरठा काल, पक्ष, वृति - व्यतिरेकी विश्लेषण - डॉ. शिल्पा 36
स्थान और खाद्य पदार्थों के नाम परिवर्तन: एक भाषाई दृष्टिकोण - डॉ. अतिउर रहमान खान 41

4. यात्रा संस्मरण

समुद्र में मोती : अंडमान निकोबार द्वीप समूह की यात्रा - वैशाली महेशकर 44
घोडेश्वर मंदिर: यादों की यात्रा - अक्षय फराकटे 47
जंजीरा किला: समुद्र का अजेय - नितीन कराळे 49
एक पारिवारिक तीर्थयात्रा: वाराणसी, अयोध्या, प्रयागराज एवं देवघर - मनीष कुमार गुप्ता 52
पुष्कर - एक आध्यात्मिक अनुभव - शुभांगनी असाटी 57
महाकुंभ 2025 यात्रा : पुणे से प्रयागराज - सुधीर कुमार मिश्र और मनीष कुमार गुप्ता 59

5. कविता

ग़ज़ल - राजेश कुमार त्रिपाठी 62
अब और नहीं सहना - अक्षय फराकटे 63
कर्मयोग - अस्मिता गारगोटे 64
छत्रपती संभाजी - स्वराज का छावा - नितीन कराळे 65
बचपन - नीलिमा साहू 66
मेरा प्यारा भारत - जयश्री पोकळे 67
सच और झूठ - अमित गुप्ता 68

6. कथा/कहानी

जब दोस्त बना बॉस - योगेश सिंह 69
बड़प्पन - डॉ. धनंजय झालटे 70
सफलता के पीछे छुपी जिंदगी की पहेली - राहुल बोराडे 72

7. चित्रकला

राष्ट्रीय एकता - किशोर पाटील 74
चार्ली चैपलिन - विवेकानंद पाटील 75
वाराणसी घाट - प्रशांत खैरनार 76
शंकर महादेवन - निरंजन पटगांवकर 77

8. गैर-तकनीकी लेख संकलन

मानव - क्या संसाधन मात्र है ! - राजेश कुमार त्रिपाठी 78
कारपूलिंग - एक सतत परिवहन समाधान - देवाशीष ताम्रकार 79
जैविक खेती भारतीय खेती का भविष्य - तानाजी नारायण झेंडे 81
हमारे जीवन में खेलों का महत्व - अरुण वर्मा 84
पैसों का प्रवास - नितीन कराळे 86
फिलैटली- एक अनोखी रुचि - डॉ. अतिउर रहमान खान 91

9. पारिवारिक स्तंभ

नानी का घर - यायीन सिंह पुत्र श्री योगेश सिंह 98
पाँच प्रहरी - रश्मि ताम्रकार पत्नी श्री देवाशीष ताम्रकार 99
महेश्वर - एक अविस्मरणीय स्मृति - सरिता गुप्ता पत्नी श्री अमित गुप्ता 101
हरे चारे के उत्पादन के लिए कम लागत वाली आधुनिक हाइड्रोपोनिक्स प्रौद्योगिकी - सुचिता गुप्ता पत्नी श्री विकास गुप्ता एवं राजेश मुरुमकार 103
प्रकृति - आरना गुप्ता पुत्री श्री मनीष कुमार गुप्ता 107
गणेश जी - अभीष्ट ताम्रकार पुत्र श्री देवाशीष ताम्रकार 107
शिवजी का डमरू - नाइशा कवडीकर पुत्री सुश्री नेहा गुप्ता 108
हनुमान जी - गुरुप्रसाद डोंगरे भाई सुश्री प्रियंका डोंगरे 108
गमला - लास्या पुत्री सुश्री स्वप्ना येनिशेट्टी 109
प्रकृति - पूर्वा गोडबोले पुत्री श्रीमती सायली गोडबोले 109
डूडल - अक्षिता राहुल बोराडे पुत्र श्री राहुल बोराडे 110
प्रकृति का चित्र - परम तांबे पुत्र सुश्री प्रितम तांबे 110
हनुमान जी - प्रेम पाटील पुत्र श्री विवेकानंद पाटील 111
गणेश जी - सिया गोडबोले पुत्री श्रीमती सायली गोडबोले 111
प्रकृति - नूह खान पुत्र डॉ. अतिउर रहमान खान 112
नारी - जिया शोभानी पुत्री सुश्री दीप्ति शोभानी 112

10. प्रतियोगिता परिणाम वर्ष - 2024 113

“ हृदय की कोई भाषा नहीं है। हृदय-हृदय से बातचीत करता है। और हिंदी हृदय की भाषा है।

महात्मा गांधी ”

तकनीकी लेख संकलन

अनुक्रमणिका

आईडीएन, यूनिवर्सल एक्सेप्टेन्स और बहुभाषी इंटरनेट

नेहा गुप्ता

अंतरराष्ट्रीयकृत डोमेन नाम (आईडीएन)

अंतरराष्ट्रीयकृत डोमेन नाम (आईडीएन) पारंपरिक ASCII - अमेरिकन स्टैंडर्ड कोड फॉर इनफार्मेशन इंटरचेंज (एस्की) वर्णों (ए से जेड) के अलावा अन्य वर्णों द्वारा दर्शाए गए डोमेन नाम हैं। ऐसे डोमेन नामों में गैर-लैटिन लिपियों (उदाहरण के लिए, हिंदी, बांग्ला या उर्दू) के अक्षर हो सकते हैं।

यूनिवर्सल एक्सेप्टेन्स (यूए)

वास्तव में, बहुभाषी और डिजिटल रूप से समावेशी इंटरनेट के लिए यूए एक मूलभूत आवश्यकता है। यूए यह सुनिश्चित करता है कि लंबे नए टीएलडी और ईमेल पते सहित सभी वैध डोमेन नाम, स्क्रिप्ट, भाषा या वर्ण लंबाई की परवाह किए बिना सभी इंटरनेट-सक्षम अनुप्रयोगों, उपकरणों और प्रणालियों द्वारा उपयोग किए जा सकते हैं। यह भी सुनिश्चित करता है कि सभी डोमेन नामों के साथ समान व्यवहार किया जाए और सभी इंटरनेट-सक्षम अनुप्रयोग, उपकरण और प्रणाली द्वारा इसका उपयोग किया जा सके। यूए ईमेल एड्रेस इंटरनेशनलाइजेशन (EAI) मानकों के माध्यम से ईमेल मेलबॉक्स नामों के लिए स्थानीय भाषाओं और लिपियों में वर्णों का उपयोग करने की सुविधा प्रदान करता है।

यूए हासिल करने से यह सुनिश्चित होता है कि हर किसी के पास डोमेन नाम और ईमेल पते का उपयोग करके इंटरनेट पर नेविगेट करने और संचार करने की क्षमता है, जो उनकी रुचियों, व्यवसाय, संस्कृति, भाषा और लिपि के साथ सबसे अच्छी तरह मेल खाता है। यूए - तैयार होने से उन करोड़ों लोगों को ऑनलाइन लाने में मदद मिलेगी, जिनमें से कई को वर्तमान में इंटरनेट में भाषाई बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

आईडीएन और यूए, बहुभाषी इंटरनेट की एक मौलिक इकाई है। निम्नलिखित चरणों के द्वारा हम बहुभाषी डोमेन के साथ बहुभाषी इंटरनेट को सक्षम कर सकते हैं।

चरण 1: अपनी भाषा में अपना आईडीएन (बहुभाषी डोमेन नाम) का चयन

यदि आपकी अपनी वेबसाइट अंग्रेजी या किसी अन्य भाषा में है, तो आपको पहले डोमेन नाम को अपनी चुनी हुई भाषा में परिवर्तित / अनुवाद करना होगा। और यदि आपके पास कोई डोमेन नाम नहीं है, तो आप अपनी भाषा में डोमेन नाम तय कर सकते हैं।

यदि आप मौजूदा डोमेन नाम को किसी अन्य भाषा में, उदाहरण के लिए हिंदी में परिवर्तित कर रहे हैं, तो इसमें कुछ भिन्नताएँ हो सकती हैं: यहाँ मैं सीडैक का उदाहरण ले रही हूँ:

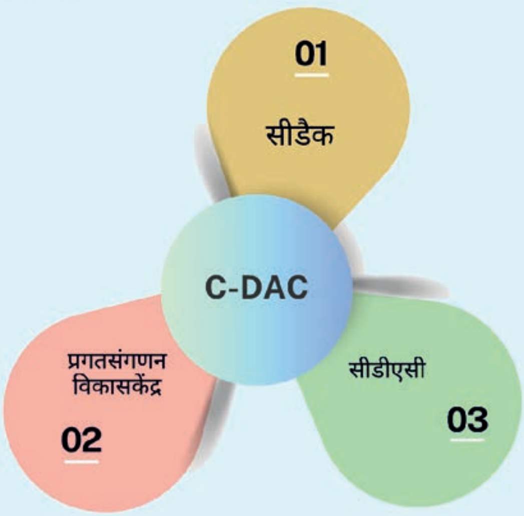

उत्पन्न विकल्पों में से, आप प्राथमिक रूप में एक डोमेन नाम चुन सकते हैं और अपने संगठन की पहचान की सुरक्षा के लिए, एक से अधिक डोमेन नाम रख सकते हैं। हमेशा प्राथमिक डोमेन नाम चुनें, जो सरल, याद रखने में आसान, टाइप करने में आसान होने के साथ-साथ व्यक्ति/संगठन का प्रतिनिधित्व करता हो। अन्य डोमेन नामों को प्राथमिक डोमेन नामों की ओर अग्रेसित या अवरुद्ध कर सकते हैं।

डोमेन नाम पर नीतिगत बाधा

एमईआईटीवाई (MeitY) ने निक्सी (NIXI) और सी-डैक के साथ मिलकर भाषा नीति पर काम किया था, जिसमें संपूर्ण स्तरीय मूल्यांकन नियम (एबीएनएफ नियम) डोमेन नाम के अक्षर और संरचना पर कुछ भाषा संबंधी जाँच करता है। यह भी सुनिश्चित करता है कि स्पूफिंग और फिशिंग को कम करने के लिए डोमेन नाम सभी समान दिखने वाले डोमेन को उत्पन्न करे।

यदि आपका डोमेन नाम इन भाषा जाँचों को पास नहीं कर रहा है, तो डोमेन नाम को वैकल्पिक वर्तनी में लिखने का प्रयास करें या डोमेन नाम में वर्णों की जाँच करें। फिर यह पंजीकरण के लिए पात्र हो जाएगा।

चरण 2: डोमेन नाम का पंजीकरण

एक बार डोमेन नाम पास हो जाने पर, इसे निम्नलिखित के माध्यम से पंजीकृत किया जा सकता है:

यदि आपका मौजूदा डोमेन नाम ".in" के अंतर्गत है, तो आप 22 अनुसूचित भाषाओं में से किसी में भी ".भारत" के लिए किसी भी ".in/registry.in" मान्यता प्राप्त रजिस्ट्रार से अपना डोमेन नाम पंजीकृत कर सकते हैं।

".gov.in" और "ac.in" के मामले में, registry.gov.in और registry.ernet.in आपके डोमेन नाम को क्रमशः "सरकार.भारत" और "विद्या.भारत" के तहत पंजीकृत करेंगे।

चरण 3: आपके डोमेन नाम के लिए नाम सर्वर को मैप करना

एक बार डोमेन नाम पंजीकृत हो जाने के बाद, अगला कदम आपके डोमेन नाम के लिए नाम सर्वर में मैप करना है। नेम सर्वर एक सर्वर है जो एक डोमेन नाम के लिए आपके सभी डीएनएस (DNS) रिकॉर्ड को संग्रहीत करता है, जिसमें ए (A) रिकॉर्ड, एमएक्स (MX) रिकॉर्ड या सीनेम (CNAME) रिकॉर्ड शामिल हैं।

ASCII (एस्की) डोमेन नाम के मामले में, ASCII (एस्की) डोमेन नाम आईपी (IP) पते पर मैप होगा।

हालाँकि, बहुभाषी डोमेन नाम के मामले में, पहले आपको इसे पुनीकोड में परिवर्तित करना होगा। यह पुनीकोड अब आईपी एड्रेस पर मैप होगा। पुनीकोड यूनिकोड के लिए एक ASCII (एस्की) अनुरूप एन्कोडिंग है।

चरण 4: वेबसाइट/वेबपेजों का अनुवाद

संपूर्ण बहुभाषी वेबसाइट प्राप्त करने के लिए, आपको पृष्ठों का अपनी भाषा में अनुवाद/निर्माण करना होगा। अनुवाद प्राप्त करने के लिए, आप अनुवादकों की सहायता ले सकते हैं और पृष्ठों का अनुवाद मैन्युअल रूप से प्राप्त कर सकते हैं।

वैकल्पिक रूप से, आप विभिन्न कंपनियों द्वारा होस्ट किए गए उपलब्ध अनुवाद इंजनों की मदद भी ले सकते हैं। भाषिनी भारत सरकार का प्लेटफॉर्म है, जो मशीनी अनुवाद के साथ-साथ विभिन्न भाषा उपकरण प्रदान करता है।

सी-डैक के पास सामान्य डोमेन से विशिष्ट डोमेन तक मशीनी अनुवाद के समाधान भी उपलब्ध हैं।

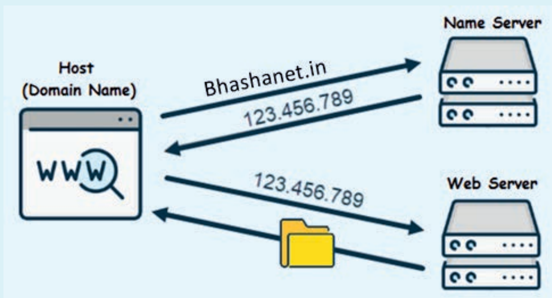

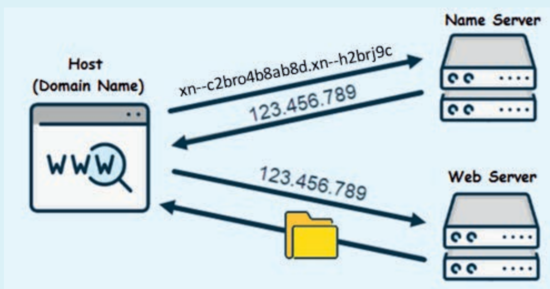

चरण 5: वेब पेजों पर आईडीएन डोमेन नाम की मैपिंग (वेबसाइट की सामग्री)

एक बार जब आपके पास बहुभाषी डोमेन नाम और वेबपेज हों, तो अगला काम इन दोनों को मैप करना है। इसलिए एक बार जब उपयोगकर्ता बहुभाषी डोमेन नाम पर क्लिक करेगा या नेविगेट करेगा, तो उसी भाषा में सामग्री आ जाएगी। इनकी मैपिंग उस तकनीक पर निर्भर करती है, जिसमें साइट विकसित की गई है। यह ड्रुपल (Drupal), जैंगो (Django), एचटीएमएल (HTML) से लेकर नोडजेएस (NodeJS) तक भिन्न होता है। अधिकांश लोकप्रिय प्रयुक्त प्रौद्योगिकियों के लिए मानक प्रक्रिया (एसओपी) भाषानेट वेबसाइट (https://bhashanet.in/sop_document_page) पर उपलब्ध है। आप उनके माध्यम से जा सकते हैं और उन्हें स्वयं लागू कर सकते हैं।

चरण 6: एसएसएल (SSL) प्रमाणपत्र के साथ अपनी वेबसाइट को सुरक्षित/श्वेतसूचीबद्ध करना

वेबसाइट के स्वामित्व को सत्यापित करने, हमलावरों को साइट का नकली संस्करण बनाने से रोकने और उपयोगकर्ताओं पर भरोसा जताने के लिए एसएसएल प्रमाणपत्र स्थापित करना एक महत्वपूर्ण कदम है। आपकी बहुभाषी वेबसाइट के लिए एसएसएल प्रमाणपत्र खरीदने और स्थापित करने की विभिन्न विधियाँ हैं:

- व्यक्तिगत डोमेन नाम के लिए एसएसएल प्रमाणपत्र - यदि हमारी साइट एक से अधिक डोमेन में है तो यह थोड़ा महंगा होगा।
- वाइल्डकार्ड एसएसएल प्रमाणपत्र - यदि आपके पास एक ही डोमेन है, जिसमें एक ही स्तर के कई उप-डोमेन जुड़े हुए हैं (उदाहरण के लिए, हिंदी.विकासपीडिया.भारत,मराठी.विकासपीडिया.भारत और *.विकासपीडिया.भारत), तो सब कुछ एन्क्रिप्ट करने के लिए वाइल्डकार्ड प्रमाणपत्र आदर्श है।
- मल्टीडोमेन एसएसएल प्रमाणपत्र-एसएसएल प्राप्त करने का यह एक सस्ता तरीका है। यह प्रमाणपत्र एक से अधिक डोमेन के लिए मान्य है जो एक बंडल में आता है।

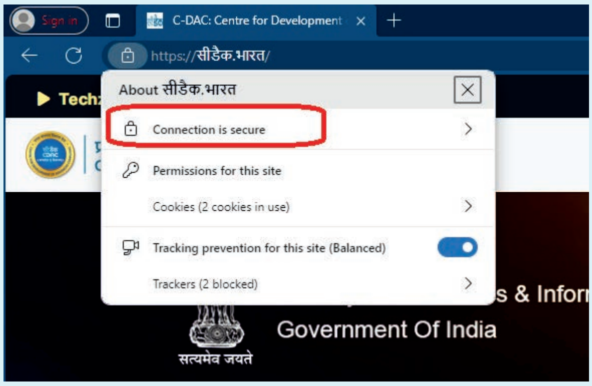

एक बार जब आप सभी चरण पूरे कर लेंगे, तो आपका अनुप्रयोग/वेबसाइट पूरी तरह से आईडीएन तैयार हो जाएगी। अगला कदम अपने अनुप्रयोग/वेबसाइट को यूए तैयार करना है।

भारत के लिए स्वदेशी एलएलएम की आवश्यकता

मनीष कुमार गुप्ता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के युग में बड़े भाषा मॉडल्स (लार्ज लैंग्वेज मॉडल्स Large Language Models - एलएलएम LLMs) जैसे जीपीटी-4 (GPT-4), लामा (LLaMA) और क्लाउड (Claude) ने संवाद, लेखन और समस्या समाधान की दुनिया में क्रांति ला दी है। दुनिया भर में तकनीकी कंपनियाँ और सरकारें अपनी भाषाओं और सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुसार एआई मॉडल विकसित कर रही हैं। ऐसे में भारत के लिए एक स्थानीय एलएलएम फाउंडेशनल मॉडल की जरूरत पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। लेकिन इन मॉडलों को चलाने के लिए अब तक भारी जीपीयू (GPU), पावरफुल सर्वर और आरएजी (RAG: पुनर्प्राप्ति संवर्धित पीढ़ी Retrieval-Augmented Generation) जैसे जटिल सिस्टम की जरूरत मानी जाती थी। अब इस सोच को चुनौती दी जा रही है।

एमआईटी (MIT), काउस्ट (KAUST), इस्ता ISTA और यांडेक्स (Yandex) के शोधकर्ताओं ने एक ऐसी तकनीक पेश की है, जिससे एलएलएम (LLMs) को तेजी से बिना गुणवत्ता में गिरावट के छोटा और कुशल बनाया जा सकता है। इसका मतलब है कि अब ये मॉडल सामान्य सीपीयू (CPU) और हल्के सर्वरों पर भी चल सकते हैं। यह विशेष रूप से भारत जैसे देशों के लिए बेहद अहम है, जहाँ संसाधनों की सीमाएँ हैं, लेकिन संभावनाएँ अपार हैं।

1. भारत को क्यों चाहिए अपना फाउंडेशनल एलएलएम (LLM)?

भारत एक बहुभाषीय, सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधताओं से भरा देश है। विदेशी मॉडल्स भारतीय भाषाओं, बोलियों और संदर्भों को न तो ठीक से समझ पाते हैं और न ही व्यवहारिक समाधान दे पाते हैं। इसलिए भारत को एक ऐसा एलएलएम (LLM) मॉडल चाहिए जो:

- हिंदी समेत 22+ आधिकारिक भाषाओं में दक्ष हो
- भारतीय कानून, शिक्षा, स्वास्थ्य और कृषि से संबंधित क्षेत्र में प्रशिक्षित हो
- हल्के हार्डवेयर और मोबाइल उपकरणों पर भी काम कर सके
- डेटा संप्रभुता और गोपनीयता सुनिश्चित करे

2. आरएजी (RAG) की जरूरत क्यों नहीं?

आरएजी (RAG) तब जरूरी होता है जब मॉडल के पास पर्याप्त जानकारी न हो। लेकिन:

- आधुनिक एलएलएम (LLM) पहले से ही विशाल ज्ञान पर प्रशिक्षित होते हैं
- आरएजी (RAG) प्रणाली जटिल, महंगी और धीमी होती है
- भारत में गुणवत्तापूर्ण आरएजी (RAG) डेटा की भी कमी है
- इसलिए, एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित भारतीय एलएलएम (LLM) बिना आरएजी (RAG) के भी अधिक प्रभावी हो सकता है।

3. हल्के और किफायती मॉडल की दिशा में क्रांति

एमआईटी, काउस्ट, आईएसटीए और यांडेक्स द्वारा विकसित तकनीकों - जैसे क्वांटाइजेशन, प्रूनिंग और नॉलेज डिस्टिलेशन - से अब मॉडल को:

- भारी जीपीयू की जरूरत नहीं
- सामान्य सीपीयू पर निष्कर्ष संभव

- मोबाइल और एज डिवाइसेज पर चलाना आसान
- ऊर्जा और लागत दोनों में बचत

4. भारत की भाषाई विविधता को ध्यान में रखते हुए

भारत में 22 आधिकारिक भाषाएँ और सैकड़ों बोलियाँ हैं। ऐसे में एक बहुभाषीय, बहु-लिपि एलएलएम (LLM) की आवश्यकता है। शुरुआत इन भाषाओं से की जा सकती है:

भाषा	बोलने वालों की संख्या	प्रमुख क्षेत्र
हिंदी	52 करोड़+	उत्तर, मध्य भारत
बंगाली	10 करोड़+	पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा
तेलुगु	8 करोड़+	आंध्र प्रदेश, तेलंगाना
मराठी	8 करोड़+	महाराष्ट्र
तमिल	7 करोड़+	तमिलनाडु
उर्दू	5 करोड़+	उत्तर भारत, जम्मू-कश्मीर
गुजराती	5 करोड़+	गुजरात
कन्नड़	4 करोड़+	कर्नाटक
मलयालम	3.5 करोड़+	केरल
पंजाबी	3 करोड़+	पंजाब, दिल्ली

5.भारत के लिए एलएलएम कैसे बनाया जाए?

क. डेटा सेट निर्माण

एलएलएम के लिए उच्च-गुणवत्ता वाले और विविध डेटा की आवश्यकता होती है। भारतीय संदर्भ में:

- बहुभाषीय डेटा: हिंदी, तमिल, बंगाली, मराठी, पंजाबी सहित अन्य भाषाओं में पाठ डेटा एकत्र करना।
- सरकारी और शैक्षणिक दस्तावेज: भारत सरकार के खुले डेटा स्रोतों, शोध पत्रों और कानूनी दस्तावेजों का उपयोग।
- सांस्कृतिक और ऐतिहासिक जानकारी: भारतीय ग्रंथों, साहित्य, समाचार और ब्लॉग से पाठ निकालना।
- बातचीत और संवाद डेटा: सोशल मीडिया, चैटबॉट इंटरैक्शन और आम बोलचाल के डेटा का संग्रहण।

ख. प्रशिक्षण अवसंरचना

- भारतीय एलएलएम के लिए बड़े पैमाने पर कम्प्यूटिंग संसाधनों की आवश्यकता होगी:
- जीपीयू/टीपीयू (GPU/TPU) क्लस्टर: बड़े पैमाने पर डेटा प्रोसेसिंग और मॉडल प्रशिक्षण के लिए हाई-एंड एनवीडिया ए100 (NVIDIA A100), H100 जीपीयू (GPUs) या गूगल टीपीयू (Google TPUs) का उपयोग।
- स्वदेशी सुपरकम्प्यूटर: भारत के सुपरकम्प्यूटर मिशन का लाभ उठाते हुए संसाधनों का अनुकूलन।
- क्लाउड अवसंरचना: ओएनडीसी (डिजिटल कॉमर्स के लिए खुला नेटवर्क, Open Network for Digital Commerce) और एनआईसी (राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र) जैसी सरकारी एजेंसियों द्वारा समर्थित क्लाउड सर्वर।

ग. बहुभाषीय मॉडल आर्किटेक्चर और प्रशिक्षण

- यूनिकोड-संगत टोकनाइजेशन: सभी भारतीय भाषाओं और लिपियों को समझने के लिए यूनिकोड-जागरूक टोकनाइजेशन तकनीकों का प्रयोग।
- क्रॉस-लिंगुअल एम्बेडिंग: विभिन्न भाषाओं के बीच अर्थ की साम्यता को पहचानने और अनुवाद में सहायक होने वाले एम्बेडिंग।
- आधुनिक ट्रांसफार्मर आर्किटेक्चर: जीपीटी-4 (GPT-4), लामा (LLaMA), बर्ट (BERT) जैसे सिद्ध मॉडल्स के साथ-साथ हल्के और किफायती ट्रांसफार्मर मॉडल्स का उपयोग।
- फाइन-ट्यूनिंग और अनुकूलन: भारतीय भाषाओं, बोलियों और स्थानीय संदर्भों के अनुसार मॉडल को विशेष रूप से प्रशिक्षित और अनुकूलित करना।
- सांस्कृतिक और भाषाई संवेदनशीलता: डेटा में विविधता सुनिश्चित कर बायस कम करना, ताकि सभी क्षेत्रों और समुदायों की आवाज को समान प्रतिनिधित्व मिल सके।

घ. मॉडल अनुकूलन, दक्षता और संपीड़न

क्वांटाइजेशन और प्रूनिंग: छोटे, तेज और ऊर्जा-कुशल मॉडल तैयार करना जो मोबाइल, टैबलेट और अन्य लो-पावर डिवाइसेज पर आसानी से चल सकें।

कम लागत वाले अवसंरचना पर परिनियोजन : भारतीय ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में एआई मॉडल को प्रभावी ढंग से लागू करने हेतु लागत-कुशल समाधान।

- एज और फॉग कम्प्यूटिंग: विकेन्द्रीकृत प्रोसेसिंग के लिए स्थानीय स्तर पर एआई मॉडल्स का संचालन, जिससे इंटरनेट निर्भरता कम हो और प्रतिक्रिया समय बेहतर बने।
- उन्नत संपीड़न तकनीकें: लोरा (LoRA), क्यूलोरा (QLoRA), क्वांटाइजेशन, प्रूनिंग, डिस्टिलेशन आदि विधियों का प्रयोग कर मॉडल को हल्का, तेज और अधिक सुलभ बनाना।

ङ. परीक्षण और सत्यापन

- एथिकल एआई और बायस परीक्षण: सुनिश्चित करना कि मॉडल में सांस्कृतिक, भाषाई या सामाजिक पूर्वाग्रह न हों।
- रियल-वर्ल्ड यूजर्स से फीडबैक: सरकारी विभागों, संस्थानों और आम जनता से परीक्षण करवाना।
- निरंतर सुधार: मॉडल के आउटपुट को मॉनिटर करके आवश्यकतानुसार सुधार करना।

च. अनुप्रयोग और परिनियोजन

- शिक्षा: क्षेत्रीय भाषाओं में संवाद करने वाले लोकल एआई ट्यूटर, जो विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा में सीखने में सहायता करें।
- स्वास्थ्य: भाषाई समझ वाले हेल्थ बॉट्स, जो प्राथमिक स्वास्थ्य सलाह और जानकारी स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध कराएँ।
- कृषि: किसानों के लिए स्थानीय परिस्थितियों और भाषाओं के अनुरूप एआई आधारित सलाहकार, जो फसल, मौसम और बाजार से जुड़ी जानकारी प्रदान करें।
- सरकारी सेवाएँ: आरटीआई, सरकारी योजनाओं और सेवाओं की जानकारी को आम नागरिकों तक उनकी भाषा में पहुँचाने वाले एआई समाधान।

छ. सामुदायिक भागीदारी और ओपन-सोर्सिंग

- ओपन-सोर्स रिलीज: कोड, मॉडल और डेटासेट्स को गिटहब (GitHub) जैसे प्लेटफार्म पर साझा करना।
- स्थानीय योगदान: भाषाई या तकनीकी समुदायों से डेटा या मॉडल सुधार में भागीदारी।
- शैक्षणिक सहयोग: विश्वविद्यालयों या संस्थानों के साथ शोध परियोजना और इंटर्नशिप।
- हैकथॉन व चुनौतियां: क्षेत्रीय भाषाओं और क्षेत्रों पर नवाचार को प्रोत्साहन।
- कम्युनिटी फीडबैक: मॉडल्स का स्थानीय स्तर पर परीक्षण और सुधार।

- ओपन फंडिंग: स्वतंत्र शोधकर्ताओं और समुदायों के लिए ग्रांट्स या फेलोशिप।
- स्थानीय भाषा दस्तावेजीकरण: टूल्स और दस्तावेजों को भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराना।

- **आत्मनिर्भर एआई भारत का आधार**

आज तकनीक का उद्देश्य सरल समाधान देना है, न कि जटिलता पैदा करना। एमआईटी (MIT) और अन्य संस्थानों की शोध ने यह साबित कर दिया है कि एआई अब हल्का, तेज और सुलभ हो सकता है - जीपीयू (GPU) या आरएजी (RAG) के बिना भी। अब समय आ गया है कि भारत अपनी आवश्यकताओं के अनुसार - देसी सोच, देसी भाषाओं और देसी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए - अपना एआई फाउंडेशनल मॉडल तैयार करें।

ऐसा मॉडल जो कहे भारत की भाषा में, समझे भारत की भावना को, और पहुँचे हर गाँव, हर स्कूल, हर किसान तक।

भारत का एआई - भारत के लिए, भारत से।

भारतीय भाषाओं के लिए कीबोर्ड: वेब और डेस्कटॉप (विंडोज) पर विकास और उपयोग

सविता सोलंके

भारत एक बहुभाषी देश है जहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। डिजिटल युग में जब संचार और जानकारी का अधिकांश भाग इंटरनेट और कंप्यूटर के माध्यम से होता है, तब भारतीय भाषाओं को इन तकनीकों के साथ जोड़ना अत्यंत आवश्यक हो गया है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है – कीबोर्ड

भारतीय भाषा कीबोर्ड का इतिहास और विकास

प्रारंभ में, टाइपराइटर आधारित लेआउट जैसे रेमिंगटन (Remington) प्रचलित थे, खासकर हिंदी और मराठी के लिए। बाद में, सरकार द्वारा मानकीकरण के प्रयासों के तहत इंस्क्रिप्ट कीबोर्ड लेआउट तैयार किया गया, जो यूनिकोड आधारित है और सभी भारतीय भाषाओं के लिए एकरूपता प्रदान करता है। इंस्क्रिप्ट को विंडोज, लिनक्स और मैक ओएस जैसे प्लेटफॉर्म्स में शामिल किया गया। इसके अलावा, उपयोगकर्ता की सुविधा के अनुसार फोनेटिक कीबोर्ड एक ऐसा इनपुट उपकरण है, जिसमें उपयोगकर्ता अंग्रेजी अक्षरों का उपयोग करके हिंदी शब्दों का उच्चारण के अनुसार टाइप कर सकते हैं। यह हिंदी टाइपिंग को आसान और स्वाभाविक बनाता है। इस कीबोर्ड से टाइपिंग के लिए ऐसे कई टूल बनाए गए हैं जैसे कि आईएसएम, यूनिकोड टाइपिंग टूल, और आईएसएम लाइट, जो इंस्क्रिप्ट लेआउट, फोनेटिक लेआउट और टाइपराइटर लेआउट पर भी कार्य करते हैं। यह कीबोर्ड भारत की 22 भाषाओं का समर्थन करता है, नामतः असमिया, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, डोगरी, तमिल, तेलुगू, नेपाली, पंजाबी, बांग्ला, बोड़ो, मणिपुरी, मराठी, मलयालम, मैथिली, संथाली, संस्कृत, सिंधी, हिंदी।

कुछ लोकप्रिय (विंडोज) कीबोर्ड सॉफ्टवेयर:

URL:https://www.cdac.in/index.aspx?id=ev_corp_gist_ism_launch
https://www.cdac.in/index.aspx?id=product_details&productId=UnicodeTypingTool

वेब पर भारतीय भाषाओं के कीबोर्ड

वेब आधारित कीबोर्ड ने एक नई दिशा प्रदान की है, खासकर ब्राउजर उपयोगकर्ताओं के लिए। उदाहरणस्वरूप:

- सी-डैक कीबोर्ड (C-DAC keyboard) ने उपयोगकर्ताओं को असमिया, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, डोगरी, तमिल, तेलुगू, नेपाली, पंजाबी, बांग्ला, बोड़ो, मणिपुरी, मराठी, मलयालम, मैथिली, संथाली, संस्कृत, सिंधी, हिंदी जैसे भाषाओं में लिखने की सुविधा दी है।

अनुक्रमणिका

- वर्चुअल कीबोर्ड एपीआई (Virtual Keyboard API) के माध्यम से ऑनस्क्रीन कीबोर्ड को किसी भी वेबसाइट, एडिटबॉक्स या टेक्स्ट बॉक्स में आसानी से जोड़ा जा सकता है।

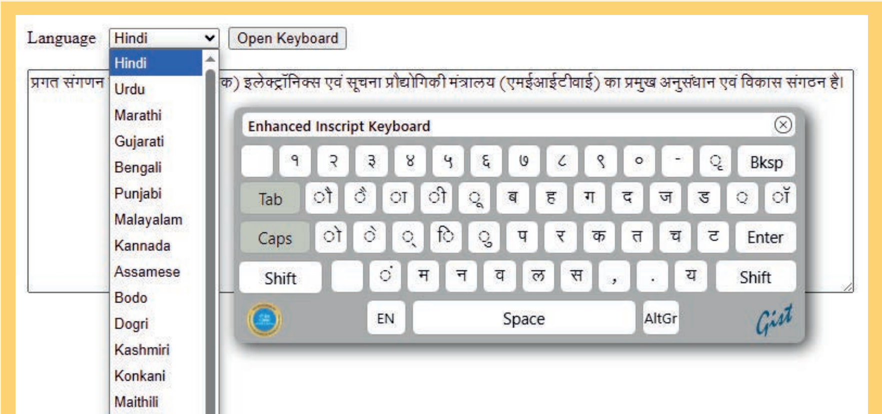

URL:
https://gistlangserver.in/Content/WSLToolbar/Scripts/MultiLingualEnhancedInScriptKeyboard/

'बाराखड़ी-आधारित टाइपिंग सहायता': वेब कीबोर्ड एक नया वेब-आधारित टाइपिंग समाधान है, जिसे भारतीय उपयोगकर्ताओं के लिए बहुभाषी टाइपिंग अनुभव को बेहतर बनाने के उद्देश्य से विकसित किया गया है। इसे गति, सटीकता और उपयोग में सरलता को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। यह कीबोर्ड 'बाराखड़ी-आधारित टाइपिंग सहायता' प्रदान करता है, जो भारतीय भाषाओं में टाइपिंग को सरल बनाता है। यह व्यंजन और स्वरों के बुद्धिमत्तापूर्ण संयोजन द्वारा शब्दों को टाइप करने में आवश्यक कीस्ट्रोक्स की संख्या को कम करता है। वर्तमान में यह कीबोर्ड इनपुट और टेक्स्टएरिया फील्ड में टाइपिंग का समर्थन करता है, जिसमें हिंदी और तमिल भाषाओं की सुविधा उपलब्ध है,। भविष्य में अन्य भाषाओं को जोड़ने की योजना है।

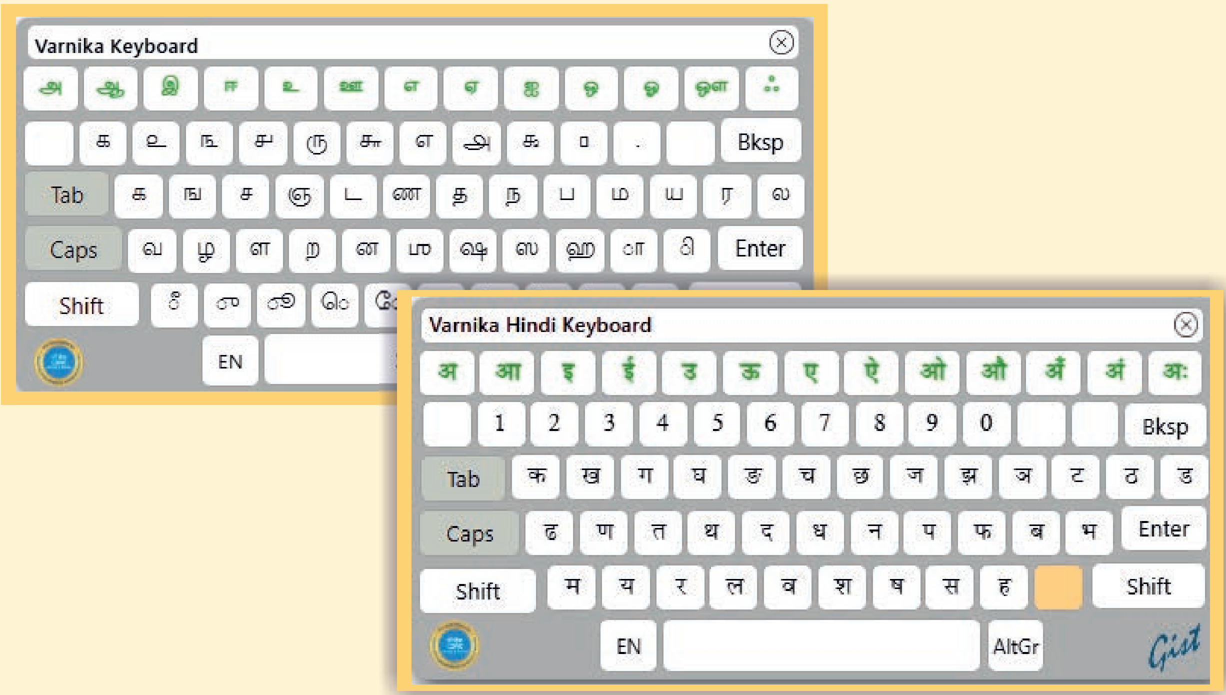

URL: https://gistlangserver.in/smartkeyboard

हेरिटेज (धरोहर) भाषाओं के कीबोर्ड का अर्थ है, ऐसे कीबोर्ड जो भारत की प्राचीन और ऐतिहासिक लिपियों या भाषाओं के लिए बनाए गए हैं, जिन्हें आज बहुत कम लोग प्रयोग करते हैं, लेकिन उनका ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व अत्यधिक है। सी-डैक के प्रमुख विषयगत क्षेत्रों में से एक बहुभाषी और हेरिटेज कंप्यूटिंग है।

मोडी भाषा कीबोर्ड: लिपि की रचना एक त्वरित लेखन प्रणाली या संक्षिप्त लेखन (शॉर्टहैंड) के रूप में की गई थी, जिसका उपयोग शाही फरमानों को लिखने के लिए किया जाता था।

तिरहुता भाषा कीबोर्ड: तिरहुता एक प्राचीन भारतीय लिपि है, जिसका उपयोग मुख्य रूप से मैथिली भाषा लिखने के लिए किया जाता था। यह लिपि बिहार और नेपाल के मिथिला क्षेत्र में प्रचलित थी।

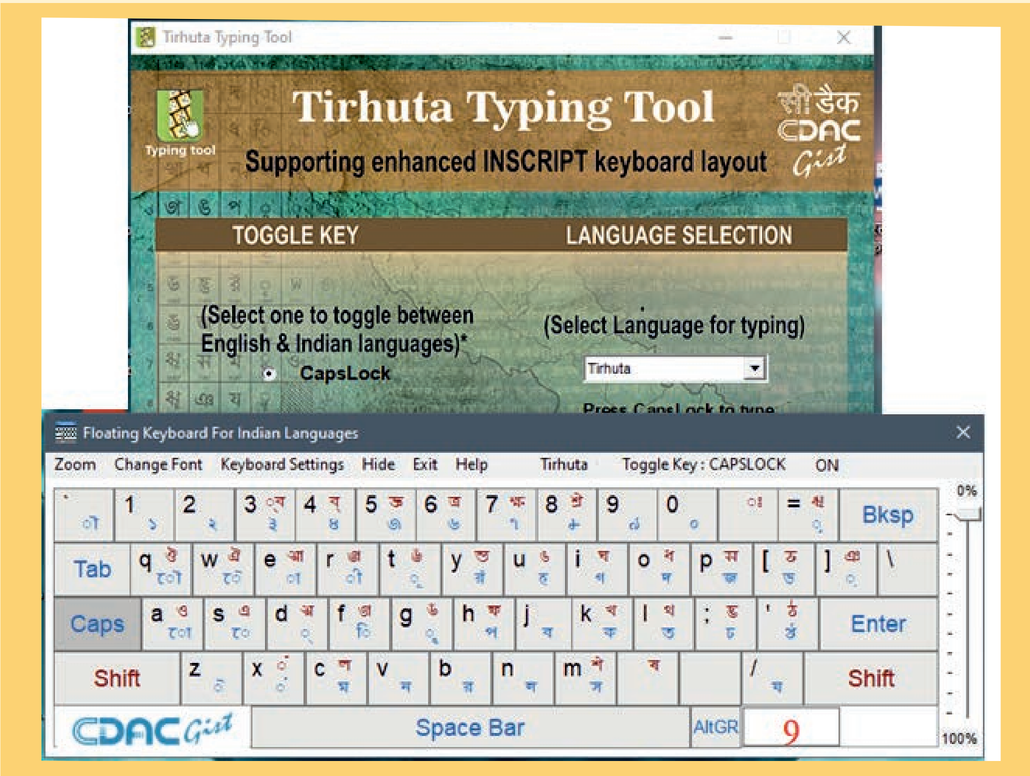

https://www.cdac.in/index.aspx?id=product_details&productId=TirhutaTypingTool

अनुक्रमणिका

मारवाड़ी भाषा कीबोर्ड- मारवाड़ी भारत की एक समृद्ध और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण भाषा है, जो मुख्य रूप से राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में बोली जाती है। यह भाषा अपनी विशिष्ट बोली, सांस्कृतिक पहचान और लोकगीतों के लिए प्रसिद्ध है।

भविष्य में कीबोर्ड केवल टाइपिंग उपकरण ना रहकर स्मार्ट इंटरफेस बन जाएंगे। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग की सहायता से अब कीबोर्ड उपयोगकर्ता की टाइपिंग शैली को समझकर सुझाव दे सकते हैं। मोबाइल पर स्वाइप और वॉइस इनपुट जैसी सुविधाओं के साथ-साथ, क्षेत्रीय भाषाओं की मान्यता भी बढ़ेगी।

भारतीय भाषाओं के लिए वेब और डेस्कटॉप कीबोर्ड केवल तकनीकी समाधान नहीं हैं, बल्कि वे भाषाई समावेशन और डिजिटल सशक्तिकरण के साधन हैं। यह आवश्यक है कि डेवलपर्स, नीति निर्माता और भाषा विशेषज्ञ मिलकर ऐसे टूलों का निर्माण करें जो सरल, सहज और सभी के लिए सुलभ हो।

जीरो नॉलेज प्रूफ

पुनीत बक्शी

शून्य-ज्ञान प्रमाण (जीरो नॉलेज प्रूफ) कंप्यूटर विज्ञान और क्रिप्टोग्राफी का एक उन्नत सिद्धांत है, जो गोपनीयता और सुरक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण तकनीक बन गया है। इसका मुख्य उद्देश्य किसी दावे या जानकारी को साबित करना होता है, बिना उस जानकारी को प्रकट किए। सरल शब्दों में, जीरो नॉलेज प्रूफ किसी को यह दिखाने का एक खास तरीका है कि आप कोई रहस्य जानते हैं, बिना यह बताए कि वह रहस्य क्या है। कल्पना करें कि आपके पास एक खजाने का नक्शा है, और आप अपने दोस्त को यह साबित करना चाहते हैं कि आपके पास वह नक्शा है, बिना उन्हें नक्शा दिखाए। आप कुछ चतुराईपूर्ण कर सकते हैं, जैसे नक्शे के किसी हिस्से का वर्णन करना या उसके बारे में सवालों के जवाब देना, ताकि आपके दोस्त को लगे कि आपके पास वह नक्शा है, लेकिन वे खुद कभी नक्शा नहीं देख पाते। कंप्यूटर पर चीजों को सुरक्षित और निजी रखने के लिए यह विचार वास्तव में महत्वपूर्ण है। जीरो नॉलेज प्रूफ यह सुनिश्चित करता है कि एक व्यक्ति (प्रूवर) किसी दूसरे व्यक्ति (वेरिफायर) को यह साबित कर सकता है कि वह किसी विशेष जानकारी या तथ्य के बारे में जानता है, बिना उस जानकारी का खुलासा किए। यह अवधारणा डिजिटल सुरक्षा और गोपनीयता के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला रही है।

अली बाबा की गुफा: जीरो नॉलेज प्रूफ का उदाहरण

अली बाबा की गुफा जीरो नॉलेज प्रूफ को समझाने के लिए एक सरल और लोकप्रिय उदाहरण है। इसमें एक गुफा की परिकल्पना की जाती है, जिसमें दो रास्ते होते हैं और दोनों रास्ते एक गुप्त दरवाजे पर जाकर मिलते हैं। केवल वही व्यक्ति उस दरवाजे को खोल सकता है, जिसे एक विशेष गुप्त शब्द मालूम हो। इस उदाहरण के जरिए जीरो नॉलेज प्रूफ का सिद्धांत समझाया जाता है, जिसमें किसी जानकारी को उजागर किए बिना उसकी सत्यता प्रमाणित की जा सकती है।

गुफा का विवरण

गुफा एक गोलाकार जगह है, जिसमें दो रास्ते हैं: रास्ता A और रास्ता B। दोनों रास्ते एक गुप्त दरवाजे पर जाकर मिलते हैं, जो केवल गुप्त शब्द से खुलता है। इस उदाहरण में दो व्यक्ति होते हैं:

1. **प्रूवर** - वह व्यक्ति, जिसके पास गुप्त शब्द है।
2. **वेरिफायर** - वह व्यक्ति, जो यह प्रमाणित करना चाहता है कि प्रूवर के पास गुप्त शब्द है, लेकिन वह यह नहीं चाहता कि प्रूवर उसे गुप्त शब्द बताए।

उदाहरण

- प्रूवर गुफा में प्रवेश करता है और रास्ता A या B में से कोई एक रास्ता चुनता है। वेरिफायर गुफा के बाहर खड़ा होता है, और उसे यह नहीं पता होता कि प्रूवर किस रास्ते से गया है।
- वेरिफायर फिर गुफा के बाहर से प्रूवर को आवाज देता है और कहता है कि वह किस रास्ते से बाहर आए - A या B। वेरिफायर किसी भी रास्ते को यादृच्छिक रूप से चुन सकता है।
- यदि प्रूवर के पास गुप्त शब्द है, तो वह दरवाजे को खोलकर वेरिफायर द्वारा बताए गए रास्ते से वापस आ सकता है, चाहे वह शुरू में जिस भी रास्ते से गया हो। लेकिन अगर उसके पास गुप्त शब्द नहीं है, तो वह केवल उसी रास्ते से वापस आएगा, जिससे वह गया था।

- यह प्रक्रिया कई बार दोहराई जाती हैं। हर बार वेरिफायर प्रूवर से यह साबित करने के लिए कहता है कि वह सही रास्ता चुन सकता है। यदि प्रूवर बार-बार सही रास्ता चुनता है, तो वेरिफायर को यह यकीन हो जाता है कि प्रूवर के पास गुप्त शब्द है, लेकिन प्रूवर ने कभी भी गुप्त शब्द का खुलासा नहीं किया।

अली बाबा की गुफा का उदाहरण यह दर्शाता है कि जीरो नॉलेज प्रूफ में किसी दावे या जानकारी को साबित किया जा सकता है, बिना उस जानकारी को साझा किए। इस प्रक्रिया में वेरिफायर यह सुनिश्चित कर लेता है कि प्रूवर के पास सही जानकारी है, लेकिन उसे खुद वह जानकारी प्राप्त नहीं होती। यह सिद्धांत गोपनीयता और सुरक्षा के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है, खासकर डिजिटल और क्रिप्टोग्राफिक प्रणाली में।

जीरो नॉलेज प्रूफ की अवधारणा

जीरो नॉलेज प्रूफ की अवधारणा को 1980 के दशक में शफी गोल्डवासर, सिल्वियो मिकाली और चार्ल्स रैकॉफ ने प्रस्तुत किया। इस तकनीक में तीन प्रमुख विशेषताएँ होती हैं:

- संपूर्णता: यदि प्रूवर सही जानकारी के साथ प्रमाणित करता है, तो वेरिफायर को यकीन हो जाता है कि प्रूवर के पास सही जानकारी है।
- ध्वनि: यदि प्रूवर के पास सही जानकारी नहीं है, तो वह वेरिफायर को झूठी जानकारी देकर धोखा नहीं दे सकता।
- जीरो नॉलेज: प्रमाणन की प्रक्रिया के दौरान कोई भी जानकारी या डेटा वेरिफायर को प्रकट नहीं किया जाता।

इसका मतलब यह है कि वेरिफायर को केवल यह विश्वास होता है कि प्रूवर सही जानकारी के साथ प्रमाणित कर रहा है, लेकिन वह जानकारी क्या है, इसे कभी प्रकट नहीं किया जाता।

जीरो नॉलेज प्रूफ के प्रकार

जीरो नॉलेज प्रूफ के दो प्रमुख प्रकार होते हैं:

- इंटरएक्टिव जीरो नॉलेज प्रूफ: इस प्रकार के प्रूफ में प्रूवर और वेरिफायर के बीच कई चरणों में संवाद होता है। वेरिफायर प्रूवर से कई सवाल पूछता है, और प्रूवर उन सवालों का उत्तर देता है, ताकि वेरिफायर को यकीन हो सके कि प्रूवर के पास सही जानकारी है। हालाँकि, इस संवाद के दौरान प्रूवर को कभी भी अपनी जानकारी को सीधे रूप में प्रकट नहीं करना होता।
- नॉन-इंटरएक्टिव जीरो नॉलेज प्रूफ: इस प्रकार के प्रूफ में केवल एक ही संदेश या प्रमाण भेजा जाता है। इसमें प्रूवर और वेरिफायर के बीच संवाद की आवश्यकता नहीं होती है। इस प्रकार के प्रूफ का उपयोग ब्लॉकचेन और क्रिप्टोकरेंसी में व्यापक रूप से किया जाता है।

जीरो नॉलेज प्रूफ का महत्व

जीरो नॉलेज प्रूफ का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में गोपनीयता और सुरक्षा के महत्वपूर्ण पहलुओं को सुनिश्चित करने के लिए किया जा रहा है। इसके प्रमुख फायदे हैं:

- गोपनीयता सुरक्षा: जीरो नॉलेज प्रूफ की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह गोपनीय जानकारी को साझा किए बिना प्रमाणन की अनुमति देता है। इससे व्यक्तिगत जानकारी की गोपनीयता बनी रहती है। उदाहरण के लिए, किसी को अपनी पहचान साबित करने के लिए अपने पासवर्ड या अन्य संवेदनशील जानकारी को साझा करने की आवश्यकता नहीं होती है।
- डिजिटल हस्ताक्षर और पहचान: डिजिटल पहचान सत्यापन के लिए जीरो नॉलेज प्रूफ का उपयोग किया जाता है। यह तकनीक यह सुनिश्चित करती है कि व्यक्ति अपनी पहचान की पुष्टि कर सकता है, बिना अपनी निजी जानकारी को उजागर किए। इसके लिए बैंकों, ई-शासन, और अन्य डिजिटल सेवाओं में जीरो नॉलेज प्रूफ का इस्तेमाल हो रहा है।
- ब्लॉकचेन और क्रिप्टोकरेंसी: ब्लॉकचेन और क्रिप्टोकरेंसी में गोपनीयता और सुरक्षा एक प्रमुख चुनौती है। जीरो नॉलेज प्रूफ का उपयोग

ब्लॉकचेन नेटवर्क में लेनदेन को सत्यापित करने और उन्हें सुरक्षित रखने के लिए किया जा रहा है, बिना उपयोगकर्ताओं की पहचान या लेनदेन की जानकारी को सार्वजनिक किए। उदाहरण के लिए, जीरोकॉइन और जीरोकैश जैसे प्रोटोकॉल जीरो नॉलेज प्रूफ का उपयोग करके क्रिप्टोकरेंसी को गोपनीयता प्रदान करते हैं।

- साइबर सुरक्षा: जीरो नॉलेज प्रूफ का उपयोग नेटवर्क और साइबर सुरक्षा में किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, किसी प्रणाली में लॉगिन करते समय उपयोगकर्ता अपने पासवर्ड को सार्वजनिक किए बिना प्रमाणित कर सकता है। इससे प्रणाली को सुरक्षा खतरों से बचाया जा सकता है, जैसे कि पासवर्ड लीक या साइबर हमले।
- क्लाउड स्टोरेज सुरक्षा: क्लाउड में डेटा भंडार करने के दौरान डेटा की गोपनीयता और सुरक्षा सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है। जीरो नॉलेज प्रूफ तकनीक का उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए किया जा सकता है कि उपयोगकर्ता का डेटा सुरक्षित है, और क्लाउड प्रोवाइडर उसे देख या उपयोग नहीं कर सकता।
- क्यूबिट और क्वांटम क्रिप्टोग्राफी: क्वांटम कंप्यूटिंग के आगमन के साथ, पारंपरिक क्रिप्टोग्राफिक एल्गोरिदम में चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। जीरो नॉलेज प्रूफ क्वांटम क्रिप्टोग्राफी के साथ मिलकर गोपनीयता और सुरक्षा के नए मानक स्थापित कर सकता है।

भविष्य में जीरो नॉलेज प्रूफ की भूमिका

आने वाले समय में, जीरो नॉलेज प्रूफ का उपयोग और बढ़ेगा। ब्लॉकचेन, क्रिप्टोकरेंसी, और साइबर सुरक्षा में यह तकनीक और भी महत्वपूर्ण हो जाएगी। गोपनीयता पर बढ़ते फोकस के साथ, कंपनियाँ और सरकारें जीरो नॉलेज प्रूफ तकनीक को अपनाने के लिए उत्सुक हैं। इसके अलावा, क्वांटम कंप्यूटिंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में जीरो नॉलेज प्रूफ नई ऊँचाइयों को छू सकता है, जिससे साइबर दुनिया और अधिक सुरक्षित बन सकेगी।

जीरो नॉलेज प्रूफ एक शक्तिशाली और क्रांतिकारी तकनीक है, जो गोपनीयता, सुरक्षा और सत्यापन की जटिल समस्याओं को हल करने में सक्षम है। इसके अनुप्रयोगों में बढ़ोतरी और नई चुनौतियों का सामना करने के साथ, यह तकनीक भविष्य की डिजिटल दुनिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनेगी।

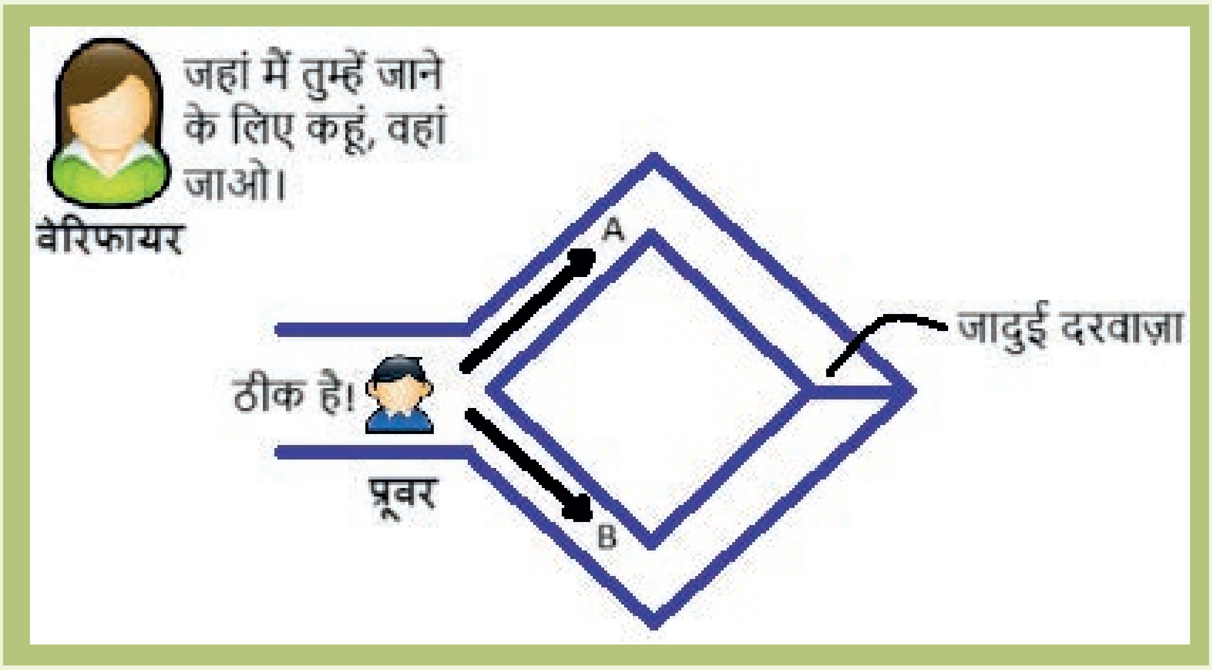

साइबर सुरक्षा: डिजिटल दुनिया में सुरक्षा की ढाल

शुभांगनी असाटी

साइबर सुरक्षा (**Cyber Security**) सूचना सुरक्षा की एक शाखा है, जिसका मुख्य उद्देश्य डिजिटल प्रणाली, नेटवर्क और डेटा को साइबर हमलों, अनधिकृत अभिगम, डेटा चोरी, मालवेयर, रैनसमवेयर और अन्य साइबर खतरों से सुरक्षित रखना है।

आज के डिजिटल युग में इंटरनेट और कंप्यूटर तकनीकों का उपयोग सभी क्षेत्रों में तेजी से बढ़ रहा है। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी विकसित हो रही है, वैसे-वैसे साइबर हमले और साइबर अपराध भी बढ़ रहे हैं। साइबर सुरक्षा (Cyber Security) उन तकनीकों, नीतियों और प्रक्रियाओं का समुच्चय है, जो कंप्यूटर प्रणाली, नेटवर्क, डेटा और डिजिटल संपत्तियों को हैकिंग, मालवेयर, डेटा चोरी और साइबर हमलों से बचाने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

यह केवल आईटी कंपनियों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि हर क्षेत्र में साइबर सुरक्षा की आवश्यकता है। चाहे वह शिक्षा, बैंकिंग, स्वास्थ्य, ई-वाणिज्य, सरकार, रक्षा, या विनिर्माण हो, सभी को डिजिटल सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी। आज डेटा सबसे मूल्यवान संपत्ति बन चुका है। साइबर हमले दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे हैं, जिससे व्यक्तिगत और व्यावसायिक डेटा को गंभीर खतरा है।

साइबर सुरक्षा के प्रमुख क्षेत्र

साइबर सुरक्षा एक व्यापक विषय है, जिसमें कई अलग-अलग पहलू शामिल हैं। इसका पहला और सबसे महत्वपूर्ण भाग नेटवर्क सुरक्षा है, जो कंप्यूटर नेटवर्क को असुरक्षित ट्रैफिक, अवैध अभिगम और साइबर हमलों से बचाने के लिए विभिन्न फायरवॉल, घुसपैठ डिटेक्शन प्रणाली (आईडीएस) और घुसपैठ रोकथाम प्रणाली (आईपीएस) जैसे उपायों का उपयोग करता है।

एंड पॉइंट सुरक्षा भी एक महत्वपूर्ण कारक है, क्योंकि साइबर हमलों का एक बड़ा प्रतिशत उन उपकरणों पर केंद्रित होता है, जिन्हें लोग रोजमर्रा के जीवन में उपयोग करते हैं, जैसे कि कंप्यूटर, मोबाइल फोन और सर्वर। साइबर अपराधी अक्सर इन उपकरणों पर मालवेयर या फिशिंग हमलों के माध्यम से हमला करते हैं, जिससे संवेदनशील जानकारी चोरी हो सकती है। इसे रोकने के लिए एंटीवायरस, एंड पॉइंट डिटेक्शन और रिस्पॉन्स ईडीआर जैसी सुरक्षा तकनीकों का उपयोग किया जाता है।

एप्लिकेशन सुरक्षा भी साइबर सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। वेब और मोबाइल एप्लिकेशन अक्सर साइबर अपराधियों के निशाने पर होते हैं, क्योंकि उनमें सुरक्षा खामियाँ पाई जा सकती हैं जैसे कि एसक्यूएल इंजेक्शन, क्रॉस-साइट स्क्रिप्टिंग (एक्सएसएस), क्रॉस-साइट रिक्वेस्ट फॉरगरी (सीएसआरएफ) और जीरो-डे हमले। इन हमलों को रोकने के लिए सुरक्षित कोडिंग पद्धतियाँ और वेब एप्लिकेशन फायरवॉल (डब्ल्यूएएफ) जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है।

आज के डिजिटल युग में क्लाउड कंप्यूटिंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। आधुनिक व्यवसाय और संगठन डेटा भंडारण, प्रोसेसिंग और सुरक्षा के लिए क्लाउड आधारित सेवाओं पर निर्भर हो रहे हैं। हालाँकि, क्लाउड अवसंरचना की बढ़ती जटिलता के साथ साइबर खतरों की संभावना भी बढ़ गई है। ऐसे में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग (एमएल) तकनीकों का उपयोग साइबर सुरक्षा को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित साइबर सुरक्षा

एआई और मशीन लर्निंग (एमएल) की मदद से साइबर सुरक्षा को एक नई ऊँचाई पर ले जाया जा सकता है। एआई साइबर खतरों को पहचानकर स्वचालित रूप से सुरक्षा उपाय लागू कर सकता है।

एआई आधारित साइबर सुरक्षा के प्रमुख अनुप्रयोग:

1. एनोमली डिटेक्शन (Anomaly Detection)

मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग करके प्रणाली में किसी भी असामान्य गतिविधि की पहचान की जाती है। उदाहरण के लिए, अनसुपरवाइज्ड लर्निंग का उपयोग कर साइबर हमलों का पता लगाया जाता है जो सामान्य सुरक्षा नियमों से बच सकते हैं।

2. स्वचालित खतरा पहचान और प्रतिक्रिया (Automated Threat Detection & Response)

एआई आधारित सुरक्षा प्रणालियाँ साइबर खतरों का वास्तविक समय में विश्लेषण कर स्वचालित रूप से आवश्यक कार्रवाई कर सकती हैं। एसओएआर (सुरक्षा ऑर्केस्ट्रेशन, स्वचालन और प्रतिक्रिया) तकनीक इस दिशा में अत्यधिक उपयोगी साबित हो रही है।

3. बिहेवियर एनालिटिक्स (Behavior Analytics)

मशीन लर्निंग का उपयोग कर उपयोगकर्ताओं के व्यवहार को विश्लेषित किया जाता है, जिससे किसी भी संदिग्ध गतिविधि की पहचान की जा सकती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई उपयोगकर्ता अचानक बड़ी मात्रा में डेटा डाउनलोड करता है या असामान्य स्थान से लॉगिन करता है, तो एआई आधारित सुरक्षा प्रणाली इसे फ्लैग कर सकती है।

4. एडवांस्ड फिशिंग डिटेक्शन

(Advanced Phishing Detection)

एआई आधारित साइबर सुरक्षा प्रणाली ईमेल और वेबपेज के पैटर्न का विश्लेषण करके फिशिंग हमलों की पहचान कर सकती है। यह प्राकृतिक भाषा संसाधन (एनएलपी) तकनीक का उपयोग कर संदिग्ध लिंक और संदेशों को फ्लैग कर सकती है।

5. साइबर थ्रेट इंटेलिजेंस

(Cyber Threat Intelligence)

एआई का उपयोग विभिन्न साइबर खतरों के डेटा को एकत्र करने, विश्लेषण करने और संभावित हमलों की भविष्यवाणी करने के लिए किया जाता है। थ्रेट हंटिंग और थ्रेट इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म्स (टीआईपीस) जैसी तकनीकें साइबर सुरक्षा को मजबूत बनाने में सहायक हैं।

क्लाउड सुरक्षा (Cloud Security) और इसकी चुनौतियाँ

क्लाउड कंप्यूटिंग डिजिटल युग में एक क्रांतिकारी तकनीक साबित हुई है, जो संगठनों और व्यक्तियों को लचीला, मापनीय और लागत-कुशल डेटा भंडारण और प्रोसेसिंग सुविधाएँ प्रदान करती है। हालाँकि, क्लाउड सुरक्षा से जुड़ी कई जटिलताएँ हैं, जिनका समाधान करना आवश्यक है। जैसे-जैसे व्यवसाय क्लाउड अवसंरचना को अपनाते जा रहे हैं, वैसे-वैसे साइबर हमलों और डेटा सुरक्षा संबंधी खतरे भी बढ़ रहे हैं। क्लाउड सुरक्षा के कई खतरे हैं, जैसे:

1. डेटा ब्रीच (Data Breach)

क्लाउड भंडारण में सबसे बड़ा खतरा डेटा ब्रीच का होता है, जिसमें संवेदनशील जानकारी अनधिकृत रूप से लीक हो सकती है। यदि क्लाउड सर्वर पर सही सुरक्षा उपाय लागू नहीं किए गए हैं, तो हमलावर संवेदनशील डेटा चुरा सकते हैं। उदाहरण के लिए, मिसकॉन्फिगर्ड एडब्ल्यूएस एस3 बकेट्स और गलत आईएएम (पहचान और पहुँच प्रबंधन) नीतियाँ डेटा लीक का कारण बन सकती हैं।

2. अनधिकृत अभिगम (Unauthorized Access)

यदि प्रमाणीकरण प्रणाली (Authentication System) कमजोर है, तो साइबर अपराधी आसानी से डेटा तक पहुँच प्राप्त कर सकते हैं। क्लाउड सिस्टम में सिंगल साइन-ऑन (एसएसओ), मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (एमएफए) और जीरो ट्रस्ट मॉडल लागू न होने से सुरक्षा कमजोर हो सकती है।

3. एपीआई सुरक्षा (API Security Risks)

क्लाउड सेवाएँ अक्सर एपीआई (एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस) के माध्यम से एक्सेस की जाती हैं। यदि एपीआई सुरक्षा उपाय जैसे ओऑथ 2.0, जेडब्ल्यूटी (जेएसओएन वेब टोकन्स) और रेट लिमिटिंग लागू नहीं किए गए हैं, तो हमलावर एपीआई का दुरुपयोग कर सकते हैं और संवेदनशील डेटा तक पहुँच प्राप्त कर सकते हैं।

साइबर सुरक्षा उपाय: डिजिटल सुरक्षा के मजबूत स्तंभ

साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न तकनीकों और रणनीतियों का उपयोग किया जाता है। कुछ प्रमुख सुरक्षा उपाय निम्नलिखित हैं:

1. फायरवॉल (Firewalls)

- फायरवॉल एक सुरक्षा अवरोधक की तरह कार्य करता है, जो नेटवर्क ट्रैफिक की निगरानी करता है और अनधिकृत अभिगम को रोकता है। यह बाहरी साइबर हमलों को रोकने का पहला कदम होता है।

2. एन्क्रिप्शन (Encryption)

- एन्क्रिप्शन एक महत्वपूर्ण तकनीक है जो संवेदनशील डेटा को एक जटिल स्वरूप में परिवर्तित कर देती है, ताकि अनधिकृत उपयोगकर्ता इसे पढ़ ना सकें। इसे विशेष रूप से वित्तीय लेनदेन और गोपनीय संचार के लिए उपयोग किया जाता है।

3. सुरक्षा नीतियाँ (Security Policies)

- सुरक्षा नीतियाँ (Security Policies) किसी भी संगठन के लिए अनिवार्य होती हैं। ये नीतियाँ प्रणाली

उपयोग, डेटा हैंडलिंग और एक्सेस कंट्रोल से संबंधित दिशानिर्देश प्रदान करती हैं।

4. एंटीवायरस सॉफ्टवेयर (Antivirus Software)

- यह सॉफ्टवेयर कंप्यूटर और नेटवर्क को वायरस, ट्रोजन, वर्म और अन्य प्रकार के मालवेयर से बचाने के लिए कार्य करता है। एंटीवायरस को नियमित रूप से अद्यतन करना आवश्यक है ताकि नए साइबर खतरों से बचा जा सके।

5. इन्ट्रूज़न डिटेक्शन और रोकथाम प्रणाली (आईडीपीएस)

- इन्ट्रूज़न डिटेक्शन और रोकथाम प्रणाली (आईडीपीएस) नेटवर्क ट्रैफिक की निगरानी करता है और संदिग्ध गतिविधियों को पहचान कर हमलों को रोकने में सहायता करता है।

6. मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (एमएफए)

- एमएफए एक उन्नत सुरक्षा उपाय है जिसमें उपयोगकर्ताओं को लॉगिन करने के लिए पासवर्ड के साथ एक अतिरिक्त सत्यापन प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है, जैसे ओटीपी, बायोमेट्रिक पहचान या हार्डवेयर टोकन।

7. नियमित सॉफ्टवेयर अद्यतन

(Regular Software Updates)

- पुराने और असुरक्षित सॉफ्टवेयर साइबर अपराधियों के लिए सबसे आसान लक्ष्य होते हैं। प्रणाली और सॉफ्टवेयर को नियमित रूप से अद्यतन करना आवश्यक है ताकि किसी भी सुरक्षा कमजोरी (Vulnerability) को दूर किया जा सके।

8. सुरक्षा जागरूकता प्रशिक्षण

(Security Awareness Training)

- संगठनों में कर्मचारियों के लिए साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण अनिवार्य किया जाना चाहिए, ताकि वे फिशिंग, सोशल अभियांत्रिकी और अन्य साइबर खतरों को पहचान सकें और उनसे बच सकें।

9. डेटा लॉस प्रिवेंशन(डीएलपी)

- डीएलपी तकनीक डेटा की सुरक्षा सुनिश्चित करती है और यह सुनिश्चित करती है कि संवेदनशील जानकारी अनधिकृत व्यक्तियों तक न पहुँचे।

10. एंड पॉइंट डिटेक्शन और रिस्पॉन्स (ईडीआर)

- ईडीआर समाधान उपकरणों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है और संभावित साइबर हमलों को पहचानकर उनका समाधान करता है।

11. वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क (वीपीएन)

- वीपीएन तकनीक इंटरनेट ट्रैफिक को एन्क्रिप्ट करके उपयोगकर्ताओं को सुरक्षित संचार प्रदान करती है, जिससे साइबर जासूसी (Cyber Espionage) और मैन-इन-द-मिडिल (एमआईटीएम) हमलों से बचाव किया जा सकता है।

12. वेब एप्लिकेशन फ़ायरवॉल (डब्ल्यूएएफ)

- डब्ल्यूएएफ वेब एप्लिकेशन को साइबर हमलों से बचाने के लिए उपयोग किया जाता है, जिससे एसक्यूएल इंजेक्शन और क्रॉस-साइट स्क्रिप्टिंग एक्सएसएस जैसे खतरों को रोका जा सकता है।

हिमनद झीलों के विस्फोट से उत्पन्न बाढ़ प्रशमन एवं जोखिम न्यूनीकरण

बिनय कुमार

हिमालय में बढ़ते तापमान और हिमनद के पिघलने के कारण नई हिमनद/हिमानी झीलों का निर्माण और मौजूदा झीलों का विस्तार हो रहा है, जिससे हिमनद झील विस्फोट के कारण बाढ़ (ग्लोफ - GLOF) का खतरा पैदा हो रहा है। जब हिमानी झीलों का जल स्तर उनकी सीमाओं को तोड़ देता है तब बड़ी मात्रा में पानी आस-पास की धाराओं और नदियों में बहने लगता है, जिससे अचानक हिमनद झीलों के फटने से होने वाली बाढ़ आ सकती है। इससे जान-माल की हानि, अवसंरचना को नुकसान और आर्थिक नुकसान सहित कई विनाशकारी प्रभाव हो सकते हैं। 3-4 अक्टूबर 2023 के दरमियान, रात्रि में उत्तर पश्चिम सिक्किम स्थित दक्षिण लोनाक झील का दक्षिणी तटबंध टूटने से बर्फीले जल और मलबे का एक बड़ा मिश्रण बहकर बाहर आ गया। उत्पन्न बाढ़ ने चुंगथांग बाँध, राष्ट्रीय जलविद्युत परियोजना (एनएचपीसी) और क्षेत्र के अवसंरचनाओं को भारी नुकसान पहुँचाया। इस आपदा में 35 से अधिक लोगों की जान चली गई, 14 पुल क्षतिग्रस्त हो गए, हजारों घरों को गंभीर क्षति पहुँची और आवश्यक उपयोगिताओं एवं सेवाओं में व्यवधान उत्पन्न हुआ। इस तबाही का असर उत्तरी सिक्किम, गंगटोक, पाक्योंग और नामची जिलों के राजमार्गों तक विस्तृत रहा तथा इससे राष्ट्रीय राजमार्ग 10 का एक बड़ा भाग भी प्रभावित हुआ जो शेष भारत से संपर्क के लिए एक महत्त्वपूर्ण लिंक है।

हिमनद झील एवं इनका निर्माण

पृथ्वी की सतह पर विशाल आकार की गतिशील बर्फराशि अपने भार के कारण पर्वतीय ढालों के पीछे नीचे की ओर प्रवाहमान होती है, वे हिमनद कहलाते हैं। हिमनदों का निर्माण उन स्थानों में होता है जहाँ बर्फ के पिघलने की तुलना में हिमपात अधिक मात्रा में होता है। जब घर्षण और टूटने के कारण हिमनद भूमि का कटाव करता है, तब हिमनद निर्मित गड्ढों में हिमनदों से पिघले जल जमाव से हिमनद झीलों का निर्माण होता है। हिमोढ़–निर्मित झीलों का निर्माण तब होता है, जब पिघले हुए हिमनदों द्वारा छोड़े गए चट्टानों और मलबे (हिमोढ़ या मोरेन) के ढेर घाटियों को अवरुद्ध कर देते हैं तथा पिघली हुई बर्फ के मार्ग को अवरुद्ध कर प्राकृतिक बाँध का निर्माण करते हैं। हिम-निर्मित झीलों का निर्माण तब होता हैं, जब हिमनद स्वयं एक बाँध के रूप में कार्य करता है, जिससे पिघले जल का प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है।

हिमनद झील विस्फोट से उत्पन्न बाढ़ के कारण

जलवायु परिवर्तन और हिमनद का पिघलना: क्षोभमंडल के तापमान में वृद्धि एवं हिमनदों के तेज गलन से उत्पन्न जल गहरे क्षेत्रों में जमा होने लगता है, जिनसे झीलें बन सकती हैं। ये हिमनद झीलें अस्थायी होती हैं और उल्लेखनीय खतरे उत्पन्न कर सकती हैं।

- **हिमनदों का पीछे हटना:** जैसे-जैसे तापमान वृद्धि के कारण हिमनद पिघलते जाते हैं और पीछे हटते जाते हैं, वे अपने पीछे गर्त या बेसिन छोड़ते जाते हैं। ये गर्त पिघले जल और बर्फ से भर सकते हैं, जिससे हिमनद झीलों का निर्माण हो सकता है। जब ये झीलें आकार में बहुत बड़ी हो जाती हैं तो तटबंध पर दबाव बढ़ जाता है, जिससे बाढ़ का खतरा बढ़ जाता है।
- **उच्च भेद्यता गुणांक:** हिम झीलों के तटबंधों में हिमोढ़, शैल, बोल्डर, मिट्टी और बर्फ के ढीले जमाव होते हैं। चूँकि ये तटबंध उपयुक्त रूप से संकुचित नहीं होते हैं, इसलिए वे उच्च भेद्यता गुणांक रखते हैं।
- **हिमस्खलन या भूस्खलन:** हिमस्खलन, शैल-

स्खलन या भूस्खलन बाँध सामग्री को प्रभावित कर सकते हैं और झील का जल अचानक बाहर निकल आता है।

- **भूकंप:** भूकंपीय गतिविधि बाँध सामग्री को खंडित या दुर्बल कर हिमनद झीलों विस्फोट से उत्पन्न बाढ़ को उत्प्रेरित कर सकती है। कुछ मामलों में, भूकंप से बर्फ और मलबा खिसककर झील में पहुँच सकता है, जिससे जल स्तर में तेजी से वृद्धि हो सकती है और फिर बाढ़ की स्थिति बन सकती है।
- **ज्वालामुखी गतिविधि:** ज्वालामुखी विस्फोट से हिमनद पिघल सकते हैं और भारी मात्रा में जल का निकास कर सकते हैं, जो फिर ग्लोफ (GLOF) का कारण बन सकता है।
- **मानवीय गतिविधियाँ:** हिमानी झीलों के आसपास खनन, निर्माण या वनों की कटाई जैसी मानवीय गतिविधियाँ प्राकृतिक अवरोधों को अस्थिर बना सकती हैं और बाढ़ के खतरे को बढ़ा सकती हैं।
- **कृत्रिम झील निर्माण:** जलविद्युत बाँध या खनन गतिविधियों जैसी निर्माण परियोजनाओं के परिणामस्वरूप कृत्रिम हिमानी झीलों का निर्माण हो सकता है। अकुशल रूप से तैयार किए गए बुनियादी ढाँचों और रखरखाव से बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है।

हिमनद झीलों विस्फोट से उत्पन्न बाढ़ के प्रभाव

- जीवन और संपत्ति का नुकसान: हिमनद झील विस्फोट से उत्पन्न बाढ़ जान-माल की क्षति का कारण बन सकता है और घरों, पुलों, सड़कों, वनों एवं फसलों को नष्ट कर सकता है। अक्टूबर 2023 में भारत के सिक्किम में हिमझील उत्पन्न सैलाब ने कम से कम 35 व्यक्तियों की जान ले ली और 150 से अधिक लोग लापता हो गए। जून 2013 में श्री केदारनाथ, उत्तराखंड की एक अन्य घटना में 5000 से अधिक लोगों की जान चली गई और कई जलविद्युत परियोजनाओं को भारी नुकसान पहुँचा।
- आजीविका में व्यवधान: हिमनद झील जनित सैलाब संसाधनों, बाजारों, सेवाओं और अवसरों तक स्थानीय समुदायों की पहुँच को बाधित कर उनकी आजीविका को दीर्घकालिक रूप से प्रभावित कर सकता है। पर्यटन उद्योग को भी भारी नुकसान पहुँचा सकता है, जो कई पर्वतीय क्षेत्रों के लिए आय का एक प्रमुख स्रोत है।
- अवसंरचना और पर्यावरण को नुकसान: हिमनद झील जनित बाढ़ जलविद्युत संयंत्रों को नुकसान पहुँचा सकते हैं या उन्हें नष्ट कर सकते हैं, जो बिजली प्रदान करने और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।
- सीमा-पार प्रभाव: हिमनद झील जनित बाढ़ हिमाच्छादित मुख्य जलक्षेत्र से दूर निचले इलाकों को भी प्रभावित कर सकते हैं।

हिमनद झील विस्फोट से उत्पन्न आपदा न्यूनीकरण के उपाय

- निगरानी और डेटा संग्रह: संवेदनशील हिमनद झीलों की गहन निगरानी करना एक तात्कालिक आवश्यकता है एवं एकत्रित डेटा एक केंद्रीकृत कार्यालय को संप्रेषित किया जाना चाहिए। हिमनद झीलों के व्यवहार का पूर्वानुमान लगाने और लोगों को सचेत करने के लिए इस डेटा को समयबद्ध रूप से संसाधित किया जाना चाहिए।
- संवेदनशील झीलों के अनुप्रवाह क्षेत्र की नदियों में जल स्तर की भी लगातार निगरानी की जानी चाहिए।
- **प्रौद्योगिकी का उपयोग:** उपग्रहों और ड्रोनों द्वारा संवेदनशील हिमनद झीलों की नियमित निगरानी के लिए एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम शुरू किया जाना चाहिए। यह प्रौद्योगिकी, आपदा की समग्र समझ एवं पूर्वानुमान को बेहतर बना सकती है।
- **संशोधित सुरक्षा मानक:** हिमनद झील विस्फोट से उत्पन्न बाढ़ से बढ़ते खतरों को देखते हुए, पर्वतीय क्षेत्रों में अवसंरचना परियोजनाओं के लिए सुरक्षा मानकों को संशोधित किया जाना

चाहिए। ऐसी परियोजनाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए गुणवत्ता नियंत्रण उपाय कठोर बनाए जाने चाहिए।

- **निर्माण का विनियमन:** पर्वतीय क्षेत्रों में बाँध, पुल और राजमार्ग जैसी अवसंरचना परियोजनाओं को कड़े गुणवत्ता नियंत्रण उपायों के अधीन किया जाना चाहिए।
- **वैज्ञानिक अनुसंधान:** देश में हिमनदों पर वैज्ञानिक अध्ययन को बढ़ाया जाना चाहिए। जलवायु अनुमानों से संकेत मिलता है कि हिमालय क्षेत्र में हिमनद घट रहे हैं। इसका अर्थ यह है कि नई झीलों का निर्माण हो सकता है, जबकि मौजूदा झीलें विस्तारित हो सकती हैं।
- **व्यापक जोखिम मूल्यांकन:** अनुमानित तापमान वृद्धि, वर्षा स्वरूप में परिवर्तन और भूमि-उपयोग/भू-आवरण परिवर्तन को ध्यान में रख कर हिमालयी क्षेत्रों के लिए एक व्यापक जोखिम मूल्यांकन की आवश्यकता है। इस मूल्यांकन से आपदा जोखिम न्यूनीकरण रणनीतियों के विकास में मदद मिल सकती है।

हिमनद झील की बाढ़ से निपटने हेतु राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकार के दिशा-निर्देश:

- **संभावित खतरनाक झीलों की पहचान:** स्थानीय दौरे, पूर्व की घटनाओं, झील/बाँध और आस-पास की भू-तकनीकी विशेषताओं तथा अन्य भौतिक स्थितियों के आधार पर संभावित खतरनाक झीलों की पहचान की जा सकती है।
- **तकनीक का उपयोग:** मानसून के महीनों के दौरान नई झील संरचनाओं समेत जल निकायों में आने वाले स्वतः परिवर्तनों का पता लगाने के लिए उपग्रह आधारित तकनीक के उपयोग को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- **संभावित बाढ़ को कम करना:** जल की मात्रा को कम करने हेतु जल के नियंत्रित बहाव की दिशा में परिवर्तन, पम्पिंग या जल की निकासी और हिमोढ़ बाँध के नीचे सुरंग बनाना।
- **निर्माण गतिविधि के लिए समान संहिता:** संवेदनशील क्षेत्रों में अवसंरचनाओं के विकास, निर्माण और उत्खनन के लिए एक व्यापक रूपरेखा विकसित किया जाना चाहिए। हिमनद झील के फटने से उत्पन्न बाढ़ अथवा ग्लोफ (GLOF) के प्रति संवेदनशील क्षेत्रों में भूमि उपयोग नियोजन के लिए प्रक्रियाओं को मान्यता दिए जाने की आवश्यकता है।
- **अग्रिम चेतावनी प्रणाली (ईडब्ल्यूएस) में सुधार करना:** भारत समेत विश्व के लगभग सभी देशों में हिमनद झील विस्फोट से उत्पन्न बाढ़ से संबंधित अग्रिम चेतावनी प्रणाली (ईडब्ल्यूएस) की संख्या बहुत कम है। हिमालयी क्षेत्र में पूर्व चेतावनी के लिए सेंसर और निगरानी आधारित तकनीकी प्रणालियों का विकास।
- **स्थानीय लोगों को प्रशिक्षित करना:** इस प्रणाली के तहत स्थानीय टीमें आपातकालीन आश्रयों की योजना बनाने और स्थापित करने, राहत पैकेज वितरित करने, लापता लोगों की पहचान करने तथा भोजन, स्वास्थ्य देखभाल, पानी की आपूर्ति आदि जरूरतों को पूरा करने में भी सहायता कर सकती हैं।
- **व्यापक चेतावनी प्रणाली (अलार्म सिस्टम):** पारंपरिक चेतावनी प्रणाली के स्थान पर स्मार्टफोन का उपयोग करने वाली आधुनिक संचार तकनीक प्रणाली का उपयोग किया जा सकता है।

हिमनद झीलों विस्फोट से उत्पन्न बाढ़ के प्रशमन एवं जोखिम न्यूनीकरण में सी-डैक की भूमिका

प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक) ने वर्ष 2010 में इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्त संपोषित अनुसंधान परियोजना के रूप में भारत में पहली बार प्रायोगिक आधार पर भू-स्थानिक सूचना प्रणाली आधारित एकल उपयोगकर्ता हिमनद झील विस्फोट से उत्पन्न बाढ़ (ग्लोफ) के प्रशमन की अग्रिम चेतावनी प्रणाली को विकसित किया था। इस परियोजना के अंतर्गत सी-डैक ने वर्ष 2013 से 2016 के बीच सिक्किम स्थित तीन अत्यंत संवेदनशील हिमनद

झीलों में स्वदेशी तकनीक से विकसित हिमझील निगरानी के लिए संवेदन संयंत्र (सेंसर) तथा उपग्रह आधारित सेन्सर डेटा के संचरण प्रणाली स्थापित किया था। प्रायोगिक आधार पर विकसित यह अग्रिम चेतावनी प्रणाली हिमनद झीलों विस्फोट से उत्पन्न बाढ़ के प्रशमन एवं जोखिम न्यूनीकरण में मील का पत्थर साबित हो रही है।

अक्टूबर 2023 में सिक्किम में आए सैलाब के उपरांत राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकार ने सी-डैक विकसित प्रणाली की कार्यक्षमता को समझने के लिए विस्तृत प्रस्तुति मांगी थी। सी-डैक के अनुभव को ध्यान में रखते हुए, सी-डैक को विभिन्न हितधारकों जैसे राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकार, केंद्रीय जल आयोग, अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और अन्य हितधारकों के साथ कई ऑनलाइन बैठकों में भाग लेने का अनुरोध किया गया था। हिमनद झील विस्फोट से उत्पन्न बाढ़ के प्रशमन की अग्रिम चेतावनी प्रणाली स्थापित करने में मौजूदा अनुभव और सिक्किम में किए गए काम के आधार पर, सी-डैक को राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकार की आपदा जोखिम न्यूनीकरण समिति का विशेष सदस्य मनोनीत किया गया है। उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, जम्मू एवं कश्मीर तथा लद्दाख संवेदनशील हिमालयी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में करीब 190 संवेदनशील हिमझीलों के पहचान की गई है। विस्तृत चर्चा के आधार पर सी-डैक को इन 6 हिमालयी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा उन्नत आपदा अग्रिम चेतावनी प्रणाली विकसित करने के लिए प्रमुख तकनीकी संस्था के रूप में मान्यता दी गई है।

प्रस्तावित स्वदेशी भू-स्थानिक सूचना प्रणाली आधारित अग्रिम चेतावनी प्रणाली में व्यापक हिमझील डेटाबेस, स्थानिक निर्णय समर्थन प्रणाली, सैलाब अनुकरण (सिमुलेशन) मॉडल, सौर ऊर्जा से संचालित स्वचालित स्वदेशी सेंसर (जल स्तर मापक, स्वचालित मौसम संयंत्र और वीडियो कैमरा), एचपीसी आधारित जोखिम मूल्यांकन और शमन योजना के लिए चेतावनी प्रसार अनुप्रयोग शामिल हैं। झीलों में पानी की मात्रा की गणना स्वचालित जल की गहराई मापक नौका द्वारा किया जाएगा। सुदूर झीलों में स्थापित स्वदेशी तकनीक से विकसित संवेदन संयंत्र (सेंसर) के डेटा के संचरण प्रणाली इसरो की जी-सैट (G-SAT) उपग्रह द्वारा स्थापित की जाएगी तथा डेटा का विश्लेषण सी-डैक द्वारा विकसित सॉफ्टवेयर से किया जाएगा। एचपीसी आधारित सैलाब अनुकरण (सिमुलेशन) मॉडल हिमझील आपदा जोखिम मूल्यांकन एवं न्यूनतम समय में आपदा की चेतावनी अग्रसारित करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाएँगे। विश्लेषित डेटा का प्रत्योक्षकरण वेब अनुप्रयोग द्वारा किया जाएगा एवं ई-मेल, लघु संदेश सेवा (एसएमएस) के माध्यम से चेतावनी का प्रसार किया जाएगा।

सी-डैक एवं राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के अंतर्गत सी-डैक द्वारा हिमालयी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के स्वदेशी, उन्नत आपदा अग्रिम चेतावनी प्रणाली विकसित करने के साथ अनुप्रयोगों का विकास और आपदा नियंत्रण और निगरानी केंद्र की स्थापना भी की जाएगी। सी-डैक, पुणे के नेतृत्व में सी-डैक, तिरुवनंतपुरम एवं सी-डैक, नोएडा केंद्र स्वदेशी, उन्नत आपदा अग्रिम चेतावनी प्रणाली के विकास में विशेष भूमिका निभाएँगे। पुणे केंद्र द्वारा स्थानिक सूचना प्रणाली आधारित अग्रिम चेतावनी प्रणाली, हिमझील डेटाबेस, स्थानिक निर्णय समर्थन प्रणाली, एचपीसी आधारित सैलाब अनुकरण (सिमुलेशन) मॉडल, जोखिम मूल्यांकन और शमन योजना के लिए चेतावनी प्रसार प्रणाली और विश्लेषित डेटा प्रत्योक्षकरण वेब अनुप्रयोग का विकास किया जाएगा। सौर एवं वायु ऊर्जा संचालित स्वचालित स्वदेशी सेंसर (पीपा आधारित जल स्तर मापक, स्वचालित मौसम संयंत्र, कैमरा एवं स्वचालित जल की गहराई मापक नौका का विकास सी-डैक के तिरुवनंतपुरम केंद्र तथा सी-डैक, नोएडा केंद्र द्वारा वेब पोर्टल होस्टिंग की जाएगी। स्वदेशी तकनीक से विकसित संवेदन संयंत्र (सेंसर) के डेटा के संचरण प्रणाली इसरो की जी-सैट (G-SAT) उपग्रह द्वारा स्थापित की जाएगी।

सी-डैक द्वारा विकसित ग्लोफ आपदा अग्रिम चेतावनी प्रणाली के संस्थापन एवं प्रवर्तन का अपेक्षित समय अक्टूबर 2025 से मार्च 2026 है। जोखिम मूल्यांकन, पूर्व चेतावनी और आपदा शमन योजना के लिए यह आपदा अग्रिम चेतावनी प्रणाली एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में काम करेगा, जिससे प्राधिकारियों को आपदा प्रशमन एवं जोखिम न्यूनीकरण में सक्षमता मिलेगी।

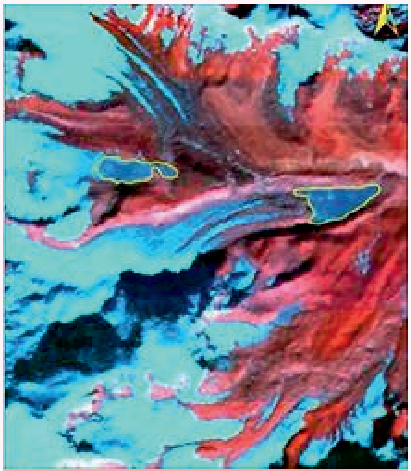

उपग्रह छवि दक्षिण लोनाक झील

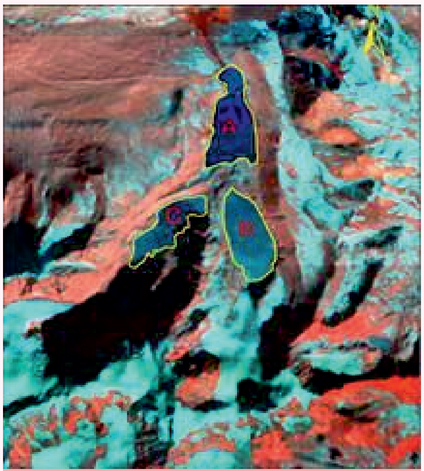

उपग्रह छवि - गुरुडोंगमर झील समूह (सिक्किम)

स्वचालित मौसम संयंत्र - रचनात्मक चित्रण

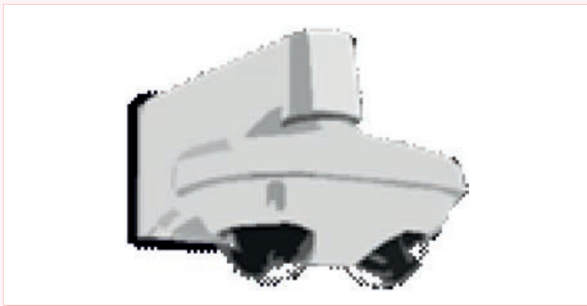

स्वचालित मौसम संयंत्र - रचनात्मक चित्रण

पीपा आधारित हिमझील जल स्तर मापक सेन्सर - रचनात्मक चित्रण

कैमरा छायाचित्र - गुरुडोंगमर झील (सिक्किम)

सी-डैक निर्मित स्वचालित जल की गहराई मापक नौका

कैमरा छायाचित्र दक्षिण लोनाक झील सिक्किम

हिमझील निगरानी कैमरा - रचनात्मक चित्रण

अनुक्रमणिका

एआई में डेटा गोपनीयता

नेहा गुप्ता

उपयोगकर्ताओं को एआई (AI) मॉडल के बारे में क्या जानना चाहिए

जनरेटिव एआई मॉडल, जैसे कि चैटजीपीटी (ChatGPT), परप्लेक्सिटी (Perplexity) और इमेज सिंथेसिस प्रणाली उद्योगों में क्रांति ला रहे हैं। ये प्रणाली सामग्री निर्माण को स्वचालित करने, उत्पादकता बढ़ाने और उपयोगकर्ता अनुभव को वैयक्तिकृत करने में मदद कर रहे हैं। चूँकि एआई प्रणाली विशाल मात्रा में डेटा संसाधित करती है, इसलिए डेटा गोपनीयता को लेकर चिंताएँ भी बढ़ गई हैं। इन तकनीकों से रोजाना जुड़ने वाले उपयोगकर्ताओं के लिए यह समझना जरूरी है कि एआई मॉडल डेटा को कैसे प्रोसेस करता है। यह लेख एआई में प्रमुख गोपनीयता चिंताओं, डेटा का उपयोग कैसे किया जाता है, और उपयोगकर्ता अपनी जानकारी की सुरक्षा के लिए क्या कदम उठा सकते हैं, और गोपनीयता की रक्षा कैसे की जा सकती है, पर केंद्रित है।

एआई मॉडल डेटा को कैसे संसाधित करते हैं?

एआई मॉडल, विशेष रूप से डीप लर्निंग आधारित मॉडल, बड़े डेटासेट पर भविष्यवाणियाँ करने के लिए प्रशिक्षित होते हैं। ये डेटासेट पाठ, दस्तावेज, इमेज और अन्य मीडिया से लिए जाते हैं। यह डेटा विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होता है, जैसे:

- **उपयोगकर्ता इनपुट:** पाठ, छवियाँ, वॉइस कमांड या उपयोगकर्ताओं द्वारा प्रदान किया गया अन्य डेटा।
- **व्यवहार संबंधी डेटा:** क्लिक गतिविधि, ब्राउजिंग इतिहास, खरीदारी व्यवहार और सोशल मीडिया इंटरैक्शन।
- थर्ड-पार्टी डेटा: बाहरी स्रोतों से एकत्रित जानकारी, जैसे सार्वजनिक उपलब्ध डेटासेट या खरीदे गए डेटाबेस।
- ये डेटा पॉइंट एआई मॉडलों को सटीकता बढ़ाने और व्यक्तिगत अनुभव प्रदान करने में मदद करते हैं। हालाँकि, इससे यह चिंता भी उत्पन्न होती है कि डेटा को कैसे संग्रहीत, संसाधित और साझा किया जाता है।

एआई प्रणाली में गोपनीयता जोखिम

हालाँकि एआई मॉडल बहुत उपयोगी हैं, लेकिन इनमें कुछ गोपनीयता संबंधी चुनौतियाँ भी हैं:

1. डेटा संग्रह और सहमति

- कुछ एआई प्रणाली उपयोगकर्ता इंटरैक्शन को संग्रहीत कर सकती हैं, जिससे डेटा की अनधिकृत पहुँच की संभावना बढ़ जाती है।
- उपयोगकर्ता अक्सर डेटा संग्रहण की सीमा को समझे बिना अस्पष्ट गोपनीयता नीतियों पर सहमत होते हैं।

2. डेटा प्रतिधारण और संग्रहण

- एआई मॉडल उपयोगकर्ता डेटा को अनिश्चित काल तक संग्रहीत कर सकते हैं, जिससे उल्लंघन के मामले में जोखिम बढ़ जाता है।

- सुरक्षित डेटा संग्रहण प्रथाओं की हमेशा गारंटी नहीं होती है, खासकर छोटी एआई कंपनियों द्वारा।

3. डेटा साझाकरण और तृतीय पक्ष

- कई एआई प्लेटफॉर्म उपयोगकर्ता डेटा को तीसरे पक्ष के साथ साझा करते हैं, जो गोपनीयता संबंधी चिंता का कारण बन सकता है।
- उपयोगकर्ता इस बात पर नियंत्रण नहीं रख सकते हैं कि उनके डेटा को साझा किए जाने के बाद कौन अभिगम करता है।

4. एआई -जनित फिशिंग और डीपफेक

- साइबर अपराधी एआई का उपयोग करके नकली संदेश या डीपफेक सामग्री बना सकते हैं, जिससे सुरक्षा जोखिम बढ़ता है।

5.व्यक्तिगत डेटा पर एआई मॉडल प्रशिक्षण

- कुछ एआई मॉडल ईमेल, चैट लॉग या सोशल मीडिया पोस्ट सहित उपयोगकर्ता-जनित सामग्री का उपयोग करके प्रशिक्षित होते हैं।
- इससे अनपेक्षित परिणाम हो सकते हैं, जैसे मॉडल संवेदनशील जानकारी या पक्षपातपूर्ण प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न कर सकते हैं।

6. पुनः पहचान जोखिम

- भले ही डेटा अज्ञात हो, लेकिन एआई मॉडल कभी-कभी कई डेटा स्रोतों को जोड़कर पहचान का पुनर्निर्माण कर सकते हैं।
- उन्नत डी-अनामीकरण

  (de-anonymization) तकनीक उपयोगकर्ता की गोपनीयता के लिए खतरा पैदा करती है।

एआई का उपयोग करते समय गोपनीयता की रक्षा कैसे करें?

उपयोगकर्ता कुछ सावधानियों को अपनाकर अपनी गोपनीयता की रक्षा कर सकते हैं:

1. एआई गोपनीयता नीतियों को समझें: एआई सेवाओं का उपयोग करने से पहले उनकी गोपनीयता नीतियों को पढ़ें।

2. संवेदनशील जानकारी साझा करने से बचें: एआई चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट में व्यक्तिगत या गोपनीय जानकारी प्रदान ना करें।

3. गोपनीयता-केंद्रित एआई उपकरणों का उपयोग करें: ऐसे एआई समाधानों का चयन करें जो ऑन-डिवाइस प्रोसेसिंग या एन्क्रिप्टेड इंटरैक्शन की पेशकश करते हैं।

4. गोपनीयता नियंत्रण सक्षम करें: कुछ एआई प्लेटफॉर्म डेटा संग्रह से बाहर निकलने या डेटा भंडारण को प्रतिबंधित करने के विकल्प प्रदान करते हैं।

5. एआई नियमों के बारे में जागरूक रहें: सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 (Information Technology Act, 2000), डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम (Digital Personal Data Protection Act) जैसे कानून उपयोगकर्ताओं को डेटा गोपनीयता और एआई उपयोग से संबंधित अधिकार प्रदान करते हैं।

एआई डेवलपर्स और कंपनियों की भूमिका

जबकि उपयोगकर्ता अपने डेटा की सुरक्षा के लिए उपाय कर सकते हैं, एआई डेवलपर्स और संगठनों को गोपनीयता को भी प्राथमिकता देनी चाहिए:

- एआई प्रणाली में गोपनीयता-द्वारा-डिजाइन सिद्धांतों को लागू करना।
- स्पष्ट और सुलभ डेटा उपयोग प्रकटीकरण की पेशकश करना।
- मजबूत एन्क्रिप्शन और सुरक्षित डेटा हैंडलिंग प्रथाओं को सुनिश्चित करना।
- उपयोगकर्ताओं को डेटा संग्रह और मॉडल प्रशिक्षण के लिए ऑप्ट-आउट विकल्प प्रदान करना।

एआई और डेटा गोपनीयता का भविष्य

जैसे-जैसे एआई तकनीक विकसित हो रही है, डेटा गोपनीयता को बढ़ाने के प्रयास भी बढ़ रहे हैं। शोधकर्ता और नीति निर्माता फेडरेटेड लर्निंग जैसी तकनीकों को विकसित कर रहे हैं, जो बिना संवेदनशील डेटा को साझा किए एआई मॉडल को प्रशिक्षित करने की अनुमति देती

है। इसके अलावा, डिफरेंशियल प्राइवेसी जैसी तकनीकों में भी सुधार किया जा रहा है ताकि एआई उत्पन्न आउटपुट उपयोगकर्ता की गोपनीयता से समझौता ना करें।

जागरूकता और नियामक फ्रेमवर्क के साथ, भविष्य में एआई नवाचार और गोपनीयता सुरक्षा के बीच संतुलन बनाए रखा जा सकता है, जिससे समाज को अधिक सुरक्षित और पारदर्शी एआई पारिस्थितिकी तंत्र मिल सकें।

जैसे-जैसे एआई प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है, वैसे-वैसे डेटा गोपनीयता से संबंधित चुनौतियां भी विकसित होती जा रही हैं। उपयोगकर्ताओं को इस बात से अवगत रहना चाहिए कि एआई मॉडल अपने डेटा को कैसे संसाधित करते हैं और अपनी गोपनीयता की रक्षा के लिए सक्रिय कदम कैसे उठाते हैं। इस बीच, कंपनियों को विश्वास बनाने और वैश्विक डेटा संरक्षण मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार एआई पद्धतियों को लागू करना चाहिए। एक साथ काम करके, हम एक ऐसी एआई-संचालित दुनिया बना सकते हैं जो नवीन और गोपनीयता-सचेत दोनों हो।

चैट सहायक: वेब और दस्तावेज खोज के लिए एआई संचालित स्मार्ट सहायक

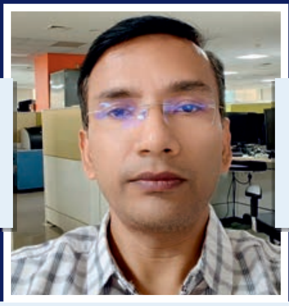

मनीष कुमार गुप्ता

आज की डिजिटल दुनिया में, पाठ संसाधन और दस्तावेज प्रबंधन एक बड़ी चुनौती बन गई है। हमें अक्सर स्कैन किए गए पीडीएफ, दस्तावेजों की छवियाँ (Images) और पाठ आधारित क्वेरीज को प्रबंधित करने की आवश्यकता होती है। इसी समस्या का समाधान है- चैट सहायक।

चैट सहायक क्या है?

चैट सहायक एक आधुनिक पाठ संसाधन समाधान है, जो उपयोगकर्ताओं को स्कैन किए गए पीडीएफ, दस्तावेज की छवियाँ अपलोड करने और पाठ क्वेरीज पूछने की सुविधा देता है। यह समाधान मशीन लर्निंग और ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन (ओसीआर) तकनीक का उपयोग करता है, ताकि पाठ को सटीकता से पहचाना और विश्लेषित किया जा सके।

इस प्लेटफॉर्म को संचार को सुव्यवस्थित करने, कुशल सहायता प्रदान करने और सरकारी सेवाओं तक पहुँच बढ़ाने के लिए डिजाइन किया गया है। उन्नत ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकॉग्निशन (ओसीआर) तकनीक का लाभ उठाते हुए, यह समाधान दस्तावेजों, फॉर्म और वेब पोर्टल को सटीक रूप से संसाधित और व्याख्या कर सकता है, जिससे नागरिकों और सरकारी कर्मियों दोनों के लिए आवश्यक जानकारी तक पहुँचना और उसका प्रबंधन करना आसान हो जाता है। प्रणाली की बहु-प्रारूप खोज और ठोस प्राकृतिक भाषा संसाधन (एनएलपी) क्षमताएँ उपयोगकर्ताओं को सरकारी योजनाओं, कार्यक्रमों और सेवाओं के बारे में आसानी से जानकारी प्राप्त करने में सक्षम बनाती हैं, जिससे पारदर्शिता और सार्वजनिक जुड़ाव बढ़ता है।

मुख्य विशेषताएँ

- **स्कैन किए गए पीडीएफ, और इमेज अपलोड करें:** उपयोगकर्ता अपने स्कैन किए गए दस्तावेज या इमेज को अपलोड कर सकते हैं।
- **ओसीआर तकनीक का उपयोग:** ओसीआर प्रौद्योगिकी की मदद से इमेज या पीडीएफ से पाठ को पहचाना जाता है और उसे संपादन योग्य प्रारूप में बदला जाता है।
- **पाठ आधारित क्वेरीज:** उपयोगकर्ता अपलोड किए गए दस्तावेज से कोई भी सवाल पूछ सकते हैं और उन्हें तुरंत उत्तर प्राप्त हो सकता है।
- **बहुभाषी समर्थन:** यह समाधान विभिन्न भाषाओं में पाठ संसाधन की सुविधा प्रदान करता है, जिससे उपयोगकर्ता अपनी पसंदीदा भाषा में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- **तेज और सुरक्षित:** यह समाधान ना केवल तेजी से डेटा प्रोसेस करता है, बल्कि सुरक्षा मानकों का भी पालन करता है।

चैट सहायक का उपयोग कैसे करें?

- **दस्तावेज अपलोड करें:** स्कैन किए गए पीडीएफ या इमेज फाइल को प्लेटफॉर्म पर अपलोड करें।
- **पाठ एक्सट्रैक्शन:** ओसीआर तकनीक दस्तावेज से पाठ निकालकर उपयोगकर्ता को उपलब्ध कराती है।
- **प्रश्न पूछें:** अपलोड किए गए दस्तावेज से संबंधित कोई भी सवाल टाइप करें और तुरंत उत्तर प्राप्त करें।

उपयोग के लाभ

- **समय की बचत:** मैन्युअल रूप से दस्तावेज पढ़ने और जानकारी खोजने की आवश्यकता नहीं।
- **सटीकता और विश्वसनीयता:** आधुनिक ओसीआर तकनीक के कारण सटीक पाठ एक्सट्रैक्शन।
- **सरलता और सुविधा:** उपयोगकर्ता के लिए आसान और तेज अनुभव।

चैट सहायक दस्तावेज प्रबंधन और पाठ संसाधन की दुनिया में एक क्रांतिकारी समाधान है, जिससे

उपयोगकर्ता अपने कार्य को तेज, सटीक और सुविधाजनक बना सकते हैं।

यह एप्लिकेशन उपयोगकर्ताओं को अपलोड की गई पीडीएफ, छवियों और स्कैन किए गए दस्तावेजों से एआई-संचालित प्रश्नोत्तर (Q&A) के माध्यम से आसानी से उत्तर निकालने की अनुमति देता है। उपयोगकर्ता सहजता से फाइलें अपलोड कर सकते हैं और फिर प्रणाली सामग्री का विश्लेषण और समझ विकसित कर सटीक, संदर्भ-जागरूक प्रतिक्रियाएँ प्रदान करेगी। हाइब्रिड सर्च इंजन के साथ, उपयोगकर्ता प्रासंगिक जानकारी के लिए स्थानीय दस्तावेजों और वेब दोनों पर खोज कर सकते हैं, जिससे व्यापक परिणाम सुनिश्चित होते हैं। एक वास्तविक समय की वेब खोज उपयोगकर्ताओं को विश्वसनीय स्रोतों से नवीनतम डेटा के साथ अद्यतन रखती है। ओसीआर समर्थन उपयोगकर्ताओं को स्कैन की गई छवियों से पाठ निकालने देता है, और हिंदी सहित बहुभाषी समर्थन, पहुँच सुनिश्चित करता है। ऐप तेज़, विश्वसनीय है, और एक सहज उपयोगकर्ता अनुभव के लिए मौजूदा प्रणाली के साथ आसानी से एकीकृत होता है।

अनुप्रयोग क्षेत्र:

- **शिकायत निवारण प्रणाली:** एआई-संचालित एनएलपी नागरिक शिकायतों को तेजी से हल करने, बैकलॉग को कम करने और संतुष्टि में सुधार के लिए वर्गीकृत और प्राथमिकता देता है।
- **नागरिक सहायता के लिए बहुभाषी चैटबॉट:** एआई-संचालित चैटबॉट कई भाषाओं में वास्तविक समय का समर्थन प्रदान करते हैं, पहुँच को बढ़ाते हैं और हेल्पलाइन पर कार्यभार को कम करते हैं।
- **कृषि सलाहकार प्रणाली:** एआई मॉडल किसानों को मौसम, फसल स्वास्थ्य और बाजार की कीमतों पर वास्तविक समय की जानकारी देते हैं, जिससे उत्पादकता बढ़ती है और नुकसान कम होता है।
- **स्मार्ट शिक्षा और कौशल विकास:** अनुकूली एआई लर्निंग प्रणाली शिक्षा को वैयक्तिकृत करते हैं, प्रगति को ट्रैक करते हैं और बेहतर शिक्षण परिणामों के लिए वर्चुअल मेंटरशिप प्रदान करते हैं।
- **न्यायपालिका के लिए एआई सहायता:** एआई कानूनी प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करता है, केस वर्गीकरण में सहायता करता है, केस के परिणामों की भविष्यवाणी करता है और अदालती शेड्यूलिंग को अनुकूलित करता है।
- **नागरिक प्रतिक्रिया और भावना विश्लेषण:** एआई सोशल मीडिया और फीडबैक चैनलों से सार्वजनिक भावना का विश्लेषण करता है, जिससे उत्तरदायी और डेटा-संचालित शासन सक्षम होता है।

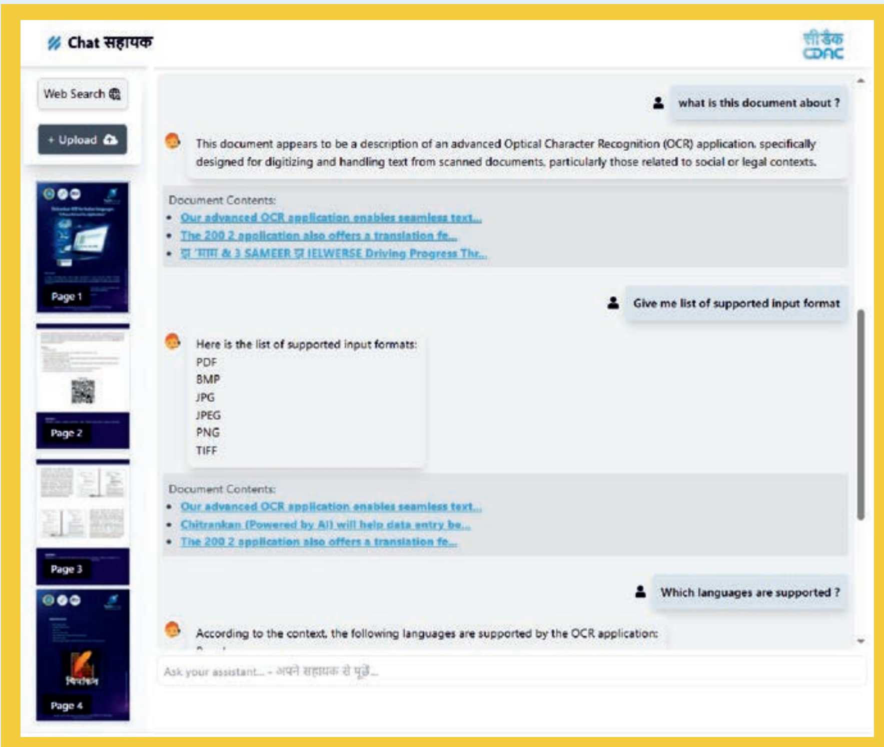

साहित्य यात्रा

‘अनुवाद विज्ञान की भूमिका’ पुस्तक की समीक्षा

डॉ. शिल्पा

अनुवाद एक ऐसी विधा है जिसके द्वारा हम एक भाषा में कहे गए तथ्य को दूसरे भाषा में व्यक्त करते हैं। साथ ही, इससे हम उस भाषा की सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक भिन्नता को भी समझते हैं। अनुवाद के माध्यम से एक देश से दूसरे देश में व्यापार करने में सुविधा होती है। आजकल अनुवाद का महत्व व्यावहारिक कार्यों में बढ़ा है। धर्म, दर्शन, साहित्य, शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वाणिज्य एवं व्यवसाय, प्रशासन, कानून, कृषि, राजनीति जैसे संस्कृति के विभिन्न स्तरों में अनुवाद का अभिन्न संबंध है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी संप्रेषण अनुवाद के माध्यम से हो रहा है। वैश्वीकरण के दौर में मशीनी अनुवाद और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में भी अनुवाद का विस्तार हो रहा है।

प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी विद्वान, प्रख्यात शिक्षाविद, भाषाविद, अनुवादक, सुप्रसिद्ध आलोचक और महान विश्लेषक थे। ये भाषाविज्ञान, अनुवाद सिद्धांत और अनुप्रयोग, शैलीविज्ञान, कोशरचना, समाज-भाषाविज्ञान, प्रयोजनमूलक हिंदी, राजभाषा, भाषा शिक्षण, हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किए हैं। इनके नाम पर अंग्रेजी, हिंदी और पंजाबी भाषा में तीस पुस्तकें और कई शोध प्रकाशित हैं। अनुवाद विज्ञान विषय से जुड़ी प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी द्वारा लिखित ‘अनुवाद विज्ञान की भूमिका’ पुस्तक की समीक्षा है।

इस पुस्तक में तीन खंड हैं –

प्रथम खंड – सिद्धांत

दूसरा खंड – अनुप्रयोग

तीसरा खंड – विवध अवधारणाएँ।

प्रथम खंड – सिद्धांत के अंतर्गत अनुवाद का अर्थ, स्वरूप और क्षेत्र, अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान और अनुवाद, अनुवाद की प्रकृति: कला, विज्ञान या शिल्प, अनुवाद प्रक्रिया और प्रविधि, समतुल्यता का सिद्धांत, अनुवाद के प्रकार, अनुवाद की सीमाएँ, पुनरीक्षण: स्वरूप और प्रक्रिया, अनुवाद मूल्यांकन: स्वरूप और प्रविधि, अनुवाद दोष विश्लेषण: स्वरूप और प्रक्रिया, पुनरनुवाद: अनुवाद मूल्यांकन का एक मानदंड, आशु-अनुवाद: स्वरूप और क्षेत्र, मशीनी अनुवाद: स्वरूप और संभावनाएँ, व्यतिरेकी विश्लेषण और अनुवाद, भाषा की इकाई: शब्द से प्रोक्ति तक, पाठ की अवधारणा और अनुवाद, अनुवाद के सिद्धांत, भाषा विश्लेषण और अर्थ निर्धारण से संबंधित विषयों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की हैं। ‘अनुवाद के प्रकार’ खंड में अनुवाद को प्रायोगिक विधा बताते हुए अनुवाद को तीन मुख्य आधार पर अनुवाद के प्रकारों का विवेचन किया है- 1. माध्यम, 2. प्रक्रिया, 3. पाठ। 1. माध्यम के आधार पर तीन आधार बताए हैं - क) प्रतीक ख) भाषा ग) लेखन। प्रतीक प्रकार में अंत: भाषिक अनुवाद, अंतर भाषिक अनुवाद और अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद की चर्चा की है। भाषा प्रकार में उपादान - सापेक्ष अनुवाद और रूप - सापेक्ष अनुवाद। लेखन प्रकार में लिप्यंतरण और लिप्यंकन है। 2. प्रक्रिया के आधार पर - क) पाठधर्मी ख) प्रभावधर्मी अनुवाद के बारे

में बताए हैं। 3. पाठ के आधार पर क) अभिव्यक्ति के दो प्रकार रचना - सापेक्ष अनुवाद और व्यवस्था -सापेक्ष अनुवाद ख) अर्थ के अंतर्गत चार भेद किए हैं : 1) शब्द-प्रति शब्द अनुवाद 2) शाब्दिक अनुवाद 3) भावानुवाद 4) छायानुवाद। उपर्युक्त के आधार पर अनुवाद करते समय ध्यान रखना चाहिए।

दूसरा खंड – अनुप्रयोग के अंतर्गत साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ, वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद, वाणिज्यिक भाषा और अनुवाद, जनसंचार और उसका अनुवाद, विज्ञापन और अनुवाद, कार्यालयीन, विधि और न्यायालयी साहित्य का अनुवाद, संसदीय साहित्य का अनुवाद, प्रत्येक क्षेत्र में किस शब्दावली का उपयोग करना है, उसको उदाहरण के माध्यम से व्यक्त किया गया है । वाणिज्यिक भाषा के शब्दों को देख सकते हैं- Blanket - शब्द अलग-अलग शब्दों के साथ अलग अर्थ देते हैं जैसे, Blanket - rate : सामान्य दर, Blanket cover - व्यापक रक्षा राशि और Blanket loan - कुल ऋण । अनुवाद करते समय, हमें इन सब बातों का ध्यान रखना चाहिए।

तीसरा खंड – विविध अवधारणाओं में अनुसृजन, तुलनात्मक, भाषा शिक्षण, शब्दकोश, पारिभाषिक शब्दावली, सारानुवाद, भारत में अनुवाद परंपरा, पश्चिम में अनुवाद परंपरा, अनुवाद के महत्व और प्रासंगिकता के बारे में विस्तारपूर्वक बताए हैं। इसमें इन्होंने बताया है कि अनुसृजन का अर्थ पुनः सृजन है, ना कि अनुवाद । भाषा शिक्षण में किन विधियों का उल्लेख किया गया है उसके बारे में बताए हैं । मैंके ने पंद्रह विधियों का उल्लेख किया है, जिसमें से इन्होंने चार विधियों को माना है - प्रत्यक्ष विधि, व्याकरण विधि, व्याकरण - अनुवाद विधि और अनुवाद विधि । स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय क्षेत्र के आधार पर शब्दकोशों की आवश्यकता होती है। सारानुवाद का अभिप्राय यह है कि किसी पाठ के मुख्य कथन का सार और फिर उसका अनुवाद करना है ।

इस पुस्तक में अनुवाद के सैद्धांतिक, अनुप्रयोगिक, मशीनी अनुवाद के अंतर्गत सभी पक्ष का वर्णन किए हैं । अनुवाद वैश्वीकरण के समय में सामाजिक आवश्यकता बन गई है। अनुवाद के माध्यम से ही विभिन्न भाषा भाषी के विषमता को एक भाषा से दूसरे भाषा में समझ सकते हैं।

अत: हम कह सकते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति समाज में विभिन्न भूमिका निभाता है। कभी वह परिवार के मुखिया, कभी वह व्यवसायिक के रूप में, कभी खिलाड़ी के रूप में, कभी वैज्ञानिक के रूप में, कभी वह बच्चों के पिता के रूप में, इत्यादि इस प्रकार वह विभिन्न भाषा रूपों का निर्वाह करता है। इससे भाषा के बदलते रूप को प्रयुक्ति कहते हैं। अनुवाद का संबंध साहित्य तक नहीं, बल्कि कृषि, चिकित्सा, प्रशासन, कला, संस्कृति, रक्षा, फिल्म, पर्यटन, विधि, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, जनसंचार माध्यम में भी हैं। जिस कारणवश अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर का विस्तार हुआ है। अनुवाद के क्षेत्र में अनुवादक, संपादक, राजभाषा अधिकारी, विज्ञापन, सामाजिक, सांस्कृति, धार्मिक, राजनीतिक, अंतरराष्ट्रीय, शिक्षा, साहित्य, फिल्म, वाणिज्य, कृषि, पर्यटन, सरकारी, जनसंचार, उद्योग–व्यापार के क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़े हैं। विश्व में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, मगर ये सब भाषाएँ सभी लोगों को नहीं आती। इस समय अनुवादक की आवश्यकता होती है, जो एक भाषा में कहे गए कथ्य को दूसरे भाषा में रूपांतरित कर सकें।

अनुवादक बनने के लिए प्रत्येक विधा में जिन प्रकियाओं का उपयोग करना है, वह सब 'अनुवाद विज्ञान की भूमिका' पुस्तक में विस्तार दिए गए हैं । इसके अंतर्गत जनसंचार, विज्ञापन इत्यादि का अंग्रेजी और हिंदी अनुवाद दिया हुआ है, जिससे हम समझ सकते हैं कि अनुवादक को दोनों भाषा का ज्ञान होना चाहिए। उसकी संस्कृति, तकनीकी शब्दावली का ज्ञान होना आवश्यक है, जिसके माध्यम से अनुवाद करते समय प्रयुक्ति के अनुवाद में शब्दों का इस्तेमाल कर सकें। अनुवादक या इस क्षेत्र में कार्य कर रहे व्यक्ति के लिए यह पुस्तक उपयोगी है।

द 40 रूल्स ऑफ लव –समीक्षा

धवल सोपचंद बारेवर

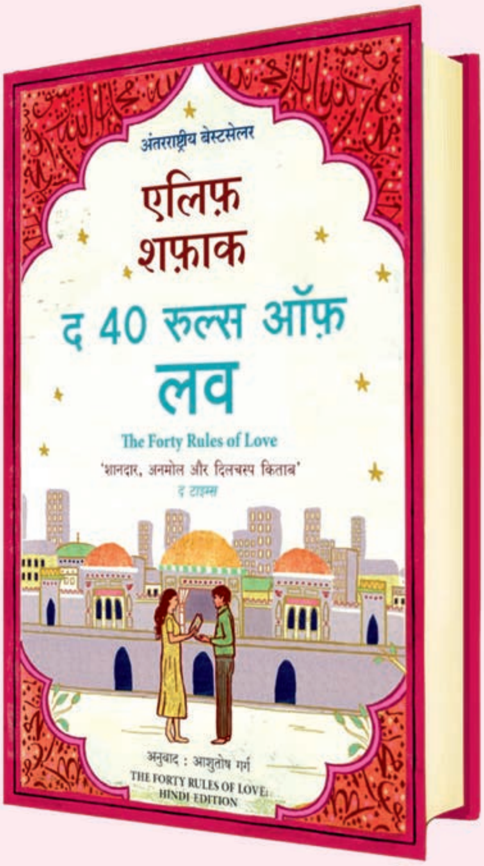

इस किताब का शीर्षक अधिकांश लोगों को कई भ्रांतियों से भर देता हैं। दिमाग में सवालों का आभामंडल अपने पूर्वानुमान के घेरे को मूल्यांकन की परिधि पर लाकर खड़ा कर देता है। दरअसल, जब मैंने पहली बार इस किताब को अपने हाथों में लिया था, तब मैं भी इसी स्थिति में था, लेकिन किताब के खत्म होते तक मेरी विचारधारा में परिवर्तन आ चुका था। यह एक जीवन-परिवर्तनकारी पुस्तक है।

'द 40 रूल्स ऑफ लव' एक अंतरराष्ट्रीय बेस्ट सेलर उपन्यास है। इसकी लेखिका तुर्की-ब्रिटेन की मशहूर और अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखिका, उपन्यासकार और विचारक एलिफ शफाक है। इनकी लेखनी में सामाजिक मुद्दों, महिलाओं की स्थिति और धार्मिक तथा सांस्कृतिक विविधताओं का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। इन्होंने अब तक 25 से अधिक किताबें लिखी हैं, जिनमें उपन्यास, निबंध और काव्य संग्रह शामिल हैं। इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ है-द बास्टर्ड ऑफ इस्तांबुल, द फ्ली पैलेस, द गेज, इत्यादि। इनकी किताबें अब तक 40 से ज्यादा भाषाओं में अनुवादित हो चुकी हैं। साथ ही, इन्हें कई साहित्यिक पुरस्कारों से भी नवाजा गया है।

यह उपन्यास आध्यात्मिक प्रेम, आध्यात्मिक जागृति और सूफीवाद की अवधारणाओं को स्पष्ट करता है। इसका मूल अंग्रेजी प्रकाशन पेंगुइन रैंडम हाउस समूह द्वारा 2009 में हुआ था। यह उपन्यास दो सामानांतर कथाओं के साथ चलता है – पहली तेरहवीं शताब्दी के समय की है। यह इस्लाम के इतिहास के सबसे सम्मानीय आध्यात्मिक गुरु और सर्वश्रेष्ठ शायर जलालुद्दीन रूमी और शम्स तबरेज के बीच के संबंधो पर आधारित है। तथा दूसरी समकालीन कहानी है, जो कि एक महिला एला रुबिंस्टाइन की आत्म-खोज की यात्रा का चित्रण है।

'द 40 रूल्स ऑफ लव' उपन्यास की शुरुआत में हम उपन्यास की मुख्य पात्र एला से अवगत होते हैं, जो कि एक गृहणी है और नॉर्थम्पटन में अपने पति डेविड और तीन बच्चों – जेनेट, ऑर्ली, आवी के साथ रहती है। वह पिछले कई सालों से एक ही तरह की दिनचर्या जीते-जीते थक चुकी होती है। उसे आभास होता है कि उसके जीवन में प्रेम की कमी है। उसी दौरान, उसकी एक प्रकाशन हाउस में समीक्षक के तौर पर नौकरी लगती है। एला को समीक्षा करने के लिए अपनी पहली किताब मिलती है – स्वीट ब्लैस्फमी। यह उपन्यास तेरहवीं शताब्दी के सूफी कवि रूमी और शम्स तबरेज पर आधारित होता है। और यहाँ से दो कथाएँ समानांतर चलती है।

'स्वीट ब्लैस्फमी' की शुरुआत में हमें उपन्यास के मुख्य पात्र शम्स तबरेज से मुलाकात होती है, जो कि एक फकीर होता है। शम्स को पूर्वाभास हो जाता है कि उसकी जल्द ही हत्या होने वाली है। वह चाहता है कि मरने से पहले अपना अर्जित ज्ञान किसी योग्य व्यक्ति को देकर मरे। शम्स अपनी यात्रा की शुरुआत करता है और इस दौरान वो रूमी से मिलता है, जो कि कोन्या का एक प्रसिद्ध विद्वान होता है। यहाँ से उन दोनों की आध्यात्मिक प्रेम की यात्रा शुरू होती है। इस बीच

शम्स रूमी को जीवन के 40 नियमों से अवगत कराता है।

इस उपन्यास का केंद्र विषय आध्यात्मिक प्रेम है। लेखिका ने शम्स और रूमी के माध्यम से खुदा और इंसान के बीच स्थित प्रेम की गहराई को दर्शाया है। इसमें अनेक भावों, परिस्थितियों और अवधारणाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त रुढ़िवादी परंपरा पर कटाक्ष करते हुए, उन्हें सुधारने के लिए कुरान की आयातों का सहारा लिया गया है। इस्लाम धर्म के गूढ़ रहस्यों और उसमें व्याप्त अवधारणा की पुष्टि की है। लेखिका ने एला के माध्यम से स्त्री के भीतर स्थित द्वंद की भावना को बताया है। साथ ही, डेजर्ट रोज के जरिए समाज की वेश्या के प्रति सोच और उनके व्यवहार को भी व्यक्त किया है।

आज अप्रत्याशित धार्मिक झगड़े, सांस्कृतिक मतभेद और असुरक्षा एवं भय का वातावरण पैदा हुआ है। ऐसे समय में, हमें सबसे ज्यादा प्रेम की जरूरत है। रूमी कहते हैं , "प्रेम ही जीवन का सार है। और प्रेम हर किसी के जीवन में आता है। उनके भी जो इससे दूर भागते हैं।"

इस उपन्यास में जीवन के 40 नियमों का वर्णन किया गया है, जो कि इस उपन्यास के संरचनात्मक आधार हैं, जिसके माध्यम से एक व्यक्ति के जीवन के प्रति उसके सारे विरोधाभास दूर हो सकते हैं। ये नियम एक गहरी आध्यात्मिक समझ और जीवन को सच्चे अर्थों में जीने की दिशा दिखाते हैं। प्रत्येक नियम जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालता है, जैसे कि प्यार, भक्ति, त्याग, और आंतरिक शांति।

रूमी और शम्स के ऐतिहासिक संदर्भों के जरिए तेरहवीं शताब्दी की स्थिति को शफाक ने विस्तृत और रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। लेखिका ने तुर्की, ईरान और मध्यकालीन इस्लामी दुनिया की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को गहराई से दर्शाया है। साथ ही, एला के माध्यम से समकालीन वातावरण को भी निर्ममता से चित्रित किया है। शफाक ने प्रत्येक परिदृश्य को सजीवता से वर्णित किया है। पाठक को उपन्यास पढ़ते समय, व्यक्त वस्तुओं की कल्पना करने में किसी अवरोध का सामना नहीं करना पड़ता।

मुझे इस किताब में अभिव्यक्त एक नियम सबसे अच्छा लगा।

'प्रेम के बिना जिंदगी बेकार है। खुद से यह मत पूछो कि तुम्हें कैसा प्रेम चाहिए – आध्यात्मिक या भौतिक, दिव्य या साधारण, पूर्वी या पश्चिमी, क्योंकि इस तरह के भेदभाव से नए भेदभाव पैदा होते हैं। प्यार का कोई नाम नहीं होता, परिभाषा नहीं होती। वह बस शुद्ध, सरल और साधारण होता है।'

आप 'द 40 रूल्स ऑफ लव' उपन्यास का हिंदी अनुवाद भी पढ़ सकते हैं, जिसे मंजुल पब्लिशिंग हाउस द्वारा प्रकाशित किया गया है, जिसका हिंदी अनुवाद हिंदी साहित्य के निपुण अनुवादक आशुतोष गर्ग द्वारा किया गया है। उन्होंने किताब में श्रेष्ठतम शब्दावली का उपयोग किया है। साथ ही, उपन्यास के अंत में लिप्यांतरित शब्दों का अर्थ भी सन्दर्भ सहित दिया है।

इस किताब में सकारात्मक दृष्टिकोण के अनेक अवसर आपको पढ़ने के दौरान प्राप्त होंगे। मेरा इस उपन्यास के साथ एक बेहतरीन अनुभव रहा है। एलीफ शफाक ने इस किताब के माध्यम से हमें यह सिखाया है कि जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है? और हम कैसे अपनी आंतरिक शांति प्राप्त कर सकते हैं? यदि आप आध्यात्मिकता, प्रेम, और जीवन के गहरे अर्थों में रुचि रखते हैं, तो यह किताब आपके लिए एक शानदार अनुभव हो सकती है। मैं चाहूँगा कि हर व्यक्ति इस उपन्यास को पढ़े और इसकी मार्मिकता को समझे।

भाषा विमर्श

अनुक्रमणिका

संस्कृत भाषा विमर्श

शुभांगनी असाटी

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है और इसे "देववाणी" कहा जाता है। यह ना केवल भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर है, बल्कि भाषावैज्ञानिक दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध भाषा है। इसका प्रभाव ना केवल भारतीय भाषाओं पर पड़ा है, बल्कि कई विदेशी भाषाएँ भी इससे प्रेरित हुई हैं। इस लेख में संस्कृत भाषा के महत्व, संरचना, और इसके आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पुनरुत्थान पर चर्चा की जाएगी।

संस्कृत भाषा का उद्गम एवं विकास

संस्कृत भारत की प्राचीन एवं शास्त्रीय भाषा है, जिसमें विश्व के प्रथम ग्रंथ ऋग्वेद की रचना हुई। विभिन्न विद्वानों के अनुसार, वेदों की रचना 6500 ईसा पूर्व से 1500 ईसा पूर्व के बीच मानी जाती है (Subhash Kak, 1994; David Frawley, 1991; Michael Witzel, 1995; Jamison & Brereton, 2014), जो इस तथ्य को इंगित करता है कि संस्कृत भाषा इस अवधि से पूर्व ही अपने विकसित रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी थी। वेदों की भाषा को वैदिक संस्कृत कहा जाता है, जो आधुनिक संस्कृत से कुछ भिन्न थी। लगभग 6वीं–4वीं शताब्दी ईसा पूर्व में पाणिनि ने संस्कृत को व्यवस्थित रूप से मानकीकृत किया, जिसके परिणामस्वरूप शास्त्रीय संस्कृत का स्वरूप स्थापित हुआ (Pāṇini, ca. 5th–4th century) I प्रत्येक वेद के लिए एक विशिष्ट प्रातिशाख्य ग्रंथ उपलब्ध था, जिसका प्रयोग व्याकरण और शब्द-संरचना को स्पष्ट करने के लिए किया जाता था। इस कालखण्ड में वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक, उपनिषद और वेदाङ्ग जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना हुई, जिन्हें सामूहिक रूप से वैदिक साहित्य कहा जाता है।

पाणिनि (500 ईसा पूर्व) ने संस्कृत भाषा को एक संगठित स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने तत्कालीन व्याकरण परंपराओं को संकलित कर "अष्टाध्यायी" नामक ग्रंथ की रचना की, जो संस्कृत व्याकरण का आधार बना। इसके बाद, संस्कृत भाषा पाणिनि के नियमों के अनुसार व्यवस्थित रूप से विकसित हुई। आज भी संस्कृत की शुद्धता की जाँच अष्टाध्यायी के आधार पर की जाती है।

संस्कृत को इंडो-आर्यन या इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार का हिस्सा माना जाता है, जिसमें ग्रीक, लैटिन आदि भाषाएँ शामिल हैं। प्रसिद्ध विद्वान विलियम जोन्स ने संस्कृत की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह ग्रीक से अधिक पूर्ण, लैटिन से अधिक समृद्ध और दोनों से अधिक परिष्कृत भाषा है। संस्कृत आज भी भारत के साथ-साथ अमेरिका और जर्मनी जैसे देशों में विद्वानों द्वारा अध्ययन और अनुसंधान की भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है।

संस्कृत ना केवल भारत की सांस्कृतिक एवं साहित्यिक धरोहर है, बल्कि यह आधुनिक भाषाओं की जननी भी है। इसकी वैज्ञानिक संरचना और व्याकरण इसे भविष्य की भाषा के रूप में भी महत्वपूर्ण बनाते हैं।

संस्कृत और विज्ञान

प्राचीन भारत में संस्कृत केवल साहित्य और दर्शन तक सीमित नहीं थी, बल्कि विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में भी इसका गहरा योगदान रहा है।

खगोल विज्ञान (Astronomy)

खगोल विज्ञान को प्राचीन भारत में "नक्षत्रविद्या", "ज्योतिर्विज्ञान" या "ज्योतिष" कहा जाता था। ऋग्वेद और अथर्ववेद में तारों और ग्रहों की गति का उल्लेख मिलता है। वेदांग ज्योतिष (लगधाचार्य) सबसे पुरानी

ज्योतिषीय रचना मानी जाती है। वराहमिहिर ने "पंचसिद्धांतिका" में पाँच प्रमुख सिद्धांतों का वर्णन किया। आर्यभटीयम (आर्यभट्ट) और सिद्धांतशिरोमणि (भास्कराचार्य) जैसी रचनाएँ भारतीय खगोल विज्ञान को समृद्ध बनाती हैं।

गणित (Mathematics)

संस्कृत में गणित को "गणित" कहा गया है, जिसका अर्थ है गिनती करना। भारत में दशमलव प्रणाली, शून्य, बीजगणित, वर्गमूल और घनमूल की खोज हुई। आर्यभट्ट ने गणितीय खगोल विज्ञान पर महत्वपूर्ण कार्य किया, जबकि ब्रह्मगुप्त की "ब्रह्मस्फुटसिद्धांत" और भास्कराचार्य की "लीलावती" गणित के महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं।

रसायन विज्ञान (Chemistry)

रसायन विज्ञान भारत में प्राचीन काल से विकसित था। नागार्जुन, भोज, सोमदेव (रसेंद्रचूड़ामणि) जैसे विद्वानों ने इस क्षेत्र में योगदान दिया। प्राचीन भारत में धातु विज्ञान, रंगों का निर्माण, औषधीय पदार्थों की तैयारी और गनपाउडर का भी ज्ञान था।

वास्तुकला और अभियांत्रिकी (Architecture and Engineering)

संस्कृत ग्रंथों में वास्तुशास्त्र और यंत्रविद्या का व्यापक वर्णन मिलता है। मयमत, मानसार, विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र आदि में भवन निर्माण, मंदिर वास्तुकला और यंत्रों की तकनीक दी गई है। समरांगण सूत्रधार में विमानों और युद्ध यंत्रों का वर्णन है।

चिकित्सा विज्ञान (Medicine)

आयुर्वेद भारत की प्राचीन चिकित्सा प्रणाली है, जिसे अथर्ववेद का उपांग माना जाता है। चरकसंहिता (चरक), सुश्रुतसंहिता (सुश्रुत) और अष्टांगहृदयम् (वाग्भट) चिकित्सा विज्ञान के महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं। आयुर्वेद के आठ प्रमुख अंगों में शल्य चिकित्सा, काय चिकित्सा, बाल चिकित्सा और रसायन विज्ञान शामिल हैं।

संस्कृत में विज्ञान के इन विभिन्न क्षेत्रों में योगदान ने भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध बनाया और आधुनिक विज्ञान के विकास में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

संस्कृत भाषा का आधुनिक संदर्भ में महत्व

संस्कृत भाषा केवल प्राचीनता तक सीमित नहीं है, बल्कि आधुनिक युग में भी इसकी उपयोगिता बनी हुई है।

1. कंप्यूटर विज्ञान में संस्कृत

संस्कृत भाषा की व्याकरणिक संरचना इतनी सटीक और नियमबद्ध है कि इसे मशीन लर्निंग (एमएल), प्राकृतिक भाषा संसाधन (एनएलपी) और प्राकृतिक भाषा समझ (एनएलयू) के लिए अत्यंत उपयुक्त माना गया है। 1985 में अमेरिकी वैज्ञानिक रिक ब्रिग्स ने अपने शोध में कहा था कि संस्कृत की संरचना इतनी तार्किक और स्पष्ट है कि यह कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग और एआई प्रणाली के लिए एक आदर्श भाषा हो सकती है।

संस्कृत के पाणिनि व्याकरण में व्याकरण के 3,959 नियम हैं, जो अत्यधिक संगठित हैं और प्राकृतिक भाषा संसाधन (एनएलपी) में उपयोग किए जा सकते हैं। एनएलपी में टोकनाइजेशन, व्याकरणिक विश्लेषण (पार्सिंग), शब्दार्थ समझ (सिमेंटिक एनालिसिस) जैसी प्रक्रियाएँ होती हैं, जिनमें संस्कृत की स्पष्ट और गणितीय संरचना उपयोगी हो सकती है।

मशीन लर्निंग (एमएल) और प्राकृतिक भाषा समझ (एनएलयू) में, जब किसी भाषा को समझने और उसका विश्लेषण करने की बात आती है, तो संस्कृत की जटिल लेकिन स्पष्ट संरचना कम्प्यूटर एल्गोरिदम को भाषा के सही अर्थ निकालने में मदद कर सकती है। उदाहरण के लिए, संस्कृत में एक ही शब्द के कई व्याकरणिक रूप होते हैं, जिन्हें रूपवैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा समझा जा सकता है, जो एआई के लिए उपयोगी हो सकता है।

आज, एआई आधारित भाषा मॉडल और चैटबॉट संस्कृत को समझने और संसाधित करने के लिए विकसित किए जा रहे हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि संस्कृत केवल एक प्राचीन भाषा ही नहीं, बल्कि आधुनिक तकनीक के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

2. वैज्ञानिक अनुसंधान में संस्कृत

संस्कृत ग्रंथों में कई वैज्ञानिक सिद्धांत वर्णित हैं। नासा और अन्य शोध संस्थानों में संस्कृत भाषा पर गहन शोध किए जा रहे हैं। आधुनिक वैज्ञानिक शोधकर्ताओं

द्वारा वेदों और उपनिषदों में वर्णित ज्ञान को फिर से अध्ययन किया जा रहा है।

3. शिक्षा और अनुसंधान में संस्कृत

विश्वभर के विश्वविद्यालयों में संस्कृत अध्ययन के लिए विशेष पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। संस्कृत के अध्ययन से भारतीय संस्कृति, योग, आयुर्वेद और ज्योतिष की गहरी समझ प्राप्त होती है।

4. संस्कृत और आध्यात्मिकता

संस्कृत ना केवल एक भाषा है, बल्कि आध्यात्मिक और धार्मिक ग्रंथों की मूल भाषा भी है। भगवद्गीता, वेदांत ग्रंथ और उपनिषदों को समझने के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है।

संस्कृत और कला

संस्कृत का नाटक, नृत्य, संगीत और शिल्पशास्त्र में बड़ा योगदान रहा है। प्राचीन भारत में संस्कृत नाटक बहुत लोकप्रिय थे। कालिदास का अभिज्ञान शाकुंतलम और शूद्रक का मृच्छकटिक आज भी प्रसिद्ध हैं। नाट्यशास्त्र में नाटक और अभिनय के नियम बताए गए हैं।

नृत्य में भरतनाट्यम, कथक, कुचिपुड़ी आदि संस्कृत ग्रंथों पर आधारित हैं। नाट्यशास्त्र और अभिनयदर्पण जैसे ग्रंथों में नृत्य की विधियाँ बताई गई हैं।

संगीत की जड़ें भी संस्कृत में हैं। संगीतरत्नाकर और नाट्यशास्त्र जैसे ग्रंथों ने भारतीय संगीत को दिशा दी।

मूर्तिकला में भी संस्कृत ग्रंथों का बड़ा योगदान है। मंदिरों की मूर्तियाँ और चित्रकला के नियम विष्णुधर्मोत्तर पुराण और मानसार जैसे ग्रंथों में मिलते हैं। इस तरह, संस्कृत ने भारतीय कला को समृद्ध बनाया है।

संस्कृत और धर्म

संस्कृत धर्म और दर्शन की भाषा रही है, जिसमें जीवन, नैतिकता और आध्यात्मिकता के गहरे सिद्धांत समाहित हैं। वेद, उपनिषद, गीता और स्मृतियाँ धर्म की मूलभूत आधारशिला मानी जाती हैं। बौद्ध धर्म और जैन धर्म ने भी संस्कृत में अपने महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की, जिनमें अहिंसा, सत्य, तपस्या और आत्मशुद्धि पर बल दिया गया। धर्म केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं, बल्कि यह मानव जीवन को सन्मार्ग पर ले जाने का एक मार्गदर्शन है, जो संस्कृत ग्रंथों में स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया गया है।

संस्कृत और योग

संस्कृत भाषा और योग का गहरा संबंध है। सभी योग शास्त्र, जैसे पतंजलि योग सूत्र, भगवद्गीता और हठयोग प्रदीपिका संस्कृत में ही लिखे गए हैं। योग मुद्राएँ और ध्यान के सिद्धांत संस्कृत श्लोकों के माध्यम से ही समझाए जाते हैं।

संस्कृत में उच्चारित मंत्रों का मन और शरीर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए:

ॐ नमः शिवाय - यह मंत्र शांति और ध्यान के लिए उपयोगी है।

गायत्री मंत्र: "ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।"

संस्कृत और मानविकी

संस्कृत में इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्र का विस्तृत अध्ययन किया गया है। इतिहास को संस्कृत में इतिहास या इति-ह-आस कहा जाता है, जिसका अर्थ है "यह वास्तव में ऐसा था।" प्रमुख ऐतिहासिक ग्रंथों में राजतरंगिणी, हर्षचरित, नवसाहसांकचरित और विक्रमांकदेवचरित शामिल हैं।

राजनीति और अर्थशास्त्र पर कौटिल्य का अर्थशास्त्र सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें शासन, अर्थव्यवस्था और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर गहराई से चर्चा की गई है। इसमें राज्य व्यवस्था, कर प्रणाली, प्रशासन और कूटनीति का वर्णन मिलता है।

धर्मशास्त्र में मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति जैसे ग्रंथ सामाजिक आचार, न्याय, कर्तव्यों और नीतियों पर प्रकाश डालते हैं।

संस्कृत साहित्य और इसके विभिन्न रूप

संस्कृत साहित्य विभिन्न विधाओं में समृद्ध है और इसमें अनेक प्रसिद्ध रचनाएँ शामिल हैं। बाल कथाओं में पंचतंत्र और हितोपदेश जैसे ग्रंथ नैतिक शिक्षा प्रदान करते हैं।

प्रसिद्ध संस्कृत लेखक एवं उनके योगदान

संस्कृत साहित्य अनेक महान ऋषियों, कवियों और विद्वानों की देन है, जिन्होंने महाकाव्य, नाटक, काव्य, दर्शन और व्याकरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

- वाल्मीकि – संस्कृत के आदिकवि, जिन्होंने "रामायण" की रचना की।
- वेदव्यास – "महाभारत" और अठारह पुराणों के रचयिता।
- कालिदास – संस्कृत के महानतम नाटककार और कवि, जिनकी प्रमुख रचनाएँ "अभिज्ञानशाकुंतलम्", "रघुवंशम्" और "कुमारसंभवम्" हैं।
- पाणिनि – संस्कृत व्याकरण के जनक, जिन्होंने "अष्टाध्यायी" ग्रंथ लिखा।
- पतंजलि – "महाभाष्य" के रचयिता और योग दर्शन के प्रवर्तक।
- आदि शंकराचार्य – अद्वैत वेदांत के प्रवर्तक, जिन्होंने भगवद्गीता, उपनिषदों और ब्रह्मसूत्रों पर भाष्य लिखें।
- जयदेव – भक्ति काव्य के प्रसिद्ध कवि, जिन्होंने "गीतगोविंद" की रचना की।

इन लेखकों की रचनाएँ आज भी भारतीय संस्कृति, दर्शन और साहित्य को समृद्ध करती हैं और संस्कृत भाषा की महत्ता को दर्शाती हैं।

संस्कृत भाषा के पुनरुत्थान के प्रयास

आधुनिक काल में संस्कृत भारती संगठन ने संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 1981 में स्थापित इस संगठन का उद्देश्य संस्कृत को केवल पुस्तक-भाषा न मानकर जनभाषा के रूप में पुनर्जीवित करना है। संस्कृत भारती ने संवाद पद्धति द्वारा लोगों को सरल और व्यावहारिक संस्कृत सिखाने की पहल की, जिससे यह भाषा आमजन तक पहुँच सके। इसके अंतर्गत पूरे भारत तथा विदेशों में हजारों संस्कृत संभाषण शिविर आयोजित किए जाते हैं, जिनमें कुछ ही दिनों में दैनिक जीवन की बोलचाल की संस्कृत सिखाई जाती है। संगठन ने संस्कृत पत्रिकाएँ, पुस्तकें, शब्दकोश और ऑनलाइन साधन भी प्रकाशित किए हैं। इस प्रकार संस्कृत भारती ने संस्कृत को जीवंत भाषा के रूप में स्थापित करने में विशिष्ट योगदान दिया है।

संस्कृत भाषा को पुनर्जीवित करने के लिए कई सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएँ सक्रिय रूप से कार्य कर रही हैं। यह भाषा न केवल प्राचीन भारतीय संस्कृति और ज्ञान का आधार है, बल्कि आधुनिक विज्ञान, तकनीक और डिजिटल युग में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है।

- संस्कृत विश्वविद्यालयों की स्थापना – संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान और अन्य प्रतिष्ठित संस्थान संस्कृत शिक्षा को संरक्षित और विकसित कर रहे हैं।
- संस्कृत शिक्षा को प्रोत्साहित करना – विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में संस्कृत को अनिवार्य विषय के रूप में लागू किया जा रहा है, जिससे नई पीढ़ी इसे सीखने और समझने में रुचि ले रही है।
- संस्कृत को डिजिटल युग से जोड़ना – संस्कृत भाषा के लिए टंकण टूल, ऑनलाइन कोर्स और मोबाइल ऐप्स विकसित किए जा रहे हैं, जिससे यह भाषा तकनीक के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रही है।
- संस्कृत में आधुनिक साहित्य का सृजन – पारंपरिक ग्रंथों के साथ-साथ संस्कृत में नए साहित्य, कविताएँ, कहानियाँ और नाटक लिखे जा रहे हैं, जिससे यह भाषा समकालीन संदर्भों में भी प्रासंगिक बनी हुई है।

इन प्रयासों के कारण संस्कृत भाषा न केवल विद्वानों तक सीमित रह गई है, बल्कि आम जनता के बीच भी इसकी लोकप्रियता बढ़ रही है। डिजिटल क्रांति और शिक्षा प्रणाली में सुधार के साथ, संस्कृत भाषा एक बार फिर जीवंत हो रही है।

संस्कृत सूक्तिः

"संस्कृतं नाम दैवी वागन्येषां भाषणं यथा।"

(संस्कृत भाषा दिव्य है, अन्य भाषाएँ उसकी छाया मात्र हैं।)

हिंदी-खोरठा काल, पक्ष, वृति – व्यतिरेकी विश्लेषण

डॉ. शिल्पा

वैश्वीकरण के दौर में एक संस्कृति दूसरी संस्कृति से जुड़ रही है। हम नई-नई चीजों को आत्मसात किए जा रहे हैं, लेकिन विडम्बना ये है कि हम अपने उन क्षेत्रीय संस्कृति, भाषा, रहन-सहन इत्यादि को खोते जा रहे हैं। भारत की तीन हजार साल पुरानी संस्कृति आज तक इसलिए कायम है, क्योंकि इसकी क्षेत्रीय बुनियाद काफी विशाल है। भारत में अनेकानेक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। झारखण्ड का उदय बिहार से भौगोलिक एवं सांस्कृतिक भिन्नता एवं क्षेत्रों के असमान विकास पर आधारित एक लंबे संघर्ष के परिणाम के रूप में समाने आया। इसीलिए झारखण्ड नाम से सांस्कृतिक-भौगोलिक इकाई की संकल्पना की गई थी। यह बिहार, बंगाल, उड़ीसा एवं मध्यप्रदेश के विस्तृत भूभाग में फैला हुआ है। झारखण्ड में तीन भाषा परिवार के लोग पाए जाते हैं- इंडो आर्यन, ऑस्ट्रोएशियाटिक और द्रविड़। खोरठा भाषा इंडो आर्यन भाषा परिवार के अंतर्गत आती है । खोरठा भाषा झारखण्ड की एक क्षेत्रीय भाषा है। यह उत्तरी छोटा नागपुरी प्रमंडल के धनबाद, गिरिडीह, बोकारो, हजारीबाग, चतरा, कोडरमा, रामगढ़, देवघर, तथा जामताड़ा जिलों में प्रमुखता से बोली जाती है। खोरठा भाषा की प्राय: सभी रचनाएँ देवनागरी लिपि में लिखी गयी हैं। इस लेख में हिंदी-खोरठा भाषा के काल, पक्ष, वृति के व्यतिरेक को बताया गया है।

भाषा के अध्ययन के स्तरों में ध्वनि से प्रोक्ति तक आते हैं। इन सभी स्तरों पर भाषा के प्रकृति के अनुरूप विवेचन की आवश्यकता होती है। कुछ भाषाएँ रूप स्तर पर अधिक समृध्द होती है तो कुछ वाक्य के स्तर पर। प्राय: भारतीय भाषाएँ रूप और वाक्य दोनों स्तरों पर विशिष्ट हैं। अतः इनका अध्ययन इन स्तरों पर किया जा रहा है । झारखंड एक बहुप्रजातीय, बहुसांस्कृतिक और बहुभाषिक राज्य है । यहाँ तीन प्रजातियाँ आस्टिक,द्रविड़ और आर्य प्रजाति के लोग पाए जाते हैं । झारखंड क्षेत्र में दो तरह की भाषाएँ हैं – जनजातीय एवं क्षेत्रीय ।

- **जनजातीय भाषा -** मुंडारी, संथाली, हो, कुड़ुख, माल्टो, कोरवा।
- **क्षेत्रीय भाषा -** खोरठा, कुरमाली, पंचपरगनिया एवं नागपुरिया ।

झारखंड को भारत का छोटा नागपुर कहा जाता है । द्रविड़ परिवार- मुंडारी, संथाली, हो, कुड़ुख, माल्टो, कोरवा। आर्य परिवार की भाषाएँ खोरठा, कुरमाली, पंचपरगनिया एवं नागपुरिया बोली जाती है । यह उत्तरी छोटा नागपुरी प्रमंडल के धनबाद, गिरिडीह, बोकारो, हजारीबाग, चतरा, कोडरमा, रामगढ़, देवघर तथा जामताड़ा जिलों में बोली जाती हैं । भाषा में क्रिया का विशेष महत्व है। काल उसे कहते हैं जिससे समय के घटित होने का पता चलता है। हिंदी और खोरठा भाषा के काल को समझ सकते हैं।

1. हिंदी और खोरठा भाषा में काल (Tense) का परिचय

1.1 वर्तमान काल- क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान समय में होने का बोध हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं ।

उदा: वह खाना खा रहा है ।

उ खाना खाइत हइ/खा रहल हइ ।

मैं सूरज को देखता हूँ ।

हाम सुरूज के देखो हियइ ।

वह खाना खा रहा है।

अनुक्रमणिका

उ खाना खाइत हइ/खा रहल हइ।

बच्चे गाना गा रहे हैं।

चेंगा गुला गाना गावेत हथिन।

सामान्य वर्तमान – क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान काल में सामान्य रूप से होने का बोध हो, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं। उदा :- मैं जाता हूँ। हाम जा हियइ।

मैं जाती हूँ। हाम जा हियइ।

अपूर्ण वर्तमान काल – क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया अभी चल रही है, अर्थात सामाप्त नहीं हुई, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।

मैं जा रहा हूँ। हाम जाइ रहल हियइ ।

वे जा रहे हैं। ओखिन जाइत हथिन ।

तू सो रहा है। तू सुइत रहल हीं ।

संदिग्ध वर्तमान- क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने में संदेह का बोध होता है, उसे संदिग्ध वर्तमान कहते हैं। उदा: सिनेमा देखता होगा। सिनेमा देखो होतथीन।

गीतिका पढ़ रही होगी। गीतिका पढ़ रहल होतइ।

पूर्ण वर्तमान – जिससे वर्तमान काल में कार्य की पूर्ण सिद्धि का बोध होता है, उसे पूर्ण वर्तमान काल कहते हैं। उदा: वे आएँ हैं। ओकिन आइल हथिन।

सुशील आया है। सुशील आइल हइ।

संभाव्य वर्तमान- इसमें क्रिया के माध्यम से कार्य सम्पन्न होने की संभावना का आभास मिलता है। उदा: वह सो गई हो। उ सूत गेइल होतइ।

वह सोया हो। उ सुतल होतइ।

उसने खेला हो। उ खेलले होतइ ।

2. भूतकाल- क्रिया के जिस रूप से काम के बीते हुए समय में होने का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते हैं। उदा: माँ खाना बना चुकी। माय खाना बना चुकले।

सामान्य भूत- जिसमें बीते हुए समय में होने वाली क्रिया का सामान्य रूप हो, वहाँ सामान्य भूतकाल होता है। उदा: मैं स्कूल गया। हाम इस्कूल गेललइ।

आसन्न भूत- क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाता है कि क्रिया भूतकाल में आरंभ होकर अभी-अभी समाप्त हुई है, आसन्न भूतकाल कहलाता है। उदा:

वे सोकर उठे हैं। ओखिन सुइतके उठल हथिन।

वह अभी आया है। उ अखन आइल हे।

अपूर्ण भूत- क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया भूतकाल में ही हो रही थी, किन्तु काम की पूर्णता का पता न चले, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं। उदा:

वे खा रहे थे। ओखिन खाइ रहल हलथीन ।

वह हंस रहा था। उ हांस रहल हलय / हलइ।

पूर्ण भूत- क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि काम भूतकाल में समाप्त हो चुका था, वहाँ पूर्ण भूतकाल होता है। उदा:

सुशील खाना खा चुका था।

सुशील खाना खाइ चुकलइ हलइ।

संदिग्ध भूत – बीते हुए समय में जिस क्रिया के होने के बारे में संदेह पाया जाए वहाँ संदिग्ध भूतकाल होता है। उदा:

वह आया होगा। उ आइल होतऽ/ होतइ ।

हेतुहेतुमद्भाव भूत- इसकी दो क्रियाओं में कार्य – कारण संबंध होता है। जहाँ भूतकाल की एक क्रिया दूसरी क्रिया पर आश्रित होती है, वहाँ हेतुहेतुमद भूतकाल होता है। उदा:

वह दवा पीता तो स्वस्थ्य हो जाता।

उ दावाई पितले ताइ ठीक होजइतले।

3. भविष्य काल- क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में उसके करने या होने का बोध हो, उसे भविष्यत काल कहते है। उदा:

बच्चे गाना गाएंगे। चेंगा गुला गीत गइतइ ।

सामान्य भविष्य- आने वाले समय में क्रिया के सामान्य रूप से होने की सूचना का बोध कराने वाले काल को सामान्य भविष्यत काल कहते हैं। उदा:

वे खाना खाएँगे। ओखिन खाना खाइभ्हा ।

वे मारे जाएंगे। ओखिन माइर जइबथीन ।

संभाव्य भविष्य- जहाँ आने वाले समय में क्रिया के होने या करने की सम्भावना पाई जाए वहाँ सामान्य भविष्यत काल होता है। उदा:

वे बैठें । ओखिन बइठहा ।

शायद वर्षा होगी । लागे होतइ बरखा होतइ ।

इस प्रकार हिंदी और खोरठा भाषा के काल के व्यतिरेक को तालिका के माध्यम से समझ सकते हैं-

पुरूष	लिंग	वचन	हिंदी और खोरठा प्रत्यय /क्रिया रूप	
प्रथम पुरूष	पुल्लिंग	एकवचन	ता हूँ (हियइ)	रहा हूँ (रहल हइ)
सर्वनाम– मैं, (हाम)		बहुवचन	ते हैं (वो हथिन)	रहे हैं (हियइ/हथिन)
हम (हमिन/हमरिन)	स्त्रीलिंग	एकवचन	ती हूँ (हियइ)	रही हूँ (रहल हइ)
मध्यम पुरूष		बहुवचन	ती हैं (वो हथिन)	रहे हैं (हियइ/हथिन)
तू (तु)	पुल्लिंग	एकवचन	ता है/ ते हो	रहे हो (रहल हीं)
तुम (तोहर)		बहुवचन	(वो हीं /हइ) ते हैं (हथिन)	रहे हैं (रहल हथिन)
आप	स्त्रीलिंग	एकवचन	ती है / ती हो (वो हइ/हीं)	रही हो (रहल हीं)
अन्य पुरूष		बहुवचन	ती हैं (हथिन)	रहे हैं(रहल हथिन)
वे(ऊ), वह(उ)	पुल्लिंग	एकवचन	ता है (हइ)	रहा है(हइ)
		बहुवचन	ते हैं (हथिन)	रहे हैं (रहल हथिन)
	स्त्रीलिंग	एकवचन	ती है (हइ)	रही है (हइ)
		बहुवचन	ती हैं (हथिन)	रही हैं (रहल हथिन)

2. हिंदी और खोरठा भाषा में पक्ष (Aspect)

पक्ष उसे कहते हैं जिसे क्रिया के पूर्ण, अपूर्ण, नित्यता, समानता आदि का पता चलता है।

2.1 पूर्ण पक्ष – इसमें कार्य की पूर्णता का बोध होता है। हिंदी में पूर्ण पक्ष का चिह्नक 'या'(आ) है तथा खोरठा में 'इल' है ।

जैसे : हिंदी – वह आ**या।**

खोरठा – उ आ**इल।**

2.2 अपूर्णकालिक पक्ष- इसमें कार्य की पूर्णता का बोध होता है। इसके भेदों को हम निम्न प्रकार से देख सकते हैं-

2.2.1 नित्यता बोधक पक्ष – इससे नित्य होने वाली क्रिया का पता चलता है, जैसे- सूरज का उगना, पृथ्वी का घूमना, तारों का चमकाना, दिन होना, रात होना आदि, जिसको हम निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा समझ सकते हैं -

हिंदी खोरठा

पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है - पृथ्वी सुरुज ले चाइरों आउर घुमेत हइ।

2.2.2 सातत्य पक्ष – इसमें क्रिया के वर्तमान में चालू रहने की सुचना मिलती है।

जैसे - हिंदी खोरठा

अध्यापक कक्षा में पढ़ा रहा है- मास्टर कच्छा में पढ़ावेत हइ।

2.2.3 स्थित्यात्मक पक्ष – स्थित्यात्मक पक्ष क्रिया रूप के द्वारा व्यक्त न होकर सम्पूर्ण वाक्य गठन से व्यक्त होता है जैसे-

हिंदी खोरठा

वह पेड़ है । उ गाछ हइ।

3. हिंदी और खोरठा भाषा में वृत्ति (Mood)

वृति वक्ता की वह मन:स्थिति है, जो वाक्य में क्रिया रूपों द्वारा व्यक्त होती है। हिंदी में वृत्ति के कई प्रकार जिसमें आज्ञार्थक, संभावनार्थ, हेतु-हेतु मद भाव, सामर्थ्यसूचक, बाध्यता सूचक, भविष्यत और अनुज्ञात्मक है, जिसे निम्न रूप से समझ सकते हैं-

3.1 आज्ञार्थक वृत्ति – इसमें वक्ता से श्रोता को किसी कार्य को करने के लिए आज्ञा दी जाती है।

हिंदी खोरठा

जरा वह पुस्तक देना । जरा उ किताब देइबइ।

3.2 संभावनार्थक – क्रिया का वह रूप जो अनुमान, संभावना इच्छा, अनुज्ञा आदि भाव का बोध होता है।

हिंदी खोरठा

शायद आज वर्षा हो।   सायद आइज बरखा होतइ।

3.3 हेतुहेतुमद्भाव – इसके अंतर्गत वक्ता के मस्तिष्क में स्थित शर्त, इच्छा आदि का भाव निहित होता है।

हिंदी खोरठा

यदि वर्षा होती तो धान की खेती अच्छी होती। जइदी बरखा होतइ तो धान के खेइती बेश होतइ ।

3.4 सामर्थ्य सूचक वृत्ति – इसके अंतर्गत सक-, बन-, पा-, ले, आदि सहायक क्रियाओं का प्रयोग होता है-

हिंदी खोरठा

वह चल सकता है। उ चइल सको हइ।

3.5 बाध्यतासूचक वृत्ति – इसके अंतर्गत किसी भी कार्य को करने की बाध्यता होती है-

हिंदी खोरठा

सुरेश को रात में ही दिल्ली जाना पड़ा। सुरेश के रातें ही दिल्ली जाइब पड़ते।

3.6 भविष्य – इसमें वृति प्रत्यय- एगा, एगें, एगी आदि भविष्य का पता चलता है –

हिंदी खोरठा

रमेश घर जाएगा। रमेश घार जितइ।

3.7 अनुज्ञात्मक – इसमें किसी कार्य को करने की अनुमति, अनुनय आदि का भाव व्यक्त होता है-

हिंदी खोरठा

उसे क्षमा कर दें। ओकरा क्षमा कइर देइ।

अत: हम कह सकते हैं कि खोरठा में वर्तमान काल 'या/आ'- इल का प्रयोग करते हैं। हूँ/है/ हैं – हियइ/ हिअइ/ हइ /हथिन का प्रयोग करते हैं। ता/ती/ ते के लिए ओ का प्रयोग करते हैं। रहा/रही/रहे के लिए रहल का प्रयोग करते हैं। भूतकाल में या/आ के लिए इलइ का प्रयोग करते हैं। था/ थी/ थे के लिए हलइ/ हलथिन का प्रयोग करते हैं । भविष्यत काल में होगा/होगी/होगें के लिए तइ, ईभीं का प्रयोग करते हैं। इसमें हम दोनों भाषाओं के समानता और असमानताओं को समझते हैं।

खोरठा लिपि - चित्र

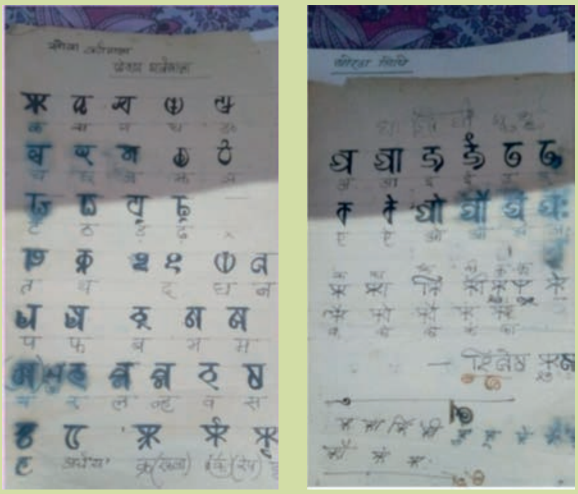

दिनेश दिनमाणि द्वारा आविष्कार की गयी खोरठा लिपि

कोडरमा
गिरिडीह
देवघर
चतरा
हजारीबाग
जामताड़ा
धनबाद
बोकारो
रामगढ़

स्थान और खाद्य पदार्थों के नाम परिवर्तन: एक भाषाई दृष्टिकोण

डॉ. अतीउर रहमान खान

भारत एक अनोखा देश है, जहाँ भाषाओं में असंख्य रोचक घटनाएँ प्रतिबिंबित होती रहती हैं। यह रोचक घटना तब अधिक देखने को मिलती है जब शब्द एक भाषा से दूसरी भाषा में साझा किए जाते हैं और भाषाई यात्रा के माध्यम से रोचक आदान-प्रदान होते रहते हैं। भारत में अनेक स्थानों और वस्तुओं के नामों में ऐसे कई भाषाई घटनाओं का प्रमाण पाया जाता है। नामों में ऐसे रोमांचक उदाहरणों मे यहाँ ध्वनि परिवर्तन लागू होते हैं।

व्युत्पत्ति संबंधी परिवर्तन (etymological change) से तात्पर्य उस तरीके से है जिस तरह से किसी शब्द का रूप और अर्थ समय के साथ विकसित होता है। यह विकास विभिन्न कारकों से प्रभावित हो सकता है, जिसमें भाषा संपर्क, ध्वनि परिवर्तन और शब्दों के उपयोग और समझ में बदलाव शामिल हैं।

मैंने कोलकाता से दो ऐसे स्थानों और मिठाइयों को चुना है जिनके नाम समय के साथ मूल रूप से बदल गए थे। ये दो जगह हैं मेटियाबुरूज और खिदिरपुर। और मिठाइयाँ हैं मंसूरी और लेडिकेनी। स्थानों के नामों और खाद्य पदार्थों में होने वाले ध्वनि परिवर्तनों को देखना बहुत दिलचस्प होता है। यह देखना आश्चर्यजनक नहीं होगा कि कोलकाता में दो जगह जो ब्रिटिश शासन के दौरान प्रशासन और व्यापार के दो प्रमुख स्थान थे, और दो मिठाइयाँ, एक जिसकी उत्पत्ति कोलकाता में हुई और दूसरी भारतीय राज्य कर्नाटक से आई थी, कुछ विशेष कारणों से उनके नाम कैसे बदल गए।

दो स्थान:- मेटियाबुरूज और खिदिरपुर:

कोलकाता में खिदिरपुर और मेटियाबुरूज नाम के दो प्रमुख और घनी आबादी वाले स्थान हैं। इस लेख में नाम परिवर्तन के संदर्भ में बंगाल की राजधानी कोलकाता से यही दो क्षेत्रों का उल्लेख किया गया है; जो दर्शाते हैं कि कोई भाषाई समुदाय की बारीकियों के अनुसार समय के साथ स्थानों के नाम कैसे बदलते हैं। ये दोनों स्थान कोलकाता बंदरगाह और ब्रिटिश राज के समय से इसके महत्वपूर्ण वाणिज्यिक क्षेत्र के इतिहास से जुड़े हुए हैं।

मेटियाबुरूज

'मर्सिया' और 'बुर्ज', यह दो शब्दों के मिलन से बना मेटियाबुरूज। 'मर्सिया' के हिंदी अर्थ होता है । किसी मृत व्यक्ति की स्मृति में लिखा हुआ शोक-गीत, मृत व्यक्ति का गुणगान, अर्थात एक शोक-काव्य। 'मर्सिया' का लाक्षणिक अर्थ होता है मातम, रोना-पीटना, मायूस होना या उदासी का वर्णन करना। दूसरी ओर, 'बुर्ज' का हिंदी अर्थ है छत का वह भाग जो अर्धचंदाकार शक्ल का बना हुआ हो, शल्जमी शक्ल की बनी हुई छत, गुंबद, या मठ। मीनार का ऊपरी भाग अथवा उसके आकार की इमारत का किसी अंग को भी बुर्ज कहते हैं। प्राचीन काल में इसपर रखकर तोपें चलाई जाती थीं। बुर्ज वह मठ था जिसमें फकीर इत्यादि रहते थे। इस प्रकार से इन दो शब्दों मे परिवर्तन के कारण इस स्थान का नाम पड़ा मेटियाबुरूज।

मर्सिया मटिया बन गया (मर्सिया > मटिया)। और बुर्ज बुरूज बन गया (बुर्ज > बुरूज)।

खिदिरपुर:

खिदिरपुर का नाम अरबी 'खिज़्र'और संस्कृत के "पुर" शब्दों को मिलाकर बनाया गया। 'खिज़्र'(जिसे "खिद्र" भी कहा जाता है) शब्द मुख्य रूप से अरबी भाषा से आया है जो एक रहस्यमय व्यक्ति को संदर्भित करता है, जो अपनी बुद्धि और ज्ञान के लिए जाना जाता है। वहीं दूसरी ओर, संस्कृत में 'पुर' अथवा 'पुरा', का अर्थ है

शहर, किला, या गढ़ यह एक प्राचीन संस्कृत शब्द है जो ऋग्वेद में भी पाया गया है। 'पुर' का प्रयोग शहरों और गाँवों के नामों के अंत में भी होता है। जैसे जमालपुर; कानपुर; खानपुर।

यदि हम इस शब्द के दूसरे अर्थ को देखें तो 'खिज्र' नाम का अर्थ अरबी में 'हरा' या 'हरापन' है। हुगली नदी के किनारे होने के कारण वह क्षेत्र निश्चित रूप से हराभरा होने के कारण खिज्र शब्द का उपयोग इसके नामकरण में किया गया होगा। इस स्थान पर ज्ञानी और बुद्धिमान व्यक्तियों के रहने के कारण से भी संभवतः खिज्र शब्द को इस्तेमाल किया गया होगा।

आइए इस स्थान के नामकरण में भाषाई परिवर्तन को देखें:

खिज्र > खिद्र > खिदर> और अंत में खिदिर + व्युत्पन्न प्रत्यय -पुर

मंसूरी और लेडीकेनी:

जिस तरह से भाषाई समुदाय के बोलने वालों की भाषाई बारीकियों के आधार पर जगहों के नाम बदलते हैं, उसी तरह खाने-पीने की चीजों के नाम भी बदल जाते हैं, जब वह एक क्षेत्र या स्थान से दूसरी जगह जाते हैं या फिर वह नाम किसी विदेशी स्रोत से लिया गया हो। ऐसा नए शब्द या वाक्यांश में मौजूद अपरिचित ध्वनियों को उच्चारण करने में आने वाली कठिनाइयों के कारण होता है। स्थान के बाद हम दो लोकप्रिय मिष्टान्न के बारे में बात करते हैं। और वह है मंसूरी और लेडीकेनी।

अब हम मंसूरी नाम के इतिहास पर नजर डालना चाहेंगे- यह 'मंसूरी' नाम कहाँ से आया। बहुत ही स्वादिष्ट दक्षिण भारतीय मिठाई 'मैसूर पाक' सम्भवतः दक्कन के शासक टीपू सुल्तान के साथ कोलकाता पहुँची और तत्पश्चात् लोकप्रिय हो गई। इस मिठाई के स्वाद, रूप और बनावट में कोलकाता की धरती पर थोड़ा बहुत बदलाव आया या नहीं यह देखकर तो नहीं लगता, परंतु जो बदलाव आया, वह इसके नाम में था। दिलचस्प बात यह है कि मैसूर पाक से 'मंसूरी' नाम कैसे पड़ गया।

सबसे पहले जो हुआ वह संभवतः यह कि मिठाई के मूल नाम से पाक शब्दांश हटा दिया गया। इसके बाद, माइसोर 'मैसूर' के प्रभाव से 'मंसूरी' बन गया, जैसा कि हिंदी या दक्खिनी उर्दू बोली में कहा जाता है। अंत में, शब्द के अंतिम स्थान पर /इ/ स्वर (/i/) को जोड़ दिया गया। और अंततः मंसूरी बोला जाने लगा।

लेडीकेनी:

मंसूरी मिठाई के बाद आइए एक और मिष्ठान्न के बारे में चर्चा करें। और वह है 'लेडीकेनी'। लेडीकेनी, जिसे लेडी केनी के नाम से भी जाना जाता है, एक लोकप्रिय बंगाली मिठाई है, जो गुलाब जामुन का एक प्रकार है, जिसे छेना (ताजा पनीर) और आटे से बनाया जाता है। इसे पारंपरिक रूप से भारत के पश्चिम बंगाल, और बांग्लादेश में खाया जाता है। यह मिठाई हल्की, तली हुई, लाल-भूरे रंग की होती है जिसे चीनी की चाशनी में भिगोया जाता है। प्रचलित मान्यता के अनुसार, स्थानीय हलवाई भीम चंद्र नाग ने वाइसरॉय की पत्नी को श्रद्धांजलि देने के लिए यह मिठाई तैयार की थी। कुछ लोगों का कहना है कि यह उनके जन्मदिन का जश्न मनाने के लिए बनाया गया था, जबकि अन्य का मानना है कि यह उनके कोलकाता में स्वागत के लिए बनाया गया था।

अवसर या कारण चाहे जो भी हो, लेडी कैनिंग को यह मिठाई इतनी पसंद आई कि यह उनके दावतों में एक नियमित विशेषता बन गई। स्थानीय लोगों ने इस नए व्यंजन से प्रभावित होकर जल्द ही इसे अपना लिया और मिठाई का नाम "लेडी केनी" रखा गया, जो स्थानीय उच्चारण के कारण धीरे-धीरे "लेडीकेनी" बन गया। जैसे 'लेडी कैनिंग' से 'लेदी केनी' और फिर लेदीकेनी। यह अंग्रेज महिला के दो-शब्द वाले नाम से एक-शब्द वाले नाम एक मिठाई के नाम में परिवर्तित हो गया।

यहाँ जो ध्वनि परिवर्तन हुई है, उसे इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है कि एक-दो ध्वनियाँ एक दूसरे में बदल गईं, जिसके बाद शब्द के अंतिम वाले वेलर 'नेसल ध्वनि' यानि "कंठ्य नासिक्य ध्वनि" (ŋ) का क्षय हो गया। जो भी बदलाव हुआ वह सिर्फ 'कैनिंग' शब्द में हुआ। 'लेडी' शब्द पर कोई असर नहीं पड़ा, जो सीधे नई मिठाई के नाम में शामिल हो गया। संक्षेप में लेडी कैनिंग से "लेडी केनी" और अंततः "लेडीकेनी" के रूप में उत्पन्न हुई। दूसरी ओर, /ae/ ध्वनि /ए/ बन

जाती है; और /ŋ/ ध्वनि लुप्त हो जाती है।

लेडी कैनिंग > लेडी केनी > लेडीकेनी

और अंत में यह ब्रिटिश महिला के दो-शब्द नाम से एक-शब्द नाम में परिवर्तित हो गया। यह व्यंजन आज भी बंगाल की विरासत को संभाले हुए है।

"लेडीकेनी" नाम अपने आप में सांस्कृतिक मिश्रण की कहानी है। जैसे-जैसे मिठाई की लोकप्रियता बढ़ती गई, यह लेडी कैनिंग का पर्याय बन गई, जिनका कोलकाता में गहरा प्रभाव था। मिठाई के लिए उनकी नियमित मांग ने इसे घर-घर में प्रचलित नाम बना दिया। समय के साथ, स्थानीय लोग इसे "लेडी केनी" के नाम से पुकारने लगे, जो अंततः "लेडीकेनी" में बदल गया। इस गलत उच्चारण ने मिठाई के आकर्षण को कम करने के बजाय, इसके आकर्षण को और बढ़ा दिया, जिससे यह बंगाल के पाक शब्दकोश में एक स्थायी स्थान बन गया।

निष्कर्ष:

जिस तरह से भाषाई समुदाय के बोलने वालों की भाषाई बारीकियों के आधार पर गाँवों, कस्बों और शहरों के नाम बदलते हैं, उसी तरह खाने-पीने की चीजों के नामों में भी परिवर्तन होता है, जब वह एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं या फिर वह नाम किसी विदेशी स्रोत से लिया गया हो। ये सब किसी नियम या सिद्धांतों के अनुसर ही होते हैं। यह प्रक्रिया है ध्वनि परिवर्तन की और उच्चारण की। यह स्वाभाविक तथा स्पष्ट है कि जब लोगों को नई ध्वनियाँ और शब्द मिलते हैं तो वे उसे अनुकूलित करने का प्रयास करते हैं और अपने विशिष्ट भाषाई तरीकों से उसे अपनी भाषा में समाहित करके आसान बना लेते हैं।

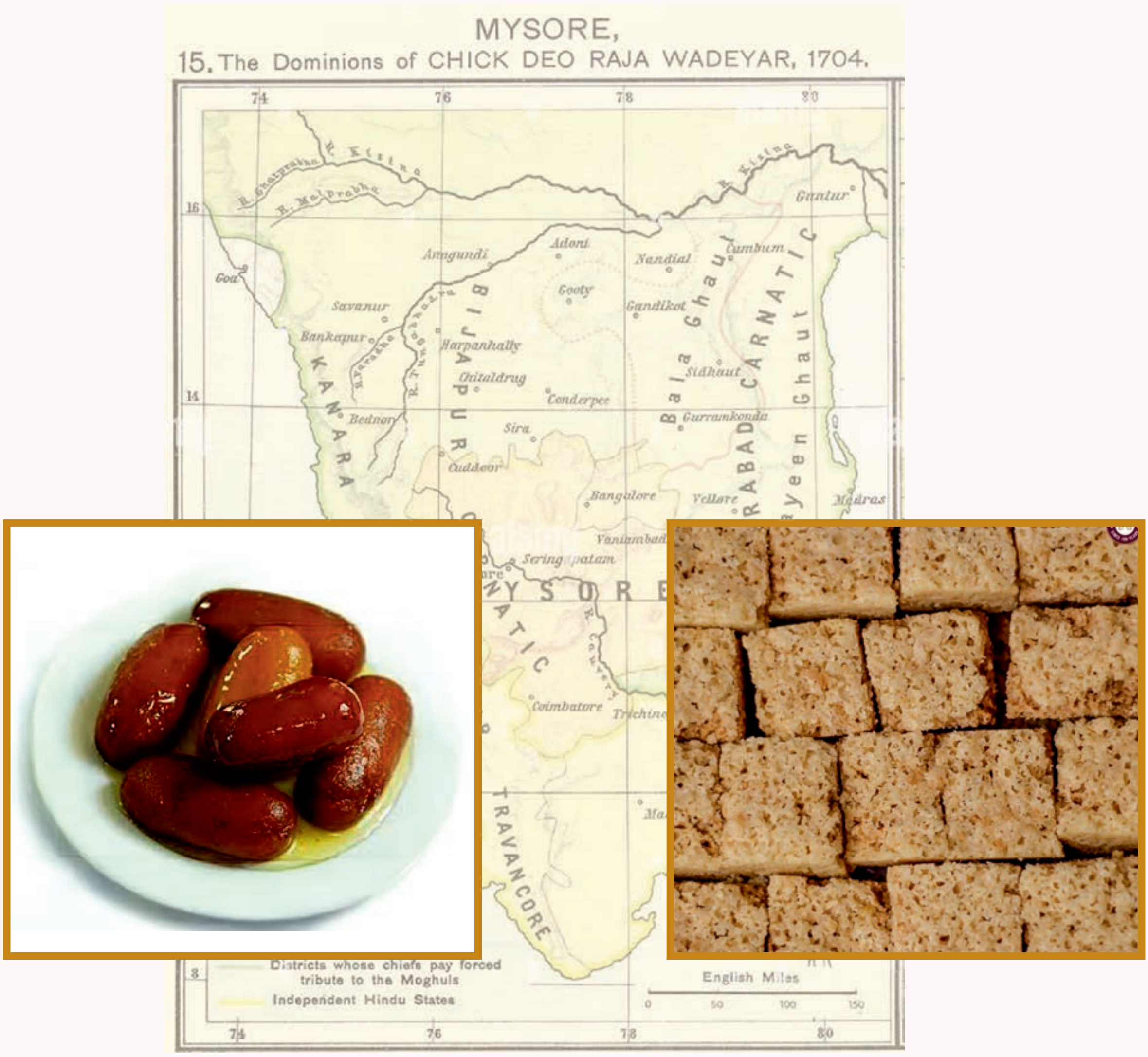

अनुक्रमणिका

यात्रा संस्मरण

अनुक्रमणिका

समुद्र में मोती: अंडमान निकोबार द्वीप समूह की यात्रा

वैशाली महेशकर

नवंबर 2022

मैं और मेरा परिवार हमेशा से ही समुद्री तटों का दीवाना रहा है। यात्रा मात्र एक शब्द ही नहीं, बल्कि अपने आप में एक ऐसी परिकल्पना है, जो किसी भी मनुष्य में रोमांच का संचार कर देती है।

हमने यात्रा की योजना 3 महीने पहले से ही बनानी शुरू कर दी थी, क्योंकि यात्रा की तारीखों के करीब आने पर हवाई जहाज का टिकट दर तेजी से बढ़ जाते हैं।

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह एक केंद्र शासित प्रदेश है, जो सुंदर बंगाल की खाड़ी के मध्य में स्थित है। यह 572 छोटे बड़े द्वीपों का एक समूह है, जिसमें 37 द्वीपों पर लोग रहते हैं।

हमने नवंबर महीने के लिए दिल्ली से चेन्नई होते हुए पोर्ट ब्लेयर तक की टिकटें बुक की थी, तटीय जलवायु परिस्थितियों को देखते हुए यह यात्रा करने के लिए सही मौसम माना जाता है।

दिल्ली से पोर्ट ब्लेयर तक चेन्नई होते हुए चार- पाँच घंटे का सफर था।

आसमान से बंगाल की खाड़ी की नीली सतह को देखना अद्भुत अनुभव था। कुछ घंटो की यात्रा के उपरांत समुद्र के मध्य में खूबसूरत द्वीप समूह ऐसे नजर आने लगे जैसे मोतियों की माला को किसी से बहुत ही सलीके से पिरोया हो। हम गंतव्य की ओर बढ़ते हुए बहुत उत्साहित थे। मैं अपनी यात्रा का दिनवार वर्णन करूंगी।

पहला दिन (दिल्ली से पोर्ट ब्लेयर / सेलुलर जेल)

दोपहर 1:10 बजे हमारा विमान पोर्ट ब्लेयर के वीर सावरकर हवाई अड्डे पर उतरा। हवाई अड्डे के निकास द्वार पे हमारे लिए गाड़ी खड़ी थी जिसके ड्राइवर रवि थे। रवि ने हमारे होटल “डी -मरीना” तक पहुँचाने के क्रम में हमारा अभिवादन और स्वागत किया। होटल में जरूरी औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद हम लोगों ने थोड़ा विश्राम किया। दोपहर 1 बजे हम लोग अपने ड्राइवर रवि के साथ सेल्लुलर जेल देखने के लिए पहुँचे। इसे ही ‘काला पानी की सजा’ भी कहा जाता था। इस जेल की नींव अंग्रेजों ने 1897 में रखी थी। ऑक्टोपस की तरह इसके सात शाखाएँ हैं जो मध्य में आपस में जुड़े हुए हैं। सबसे आखिरी में सावरकर कोठी है जहाँ वीर सावरकर ने अपने जीवन के 13 वर्ष (1911-1924) गुजारे थें। सेलुलर जेल में घूमने के दौरान यह अनुभव करना ही भयानक था कि कैसे हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना जीवन इन जेलों में कैद होकर काटा होगा। जेल परिसर में ही एक फांसी घर है। इस जेल में बंदियों को दी जाने वाली भयानक यातनाओं के बारे में बताने के लिए तथा स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन परिचय के लिए एक राष्ट्रीय संग्रहालय एवं मेमोरियल भी है। कैदियों को कोलू के बैल की तरह बाँधकर तेल निकालने के लिए सताया जाता था।

शाम होते ही लेजर लाइट और साउंड शो शुरू हुआ। इस शो में बॉलीवुड अभिनेता ओम पुरी जी की बेहद गंभीर आवाज में काला पानी और सेल्लुलर जेल में स्वतंत्रता सेनानियों पर जुल्म और अत्याचार को उस जेल परिसर के एक पीपल की पेड़ की नजरों से सुनाया गया। पीपल के पेड़ के द्वारा इस विवरण को सुनकर ही रूह काँप जाती है। लेजर लाइट और साउंड शो देखने के बाद अमर सेनानियों के बलिदान को याद करते हुए और सेल्लुलर जेल की मिट्टी को नमन करते हुए हम वहाँ से चल पड़े।

दूसरा दिन - हैवलॉक द्वीप (स्वराज द्वीप): रोमांच और शांत समय के लिए एक द्वीप

सुबह 6 बजे हमारे ड्राइवर रवि ने हमको पोर्ट ब्लेयर के

जेट्टी पर पहुँचा दिया, जहाँ से हैवलॉक द्वीप तक की यात्रा हमको समुद्री यात्रा से करना था। जहाज का नाम सी-लिंक था जो बेहद ही खूबसूरत और आरामदायक था। लगभग 2 घंटे की रोमांचक यात्रा के बाद, हम लोग 8 बजे हैवलॉक द्वीप पहुँच गए। हम हैवलॉक आइलैंड बीच रिजॉर्ट पर उतरे। नाश्ता करने के बाद, करीब 11 बजे हम लोग राधानगर बीच के लिए निकले।

राधानगर बीच एक बहुत ही खूबसूरत बीच है जो सफेद रेत, फिरोजी नीले रंग के पानी और हरे वनस्पतियों के लिए मशहूर हैं। इस बीच को टाइम पत्रिका द्वारा एशिया के तीन बेहतरीन बीचों में रखा गया है। यहाँ लोग स्विमिंग,स्नॉर्कलिंग, फिशिंग और स्कूबा डाइविंग करने आते हैं।

मुझे गहरे पानी से डर लगता था। मैंने अपने जीवन में पहली बार स्कूबा डाइविंग की। गाइड का धन्यवाद, जो स्कूबा डाइविंग के दौरान बहुत सहायक रहा। मेरे परिवार ने इसका भरपूर आनंद लिया।

एलीफैंट बीच के लोकप्रिय होने का कारण -यहाँ होने वाले वाटर स्पोर्ट्स है। जेट स्की , सी-वॉक सोफा राइड, स्नॉर्केलिंग और पैरासेलिंग करने के लिए यहाँ पर्यटकों की भीड़ रहती है। हम लोगों ने जेट स्की और सोफा राइड का आनंद लिया और पैरासेलिंग का टिकट लेकर अपनी बारी आने का इंतजार करने लगे। बीच पर उत्सव जैसा माहौल था। बीच पर सूख कर नीचे गिरे हुए पेड़ इसकी खूबसूरती को चार चाँद लगा रहे थे।

तीसरा दिन - नील आइलैंड (शहीद द्वीप)

नील आइलैंड जिसका नाम बदल कर अब शहीद द्वीप कर दिया गया है, उस ओर निकलना था। नील द्वीप पोर्ट ब्लेयर के उत्तर पूर्व में लगभग 36 किलोमीटर तथा हैवलॉक द्वीप से दक्षिण में 18 किलोमीटर में स्थित है। तिकोने आकार का यह द्वीप अंडमान द्वीप समूह के ताजे फलों और सब्जियों का मुख्य स्रोत है।यह द्वीप अपने प्राचीन सफेद समुद्र तटों और प्राकृतिक चट्टान संरचनाओं के कारण बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है।

चौथा दिन (नील आइलैंड/शहीद द्वीप/सीतापुर बीच /भरतपुर बीच / लक्ष्मणपुर बीच)

भरतपुर बीच तट पर उथला पानी है, जिसमें प्रवाल भित्तियाँ हैं जो समुद्र तट को स्नॉर्कलिंग, ग्लास बॉटम राइड्स और स्कूबा जैसे जल खेलों के लिए एक प्रसिद्ध स्थान बनाती हैं।

सीतापुर बीच तट जो सबसे साफ समुद्र तट है, सूर्योदय के क्षणों को देखने लायक है।

नील द्वीप का लक्ष्मणपुर समुद्र तट अपनी प्राकृतिक चट्टानी पुल के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ हम वास्तव में जलीय दुनिया, छोटी मछलियाँ, निमो और परिवार (हॉलीवुड फिल्म) का दृश्य देख सकते थे, क्योंकि पानी बहुत पारदर्शी था।

पाँचवा दिन (नील आइलैंड / शहीद द्वीप / पोर्ट ब्लेयर मार्केट)

सुबह 8 बजे उठकर हम लोगों ने नाश्ता किया और अपने रिजॉर्ट के सामने नारियल के बगीचे और उसके सामने बने बीच पर टहलने के लिए गए। थोड़ी फोटोग्राफी करने के बाद हम लोगों को रिजॉर्ट से चेक आउट करना था

छठा दिन - (पोर्ट ब्लेयर से लखनऊ)

बारातांग एक द्वीप है जो पोर्ट ब्लेयर से लगभग 101 किलोमीटर उत्तर दिशा में है। यहाँ जाने के लिए जंगल से होकर गुजरना होता है जो कि एक जारवा फारेस्ट रिजर्व है। हम लोग सुबह 3 बजे बारातांग के लिए सड़क मार्ग से निकले, क्योंकि जारवा फारेस्ट रिजर्व का गेट प्रतिदिन केवल 2 बार ही खुलता है। एक सुबह 6 बजे और दूसरा सुबह 9 बजे। हम लोगों ने 6 बजे का समय चुना था और लगभग 5 बजे जारवा जंगल के गेट पर पहुँच कर जरूरी परमिट लिया और 6 बजे गेट खुलने का इंतजार करने लगे। जारवा फारेस्ट रिजर्व में सुबह 6 बजे गेट खुलने पर पर्यटकों के गाड़ियों का काफिला अंदर जाने लगा। सबसे आगे वन विभाग की गाड़ी थी। यह 40 किलोमीटर लम्बा घना जंगल जारवा जनजाति का निवास स्थान है जो इस जंगल के मूलनिवासी है।

हम लोगों ने जंगल के रास्ते में जारवा आदिवासी लोगों को देखा, जो तीर धनुष लिए अपने पारंपरिक वेशभूषा में बहुत ही आकर्षक लग रहे थे।

सातवां दिन -पोर्ट ब्लेयर से कोलकाता होते हुए पुणे वापसी

- अंडमान एवं निकोबार द्वीप में ये करना ना भूलें : पैरासेलिंग, स्कूबा डाइविंग, जेट स्की, सी-वॉक, फोटोग्राफी।
- अंडमान एवं निकोबार द्वीप कैसे पहुँचें: सबसे अच्छा तरीका हवाई मार्ग से देश के सभी हिस्सों से जाया जा सकता है। समुद्री मार्ग से कोलकाता, विशाखापट्टनम और चेन्नई से पोर्ट ब्लेयर जा सकते हैं लेकिन समय काफी अधिक लगता है।
- अंडमान एवं निकोबार द्वीप जाने का सबसे अच्छा समय: नवंबर से फरवरी
- अंडमान एवं निकोबार द्वीप घूमने के लिए पर्याप्त दिन: 6 रात / 7 दिन

कुछ यादगार तस्वीरें हमारी यात्रा की:

अंडमान में लैंडिंग

हैवलॉक - स्वराज द्वीप- प्राचीन समुद्रतट

सेल्यूलर जेल- काला पानी

अगर आप प्रकृति के चमत्कारों की सराहना करते हैं, तो अंडमान और निकोबार द्वीप समूह एक बेजोड़ प्राकृतिक स्वर्ग प्रदान करते हैं। उनके रमणीय समुद्र तट, जीवंत प्रवाल भित्तियाँ, हरे-भरे जंगल, दुर्लभ पक्षी प्रजातियाँ और मनमोहक सरीसृप एक रमणीय पृष्ठभूमि बनाते हैं जो अविस्मरणीय पलायन प्रदान करता है।

घोडेश्वर मंदिर: यादों की यात्रा

अक्षय फराकटे

आदिकाल से ही मानव यात्रा करता आ रहा है। कभी वह भोजन की खोज में अनजानी दिशाओं में भटकता था, तो कभी सुरक्षित आश्रय की तलाश में। आधुनिक युग में भी इंसान व्यापार, शिक्षा, धार्मिक विश्वासों और व्यक्तिगत आनंद की खोज में यात्राएँ करता है। यात्रा हमें नए अनुभवों और दृष्टिकोणों से रूबरू कराती है, जो किताबें कभी नहीं सिखा सकतीं। यात्रा हमेशा केवल एक स्थल को देखने भर की नहीं होती, बल्कि वह आपके अनुभवों, भावनाओं और उससे जुड़े रिश्तों की यादों को भी समेटे रहती है। यही कारण है कि यात्रा हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है।

जब भी मैं अपनी जीवन की यादगार यात्राओं के बारे में सोचता हूँ, तो मेरा मन बचपन की उन मधुर यादों में लौट जाता है। जैसे तितली हर रंग-बिरंगे फूल से रस ग्रहण करती है, वैसे ही मैं अपनी बचपन की घोडेश्वर मंदिर यात्रा की यादों में डूब जाता हूँ। यह मंदिर ना तो कोई बड़ा धार्मिक स्थल है, ना ही इसके बारे में बहुत लोग जानते हैं। पर मेरे लिए यह जगह सिर्फ एक मंदिर नहीं, बल्कि सुनहरी यादों से भरी एक पवित्र धरोहर है।

हर साल गर्मियों की छुट्टियों में, जैसे ही मई का महीना ढलने लगता, हम अपने मामा के गाँव जाने को आतुर हो जाते। वहाँ पहुँचते ही सबकी उत्सुकता का केंद्र एक ही होता — घोडेश्वर मंदिर की यात्रा। यह मंदिर कोल्हापुर जिले के कागल तहसील के कुरुकली गाँव की सीमाओं के पास एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है। यह भगवान म्हसोबा का मंदिर है, जिन्हें गाँवों का संरक्षक देवता माना जाता है। म्हसोबा शब्द 'महिषोबा' का अपभ्रंश है, जिसका अर्थ होता है 'संत'(महिष) और 'पितातुल्य' (बा)। म्हसोबा को गाँव के रक्षक के रूप में पूजा जाता है, और उनके मंदिर अक्सर गाँव की सीमाओं पर स्थित होते हैं। यह देवता गाँवों की सीमा पर रहकर उसकी सुरक्षा करते हैं, ऐसा विश्वास है।

मेरे मामा एक किसान हैं, और हर साल वह अपने परिवार के साथ इस मंदिर में फसल की अच्छी उपज और पशुधन की भलाई के लिए प्रार्थना करने जाते थे। हमारे लिए यह यात्रा केवल एक धार्मिक कार्य नहीं था, यह एक अनौपचारिक उत्सव था, जिसमें परिवार के सभी सदस्य एक साथ होते थे।

यात्रा की तारीख तय होते ही हमारे गाँव के रिश्तेदारों को निमंत्रण भेजा जाता। यात्रा के एक दिन पहले सभी मामा के घर एकत्रित होते और घर का माहौल उत्साह और उल्लास से भर जाता। गर्मियों की चिलचिलाती धूप से बचने के लिए हम सुबह तैयार होकर यात्रा की शुरुआत करते थे। उस समय किसान बैलगाड़ियों से यात्रा करते थे, जो हमारे लिए किसी रथ से कम नहीं थी। बैल हमारे यात्रा के साथी होते थे, इसलिए उन्हें एक दिन पहले आराम देकर सजाया जाता। उनके गले में घुंघरुओं की मालाएँ पहनाई जाती, और उनके ऊपर रंग-बिरंगे कपड़े की झालरें डाली जाती। सुबह 4 बजे के आसपास, जब आसमान में तारे टिमटिमा रहे होते थे, हम यात्रा के लिए निकलते। बैलों के घुंघरू की आवाजें, रात के कीड़ों की गूँज से ताल मिलाकर हमारे कानों में संगीत घोल देती थीं। आकाश का नीरव विस्तार और तारा मंडल हमारे अदृश्य सहयात्री बन जाते थे।

करीब ढाई घंटे के सफर के बाद, जब सूरज की किरणें क्षितिज को चूमने लगती, हम मंदिर परिसर पहुँचते। वहाँ पहुँचकर हम सबसे पहले बैलों को छाँव में आराम कराते। मंदिर परिसर में ही लोग प्रसाद बनाने में जुट जाते, और हम बच्चे पहाड़ी की ओर करौंदे के फल तोड़ने के लिए निकल जाते। जब हम वापस आते, तो प्रसाद तैयार हो चुका होता। फिर पूरा परिवार एक साथ मंदिर में दर्शन के लिए जाता। मंदिर के सामने एक पुराना चमेली का पेड़ था, जिसकी मादक सुगंध पूरे वातावरण में घुल जाती थी। मंदिर के भीतर संगमरमर के चबूतरे पर, सिंदूर से रंगी हुई घोडेश्वर देवता की मूर्ति

विराजमान थी। मूर्ति के पास रखी पीतल की घोड़ों की छोटी-छोटी मूर्तियाँ इस बात का प्रतीक था कि किसी की मन्नत यहाँ पूरी हुई है।

दर्शन के बाद, हम सब मिलकर भोजन करते, हँसी-मजाक और खेलों के बीच समय का पता ही नहीं चलता। पूरा दिन खिलखिलाते और आनंद में बीत जाता। शाम होते ही जब सूरज धीरे-धीरे अस्त होने लगता, हम मंदिर की एक प्रदक्षिणा कर भगवान से अगले साल फिर आने का वादा करते और विदा लेते। यह विदाई हमेशा मन को उदास कर देती थी, मानो किसी बहुत पुराने मित्र से विदा हो रहे हो।

आज उस यात्रा को किए हुए दस साल बीत चुके हैं। पढ़ाई और फिर नौकरी के चलते मैं यह यात्रा नहीं कर पाया। अब इस यात्रा में बैलगाड़ी की जगह ट्रैक्टर ने ले ली है। न अब बैलों की घुंघरुओं की आवाज है, न वह रात के कीड़े की जो अपने संगीत से माहौल में जादू भर देते थे। करौंदे के पेड़ भी अब सूख चुके हैं और मंदिर के सामने चमेली का पेड़ भी इतिहास बन गया है।

अब भले ही मैं उस यात्रा पर नहीं जा पा रहा हूँ, लेकिन वो यात्रा हर दिन मेरे साथ है — मेरे अनुभवों और मेरी यादों में। समय के साथ भौतिक चीजें खो सकती हैं, लेकिन भावनात्मक जुड़ाव और रिश्तों की गर्माहट हमेशा हमारे दिलों में बनी रहती है। इसलिए, मेरे लिए घोडेश्वर मंदिर की यात्रा सिर्फ बचपन का एक हिस्सा नहीं, बल्कि वह जीवन यात्रा का प्रतीक है जो हर दिन हमें कुछ नया सिखाती है, हमें हमारे मूल से जोड़े रखती है। मैं आज भी उस बचपन की यात्रा को अपने दिल में जिंदा रखना चाहता हूँ। मैं फिर से वही छोटा बच्चा बनकर बैलगाड़ी की सवारी करना चाहता हूँ, जहाँ तारों का आसमान मेरा साथी हो और हर कदम पर यादों का अमृत बसा हो।

"यादों के झरोखे में छिपी है, वो छोटी सी यात्रा,
जहाँ धूप छाँव के बीच बसी थी बचपन की पगधारा।
बैलगाड़ी की टप-टप, और तारों की वह रात,
घोडेश्वर की पगडंडी पर, बिछी थी रिश्तों की सौगात।"

घोडेश्वर मंदिर

घोडेश्वर मंदिर का परिसर

घोडेश्वर जी की पत्थर में बनी मूर्ती

समुद्र का अजेय - जंजीरा किला

नितीन कराळे

कई बार कोंकण जाने का अवसर मिला, लेकिन कभी जंजीरा किला देखने का मौका नहीं मिल पाया। 8 फरवरी 2025 को मेरे कॉलेज के मित्रों और परिवार के साथ हमारी कोंकण यात्रा सफल हुई। अलीबाग बीच देखने के बाद हम मुरुद बीच पहुँचे, जो जंजीरा किले के पास ही स्थित है। यह एक अत्यंत सुंदर और अद्भुत किला है - जिसे आज तक कोई भी जीत नहीं पाया।

अरब सागर की गोद में बसा एक अभेद्य किला

जंजीरा किला

भारत के पश्चिमी तट पर, महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में मुरुड गाँव के पास, अरब सागर की लहरों के बीच स्थित है - जंजीरा किला। चारों ओर समुद्र से घिरा हुआ यह किला अपने आपमें एक चमत्कार है। किले के चारों ओर लगभग 10 मीटर ऊँची मजबूत दीवारें हैं, जो इसे समुद्र से पूर्ण सुरक्षा प्रदान करती हैं।

इस किले का निर्माण 15 वीं शताब्दी में अहमदनगर सल्तनत द्वारा किया गया था । मुरुड-जंजीरा किले को अफ्रीकी मूल के सिद्दी साम्राज्य ने अपने अधीन किया, और सुरूर खान के शासनकाल में इस किले को मजबूत बनाया गया। सिद्धी परिवार ने किले की संरचना और समुद्र के रास्तों की सुरक्षा को सुनिश्चित किया। सिद्दी कुशल समुद्री योद्धा थे और इस किले से कई वर्षों तक शासन करते रहे। इस किले को समुद्री व्यापार और रणनीतिक सुरक्षा के लिए बनाया गया था।

किले का नाम और उसकी महत्ता

यह किला लगभग 650 वर्ष पुराना है। यह समुद्र के भीतर स्थित है, इसलिए इसे **जंजीरा** कहा जाता था, जिसका अर्थ **"समुद्र में बंदी"**।

किले का विहंगम दृश्य

इस अभेद्य किले को बनाने में 22 वर्ष लगे और यह करीब 22 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। किले को पूरी तरह से देखने में लगभग 4.5 से 5 घंटे का समय लगता है। हालाँकि, किले के भीतर एक ऊँचा स्थान है जहाँ से पूरे किले का विहंगम दृश्य देख सकते हैं। इस ऊँचाई वाले स्थान पर एक महल के अवशेष हैं, जो कभी शासन और शक्ति का प्रतीक था। यहाँ से 360 डिग्री का दृश्य मिलता है, जो सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। इस स्थान से किले की दीवारें, तोपें, जलाशय और आसपास के समुद्री क्षेत्र स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि जंजीरा किले में पहले 514 तोपें थीं, जिनमें से आज भी कलाल बांगड़, लैंड कासम और

चावड़ी नामक तोपें देखी जा सकती हैं। इन तोपों की विशालता और ध्वनि आज भी दर्शकों को रोमांचित कर देती है।

दीवारें लगभग 40 फीट

किले के अंदर स्थित सुरूर खान का भवन, जो कभी शासन और शक्ति का प्रतीक था, अब जर्जर अवस्था में खड़ा है। साथ ही किले में कई महल, मस्जिदें और जलाशय भी हैं। एक अद्भुत बात यह है कि समुद्र के बीच में होने के बावजूद किले के अंदर दो मीठे पानी के कुंड मौजूद हैं, जो आज भी पानी प्रदान करते हैं।

मीठे पानी के कुंड

तोपें

सुरक्षा का अनोखा तंत्र

किले के मुख्य द्वार के ऊपर एक शेर की मूर्ति बनी हुई है, जिसे "द शेर दरवाजा" या "टाइगर गेट" कहा जाता है। जो छह हाथियों को पकड़ते हुए दिखाया गया है। यही चिह्न उस समय सिक्कों पर भी छपा होता था। किले में प्रवेश के लिए उस चिन्ह वाला सिक्का दिखाना अनिवार्य था, अगर किसी के पास वह सिक्का न हो, तो उसे शत्रु या जासूस समझकर वहीं मार दिया जाता था। इस किले की सुरक्षा का अनोखा और सख्त तरीका था। यह चिह्न दूर से ही दिखाई देता है, जिससे शत्रु को भ्रमित किया जा सके। इस द्वार के माध्यम से किले में प्रवेश करना अत्यंत कठिन था, क्योंकि यह स्थान आसानी से पहचाना नहीं जाता था और शत्रु के लिए यह एक जाल के समान था।

शेर की मूर्ति - छह हाथियों को पकड़ते हुए

छत्रपति शिवाजी महाराज की रणनीति

छत्रपति शिवाजी महाराज ने इस किले को जीतने का निश्चय किया था। उनका मानना था कि यदि यह समुद्री किला मराठा साम्राज्य के हाथ आ गया तो पुर्तगालियों और अंग्रेजों को समुद्र से रोका जा सकता है।

छत्रपती शिवाजी महाराज के विश्वासपात्र और मराठा बहादुर सेनापति कोंडाजी फरजंद ने 1670 में मुरुड-जंजीरा किले पर हमला किया लेकिन किले की समुद्र से घिरी स्थिति, उसकी मजबूत किलेबंदी और सिद्धी के सशस्त्र रक्षकों ने इस हमले को नाकाम कर दिया।

मुरुड-जंजीरा किला एक अत्यंत मजबूत किला था, जिसे घेरने और जीतने के लिए बहुत बड़ी योजना और संसाधन चाहिए थे, जो उस समय शिवाजी महाराज के पास नहीं थे।

उन्होंने कई योजनाएँ बनाईं। लकड़ी के जहाजों से एक छोटा बेड़ा तैयार किया और रात के अंधेरे में किले के पास पहुँचे। उन्होंने सिद्धियों से मित्रता का दिखावा भी किया, लेकिन जैसे ही हमला करना चाहा - सिद्धी पहले से तैयार थे।

सिद्धी योद्धाओं ने समुद्र में जाल बिछा रखे थे, और शिवाजी महाराज का हमला असफल हो गया। परंतु

अनुक्रमणिका

उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने किले से लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर पद्मदुर्ग किला बनवाया, ताकि भविष्य में रणनीतिक बढ़त प्राप्त की जा सके।

पद्मदुर्ग

“मुझे जीतने की कोशिश कई ने की, पर मेरी दीवारें आज भी अजेय हैं!"

छत्रपति संभाजी महाराज का संघर्ष

छत्रपति शिवाजी महाराज के पुत्र छत्रपति संभाजी महाराज ने भी जंजीरा को जीतने के लिए कई बार प्रयास किए। उन्होंने एक विशाल नौसेना खड़ी की और समुद्री युद्ध किए लेकिन सिद्धी सैनिकों की समुद्री शक्ति और रणनीति के आगे हर बार सफलता हाथ नहीं लगी।

आज का जंजीरा

जंजीरा किले तक आप मुरुड, राजपुरी, और डिघी – इन तीन गाँवों से पहुँच सकते हैं। नावों द्वारा किले तक की यात्रा स्वयं में एक रोमांचक अनुभव है।

यह किला आज भी अरब सागर की लहरों के बीच गर्व से खड़ा है, जैसे इतिहास के पन्नों से यह कह रहा हो—

पारिवारिक तीर्थयात्राः पुणे से वाराणसी, अयोध्या, प्रयागराज एवं देवघर

मनीष कुमार गुप्ता

दिसंबर 2024 में, मैं, मेरी धर्मपत्नी, माँ, बेटा (किआन) और बेटी (आरना)- हम पाँचों ने भारत के कुछ प्रमुख आध्यात्मिक स्थलों की विशेष तीर्थयात्रा की। यह यात्रा माँ के लिए और भी खास थी, क्योंकि यह उनका पहला हवाई सफर था। जब जीवन की गति बहुत तेज हो जाए, तो कभी-कभी रुककर आत्मा से जुड़ना जरूरी होता है। हमारी यह यात्रा मात्र तीर्थाटन नहीं थी, बल्कि एक ऐसा आध्यात्मिक अनुभव था, जिसने परिवार को जोड़ा, जीवन को दिशा दी और संस्कारों को फिर से जीवित किया।

दिन 1: पुणे से वाराणसी (दिल्ली होकर), फिर अयोध्या दर्शन:

सुबह की उड़ान से हम दिल्ली होते हुए वाराणसी पहुँचे और दोपहर 1:30 बजे लैंड किया। वहाँ से इनोवा कैब से हम लगभग 4.5 घंटे की ड्राइव करके अयोध्या पहुँचे।

शाम 6 बजे होटल चेक-इन के बाद हमने अयोध्या के प्रमुख स्थलों के दर्शन किए:

- **राम जन्मभूमि मंदिर:** भगवान श्रीराम के जन्मस्थल पर बना भव्य मंदिर - शांत वातावरण और आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण। ऑनलाइन बुकिंग से 15 मिनट में दर्शन हो गए।
- **हनुमान गढ़ी:** किले जैसे मंदिर में करीब 70 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं, लेकिन दर्शन का अनुभव अद्भुत था।
- **दशरथ महल:** राजा दशरथ का पूर्व महल - रंग-बिरंगे सजावट और भक्ति संगीत से मन मोह गया।
- **कनक भवन:** माता कैकेयी द्वारा सीता को उपहारस्वरूप दिया गया मंदिर - सुंदर प्रतिमाएँ।

रात को सादा उत्तर भारतीय भोजन करने के बाद हम होटल लौटे।

संदेश: अयोध्या सिखाती है कि जीवन में मर्यादा, कर्तव्य और संयम कितना आवश्यक है।

दिन 2: प्रयागराज संगम स्नान, विंध्याचल मंदिर दर्शन, वाराणसी आगमन

प्रातः स्नान के बाद हम प्रयागराज के लिए रवाना हुए। वहाँ बोट क्लब से निजी नाव लेकर 1.5 घंटे की शांत यात्रा की और त्रिवेणी संगम (गंगा, यमुना, सरस्वती) में स्नान किया। मेरी माँ डुबकी तो नहीं लगा सकीं, लेकिन नाव से उतरकर मंच पर और फिर त्रिवेणी संगम में जाकर उन्होंने पूजा की। नाव की सवारी के दौरान लौटते समय, हमने प्राचीन अक्षय वट (एक पवित्र बरगद का पेड़) के भी दर्शन किए।

संदेश: त्रिवेणी संगम ना केवल जल का प्रतीक है, बल्कि मन, तन और आत्मा के संतुलन का भी प्रतीक है।

प्रयागराज से वाराणसी की ओर लौटते समय हम विंध्याचल में दर्शन के लिए निम्नलिखित स्थानों पर रुके:

- **सीता कुंड-** सीता माता से जुड़ा एक आध्यात्मिक, दिव्य और शांत स्थल।
- **अष्टभुजा मंदिर-** यह मंदिर देवी दुर्गा के आठ भुजाओं वाले रूप को समर्पित है, जो विंध्याचल पहाड़ी के ऊपर स्थित है।
- **विंध्यवासिनी मंदिर-** यह एक शक्तिपीठ है, जो वरदान देने के लिए प्रसिद्ध है।

संदेश: नारी शक्ति की उपासना ही संतुलन, सुरक्षा और समर्पण का मूल है।

मुस्कुराइए आप बनारस में हैं.... रात 8:30 बजे वाराणसी के बाटी चोखा रेस्टोरेंट में भोजपुरिया भोजन किया। 10 बजे **होटल बनारस पैलेस** में चेक-इन किया। वाराणसी के लोगों का अभिवादन **'हर-हर महादेव' से होता है।**

जिसने भी छुआ वो स्वर्ण हुआ, सब कहे मुझे मैं पारस हूँ

मेरा जन्म महा श्मशान मगर, मैं जिन्दा शहर बनारस हूँ।

चंद्रशेखर गोस्वामी

यहाँ बाबा विश्वनाथ का दरबार है, यहाँ माँ गंगा की जय जयकार है,

अध्यात्म की नगरी बनारस को देखा, तो लगा यही तो जीवन का सार है।

चक्रधारी पांडेय

कंकर-कंकर मेरा शंकर, मैं लहर-लहर अविनाशी हूँ,

मैं काशी हूँ, मैं काशी हूँ, मैं काशी हूँ , मैं काशी हूँ।

कुमार विश्वास

दिन 3: वाराणसी और सारनाथ के मंदिर दर्शन:

हमारा नया कैब ड्राइवर टाटा मांजा कार लेकर आया, और हमने अन्वेषण से भरा एक दिन शुरू किया:

- **मार्कण्डेय महादेव मंदिर:** ऋषि मार्कण्डेय की तपस्थली।
- **स्वर्वेद महामंदिर:** स्वर्वेद को समर्पित एक अद्भुत मंदिर, जो शांति और भव्य वास्तुकला का प्रतीक है।
- **सारनाथ:** एक प्रमुख बौद्ध स्थल जहाँ भगवान बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपना पहला उपदेश दिया था। हमने धामेक स्तूप, चौखंडी स्तूप, मूलगंध कुटी विहार और सारनाथ संग्रहालय (2-3 घंटे का समय) के दर्शन किए।
- **नमो घाट:** गंगा के किनारे एक नव विकसित घाट, सुंदर फोटो व भ्रमण के लिए उपयुक्त है।
- **बीएचयू काशी विश्वनाथ मंदिर:** बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के अंदर स्थित यह मंदिर काशी विश्वनाथ मंदिर की आधुनिक प्रतिकृति है।
- **संकट मोचन हनुमान मंदिर:** भक्तों के संकट हरने वाला प्रसिद्ध मंदिर।

हम रात्रि भोजन और आराम के लिए होटल बनारस पैलेस लौट आए।

दिन 4: काशी रुद्राभिषेक, घाट भ्रमण और गंगा आरती:

जहाँ स्वयं शिव निवास करते हैं, वह भूमि काशी है,

हर श्वास में गूंजता है, वह पवित्र नाम - काशी है।

विश्वनाथ के द्वार पर नष्ट होते हैं सारे दुःख-दोष,

यहाँ प्रत्येक पीड़ा बनती है प्रार्थना - यही काशी है।

काशी विश्वनाथ मंदिर में सुबह रुद्राभिषेक कराया (पूर्व बुकिंग)। ज्ञानवापी क्षेत्र भी देखा।

नाश्ते में हमने कचौरी गली में कचौरी, छोटी कचौरी, जलेबी, डोसा और इडली खाकर बनारसी व्यंजनों का आनंद लिया और मौसमी व्यंजन मलाइयों (केवल सर्दियों में उपलब्ध) का भी स्वाद लिया।

सुहाना मौसम और गंगा की नाव से यात्रा: इसके बाद हम दशाश्वमेध घाट गए और दशाश्वमेध घाट से नाव द्वारा - अस्सी घाट, मणिकर्णिका घाट (जहाँ हर वक्त चिता जलती रहती है), पंचगंगा घाट का भ्रमण किया। इसके अलावा आदिकेशव घाट, हरिश्चंद्र घाट, केदार घाट और तुलसी घाट को भी देखा।

पैदल यात्रा (3-4 किमी):

- **प्रभु जी बैठक:** यह बैठक पुष्टिमार्ग और शुद्धाद्वैत सिद्धांत के संस्थापक श्री वल्लभाचार्य महाप्रभुजी का विवाह स्थल है। बंद होने के कारण बाहर से देखा गया।
- **बिंदु माधव मंदिर:** भगवान विष्णु को समर्पित। बिंदु माधव शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है, "माधव" जिसका अर्थ है भगवान विष्णु और "बिंदु" जिसका अर्थ है बूंद। यह दर्शाता है कि भगवान विष्णु पवित्र गंगा नदी की हर बूंद में मौजूद हैं।
- **संकट देवी मंदिर:** संकटों से मुक्ति देने वाला एक शक्तिशाली पीठ।

दोपहर के भोजन के बाद, हम काल भैरव मंदिर गए, जिन्हें "काशी के कोतवाल" के रूप में पूजा जाता है, और एक व्यवस्थित कतार में प्रतीक्षा करने के बाद दर्शन किए। हमने पास के दंडी भैरव मंदिर में भी दर्शन किए।

शाम को **दशाश्वमेध घाट** पर गंगा आरती - मंत्रोच्चार, दीप, और आध्यात्मिक वातावरण में डूब गए। शाम-ए-बनारस: एक ऐसा अनुभव जिसके बिना आपका सफर अधूरा है। यहाँ के घाट, यहाँ के लोग, आरती सब कुछ बेहद प्यारा है। तभी तो इस शहर के बारे में कहते हैं, 'तुम इश्क-इश्क कहना, मैं बनारस कह दूँगा'।

काशी की गलियों में गूंजे हर हर महादेव, हर चित्त में बसें शिव, हर हाथ में हो स्नेह।

त्रिपुंड लगाए जो चले विश्वनाथ के द्वार, मिट जाएँ सारे संशय, पावे अमृत-प्रवाह।

दिन 5: अस्सी घाट, स्थानिक भोजन, देवघर प्रस्थान

थकान के कारण सुबह-ए-बनारस नहीं देख पाए, लेकिन बाद में अस्सी घाट पहुँचे और तुलसी घाट पर स्नान किया।

मैंने अस्सी घाट के तट पर अपनी पत्नी से कहा:

तेरे साथ घाटों पर चलना जैसे कोई पूजा थी,
दीपों की ज्योति में तेरा चेहरा जैसे प्रभा थी।
किआन की हँसी, आरना की मधुर बोली,
माँ का स्नेह, जैसे गंगा की निर्मल धारा बोली।
काशी की साँझ, हमारा ये पूरा परिवार...
शिव भी मुस्कराए होंगे - वह दिन था आभार।

वापसी में बाबा चाट भंडार के पास से **बंगाल स्वीट हाउस** से मिठाई ली। शाम को **बाबा चाट** पर **चाट** का आनंद लिया और फिर इनोवा से डीडीयू स्टेशन पहुँचे और देवघर के लिए रात की ट्रेन पकड़ी।

संदेश: यह स्थान सिखाता है कि **धार्मिकता केवल कर्मकांड नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि है।**

दिन 6: देवघर में बैद्यनाथ धाम दर्शन

सुबह 11 बजे देवघर पहुँचे और होटल मिलन पैलेस में ठहरे।

शिवगंगा जलाशय के दर्शन: 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक, बाबा बैद्यनाथ धाम की ओर बढ़ने से पहले हमने बैद्यनाथ मंदिर के पास पवित्र शिवगंगा तालाब के दर्शन किए।

बाबा बैद्यनाथ धाम - यह 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। हमारे मंदिर गाइड (पंडा) ने भारी भीड़ के बावजूद हमारी मदद की और गर्भगृह के बाहर और अंदर दोनों जगह रुद्राभिषेक पूजा की।

गठबंधन पूजा - बैद्यनाथ और पार्वती मंदिरों के बीच विवाह का प्रतीक लाल वस्त्र बांध गठबंधन पूजा की, जो शाश्वत वैवाहिक बंधन का प्रतीक है। ढोल की थाप और मंत्रोच्चार ने माहौल को और भी अधिक रोमांचक बना दिया था।

आध्यात्मिक रूप से संतुष्टिदायक इस दिन के बाद शाम आराम में बीती।

संदेश: आस्था और संकल्प जब एक साथ चलते हैं, तब जीवन में स्थिरता आती है।

दिन 7: बसुकीनाथ, त्रिकुट पर्वत और तपोवन

हम सुबह - सुबह घूमने के लिए निकले:

- **बसुकीनाथ मंदिर** - दर्शन और स्थानीय नाश्ता (आलू, समोसा, जलेबी) ।
- **त्रिकुट पर्वत** - झारखंड के परिदृश्यों के मनोरम दृश्य पेश करने वाली रोपवे सवारी के लिए जाना जाता है।
- **तपोवन** - शांति और ध्यान के लिए हरियाली और गुफाओं से घिरा आदर्श स्थल ।
- **नौलखा मंदिर** - नौ लाख के दान से निर्मित भव्य मंदिर (दोपहर बाद पहुँचे) ।

शाम को पुनः बैद्यनाथ मंदिर जाकर आरती में भाग लिया।

दिन 8: देवघर से कोलकाता और पुणे वापसी

देवघर से कोलकाता की उड़ान ली। वहाँ:

- कुछ सुन्दर साड़ियाँ खरीदीं
- संदेश, खजूर शक्कर रसगुल्ला जैसी मिठाइयाँ लीं

रात को पुणे की उड़ान से 11:55 बजे पहुँचे और 29 दिसंबर को तड़के 1:30 बजे घर पहुँचे।

घर लौटते समय...

हम केवल स्मृतियाँ नहीं, बल्कि संस्कार, **स्नेह और शांति** लेकर लौटे। यह यात्रा हमें बताती है कि जब परिवार **आस्था और परंपरा की यात्रा** पर निकलता है, तो वह केवल स्थल नहीं बदलता - वह **भीतर से भी बदलता है।**

यात्रा का सारांश:

यह यात्रा केवल एक भ्रमण नहीं थी, बल्कि हमारे परिवार के लिए एक **आध्यात्मिक नवनिर्माण** जैसी रही।

अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के दर्शन हमारे लिए एक अत्यंत भावनात्मक अनुभव था। यह मंदिर, भगवान श्रीराम के जन्मस्थान पर स्थित है, और 22 जनवरी 2024 को उद्घाटन के बाद से लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित कर रहा है। मंदिर की भव्यता और वहाँ की दिव्यता ने हमारे मन को गहराई से स्पर्श किया।

प्रयागराज में त्रिवेणी संगम पर स्नान करते समय ऐसा लगा जैसे आत्मा ने नया जीवन पाया। गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का मिलन केवल जल का संगम नहीं था, बल्कि **मन, तन और आत्मा की पवित्रता का प्रतीक** बन गया।

विंध्याचल में माँ विंध्यवासिनी देवी के दर्शन ने हमें शक्ति और श्रद्धा का अनुभव कराया। यह मंदिर गंगा नदी के तट पर स्थित है और देवी की पूर्ण रूप में पूजा का एकमात्र स्थल माना जाता है। यहाँ की आरती और भक्तों की आस्था ने हमारे मन को गहराई से प्रभावित किया।

काशी की शांत गंगा लहरों में न केवल शरीर ने विश्राम पाया, बल्कि आत्मा ने भी निर्मलता का अनुभव किया। घाटों की दीप-आरती, मंदिरों की घंटियाँ, और चारों ओर व्याप्त श्रद्धा ने यह स्मरण कराया कि जीवन केवल दौड़-भाग नहीं, बल्कि भीतर से **जुड़ने की प्रक्रिया** भी है।

देवघर में ज्योतिर्लिंग के दर्शन करते समय, मन जैसे सभी चिंता-भारों से मुक्त हो गया। वहाँ की दिव्यता ने हमें यह बल दिया कि सच्चा साहस बाहर नहीं, **विश्वास और अपनत्व** में छिपा होता है।

इस यात्रा ने हमें एक परिवार के रूप में फिर से एक-दूसरे के और निकट ला दिया। बिना किसी दिखावे के, रोज़मर्रा के शोर से दूर, हम एक-दूसरे की बातें सुन सके, समझ सके और **स्नेह का सहज अनुभव** कर सके - जो सामान्य जीवन की भागदौड़ में कहीं खो जाता है।

अन्य परिवारों के लिए संदेश:

यदि आप अपने जीवन में कुछ ठहराव चाहते हैं, अपने बच्चों को **भारत की सांस्कृतिक** और **आध्यात्मिक परंपरा** से जोड़ना चाहते हैं, और अपने माता-पिता के साथ कुछ शांत, मधुर समय बिताना चाहते हैं - तो यह यात्रा आपके लिए एक **अमूल्य अनुभव** बन सकती है।

यह यात्रा कठिन नहीं है, खर्चीली भी नहीं, लेकिन इसका **सार उसके अनुभवों में है** - जहाँ श्रद्धा, संस्कृति और पारिवारिक स्नेह एक साथ बहते हैं, जैसे संगम की धाराएँ।

यात्रा सुझाव:

- **समय:** अक्टूबर से मार्च तक यात्रा करना उपयुक्त है।
- **बच्चों के लिए:** हर स्थल पर उन्हें पौराणिक संदर्भ देकर जुड़ाव बनाएँ।
- **बुज़ुर्गों के लिए:** आरामदायक ठहराव और थकान-मुक्त कार्यक्रम बनाएँ।
- **यातायात:** हवाई मार्ग, ट्रेन दोनों विकल्प अच्छे हैं।

निष्कर्ष:

यह यात्रा केवल स्थलों की नहीं, संवेदनाओं की थी। यह हमारे लिए एक जीवित पाठशाला बन गई - जहाँ श्रद्धा, संस्कृति और परिवार के बीच की डोर और भी मजबूत हो गई।

अस्सी घाट

काशी विश्वनाथ मंदीर (ज्योतिर्लिंग)

अष्टभुजा मंदिर

संकटामाता मंदीर

स्वर्वेद महामन्दिर धाम

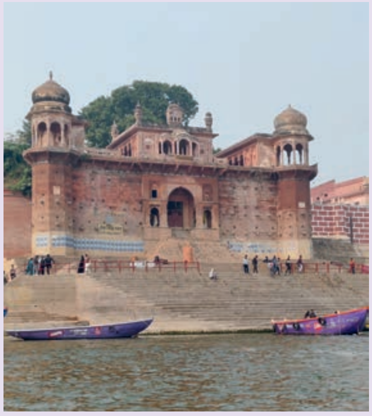

चेत सिंह घाट

सांची संग्रहालय

गंगा आरती

नमो घाट

श्री हनुमान गढ़ी(अयोध्या)

देवघर मंदीर (ज्योतिर्लिंग)

पुष्कर – एक आध्यात्मिक अनुभव

शुभांगनी असाटी

हाल ही में मुझे पुष्कर जाने का अवसर मिला। यह यात्रा मेरे लिए एक अद्भुत और आध्यात्मिक अनुभव रही। राजस्थान के अजमेर जिले में स्थित यह छोटा-सा शहर अपनी सांस्कृतिक धरोहर, आध्यात्मिक ऊर्जा और मनमोहक वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। प्राचीन मंदिरों, पवित्र सरोवर और घाटों की श्रृंखला के बीच स्थित यह स्थान न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यहाँ की शांति और आध्यात्मिकता किसी को भी मोहित कर सकती है।

पुष्कर: इतिहास और आध्यात्मिकता

पुष्कर का उल्लेख प्राचीन हिंदू ग्रंथों में मिलता है और इसे भगवान ब्रह्मा की तपस्थली माना जाता है। यह भारत का एकमात्र स्थान है, जहाँ भगवान ब्रह्मा का भव्य मंदिर स्थित है। मान्यता है कि जब भगवान ब्रह्मा ने यहाँ यज्ञ किया था, तब उनके कमंडल से गिरी जलधाराओं से यह पवित्र पुष्कर झील बनी। इस झील के चारों ओर स्थित 52 घाटों का अपना अलग-अलग महत्व है। प्रत्येक घाट से जुड़ी कहानियाँ, यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं के मन में आस्था की भावना को और गहरा कर देती हैं।

यात्रा का आरंभ: शांति की खोज

मेरी यात्रा की शुरुआत जयपुर से हुई, जहाँ से पुष्कर लगभग 150 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सड़क मार्ग से यात्रा करते हुए मुझे राजस्थान की खूबसूरत पहाड़ियाँ, रेगिस्तानी मिट्टी और छोटे-छोटे गाँव देखने को मिले। जब मैं पुष्कर पहुँची, तो सबसे पहले वहाँ के शांत वातावरण ने मेरा मन मोह लिया।

शहर में प्रवेश करते ही पारंपरिक राजस्थानी संस्कृति की झलक मिली। संकरी गलियाँ, छोटे-छोटे हस्तशिल्प की दुकानें, और हर ओर गूँजते मंत्रोच्चार से माहौल पूरी तरह आध्यात्मिक लग रहा था। पुष्कर सरोवर के पास पहुँचते ही मन में एक अद्भुत शांति का अनुभव हुआ।

पुष्कर के घाट: प्रत्येक घाट की अपनी मान्यता

पुष्कर झील के चारों ओर कई घाट स्थित हैं, जिनमें प्रत्येक का अपना ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व है। मैंने इनमें से कुछ प्रमुख घाटों के दर्शन किए:

- **ब्रह्मा घाट:** मान्यता है कि स्वयं भगवान ब्रह्मा ने यहाँ यज्ञ किया था, इसलिए यह घाट अति पवित्र माना जाता है।
- **गौ घाट:** इस घाट पर आकर आत्मशांति और मुक्ति की प्राप्ति होती है। कहते हैं कि यहाँ पर महात्मा गांधी की अस्थियों का विसर्जन किया गया था।
- **वराह घाट:** यहाँ भगवान विष्णु के वराह अवतार की पूजा की जाती है। सूर्यास्त के समय यह घाट अत्यंत सुंदर दिखता है।
- **सावित्री घाट:** इसे देवी सावित्री का आशीर्वाद प्राप्त है और यहाँ आकर हर भक्त को आत्मिक सुख मिलता है।
- **बद्री घाट:** इसे छोटा बद्रीनाथ भी कहा जाता है और यहाँ स्नान करना शुभ माना जाता है।

इन घाटों पर बैठकर ध्यान लगाना और मंत्रों की गूँज को सुनना, सच में एक अनोखा अनुभव था।

ब्रह्मा मंदिर और अन्य धार्मिक स्थल

पुष्कर आने का मुख्य कारण ब्रह्मा मंदिर के दर्शन करना था। इस मंदिर की स्थापत्य कला अद्भुत है और यह स्थान हिंदू धर्म में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

दर्शन के दौरान वहाँ आने वाले भक्तों की श्रद्धा और भक्ति देखकर मन अभिभूत हो गया।

इसके अलावा, मैं सावित्री माता मंदिर भी गई, जो पहाड़ी पर स्थित है। वहाँ पहुँचने के लिए रोपवे का उपयोग किया जाता है। ऊपर से पूरे पुष्कर का विहंगम दृश्य देखने को मिला, जो बेहद मनमोहक था।

पुष्कर का सांस्कृतिक आकर्षण

पुष्कर मेला: भारत का सबसे प्रसिद्ध पशु मेला

हर साल कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर यहाँ प्रसिद्ध पुष्कर मेला आयोजित किया जाता है, जिसे दुनिया का सबसे बड़ा ऊँट मेला भी कहा जाता है। इस मेले में पर्यटक पारंपरिक राजस्थानी संस्कृति, लोक नृत्य, संगीत और हस्तशिल्प का आनंद लेते हैं।

राजस्थानी कला और हस्तशिल्प

पुष्कर की संकरी गलियों में घूमते हुए रंग-बिरंगे बाजारों की झलक मिलती है। यहाँ राजस्थानी पारंपरिक कपड़े, गहने, चप्पले, पेंटिंग्स और अन्य हस्तशिल्प की चीजें मिलती हैं।

योग और ध्यान का केंद्र

पुष्कर में कई योग और ध्यान केंद्र भी हैं, जहाँ देश-विदेश से लोग आकर ध्यान, आयुर्वेद और आध्यात्मिक साधना का अभ्यास करते हैं।

पुष्कर में शांति और आध्यात्मिकता का अनुभव

इस यात्रा के दौरान मुझे एहसास हुआ कि पुष्कर केवल एक धार्मिक स्थल ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक शांति पाने का स्थान भी हैं। यहाँ के शांत वातावरण, मंत्रों की ध्वनि, घाटों की पवित्रता और स्थानीय लोगों की सादगी ने मेरे हृदय को छू लिया।

संध्या आरती के समय पुष्कर झील के घाटों पर बैठकर मंत्रों की गूँज और जलते दीपों का दृश्य सच में अविस्मरणीय था। वहाँ बैठकर मन एक अजीब सुकून और शांति का अनुभव कर रहा था, मानो सारी चिंताएँ समाप्त हो गई हों।

पुष्कर की यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे यादगार यात्राओं में से एक रही। इस छोटे से शहर ने मुझे आत्मिक शांति, आध्यात्मिकता और भारतीय संस्कृति की समृद्ध विरासत का अनुभव कराया। यहाँ आकर मुझे एहसास हुआ कि इस भागदौड़ भरी जिंदगी में कभी-कभी हमें ऐसे स्थानों की यात्रा अवश्य करनी चाहिए, जहाँ हमें शांति और आध्यात्मिक सुकून मिल सके।

अगर आप भी अपनी आत्मा को शांति देना चाहते हैं और आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करना चाहते हैं, तो एक बार पुष्कर अवश्य जाएँ। यह यात्रा न केवल आपके मन को सुकून देगी,बल्कि आपकी आत्मा को भी एक नई ऊर्जा प्रदान करेगी।

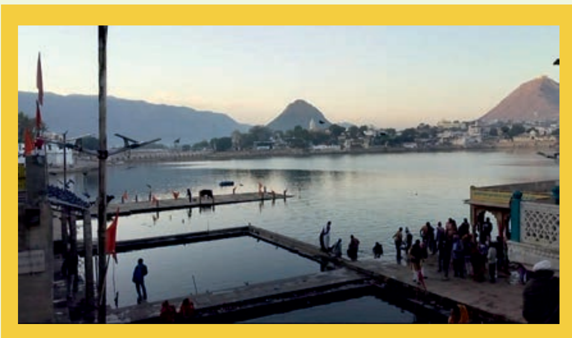

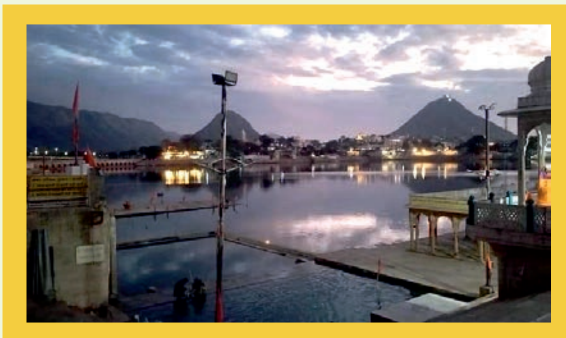

महाकुंभ 2025 यात्रा - पुणे से प्रयागराज

सुधीर कुमार मिश्र

मनीष कुमार गुप्ता

महाकुंभ मेले की यात्रा हमारी आध्यात्मिक यात्राओं की सूची में लंबे समय से सम्मिलित थी। त्रिवेणी संगम - जहाँ गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती नदियाँ मिलती हैं - वहाँ खड़े होने का विचार ही हमारे भीतर अटूट श्रद्धा, विश्वास और विस्मय भर देता था। फरवरी 2025 में, जब इस सपने को साकार करने का अवसर आया, तो वायुयान के टिकट की उपलब्धता, उनका मूल्य, रेल के टिकट की उपलब्धता और सड़कों पर दिन-प्रतिदिन बढ़ते यातायात-जाम तथा भीड़ को देखते हुए प्रशासन द्वारा संगम क्षेत्र में आने से पहले ही बाहर रोककर स्नान हेतु घाटों पर भेजने जैसी व्यवस्थाओं ने मन में थोड़ी दुविधा उत्पन्न कर दी थी। किंतु दृढ़ संकल्प और श्रद्धा ने हमें इस स्थिति से बाहर निकालते हुए यह निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया कि जो भी हो, चलते हैं। आखिर तुलसीदास जी ने भी यही कहा है कि -

होइहि सोइ जो राम रचि राखा। को करि तर्क बढ़ावै साखा ॥

जो कुछ राम ने रच रखा है, वही होगा। तर्क करके कौन शाखा (विस्तार) बढ़ावे।

हम दोनों ने पुणे से बस से प्रयागराज के लिए प्रस्थान किया और आगे जो हुआ, वह एक अविस्मरणीय आध्यात्मिक अनुभव बन गया।

पहला दिन: यात्रा की शुरुआत

हमने सुबह 10:30 बजे पुणे से वोल्वो शयनकक्षीय (स्लीपर) बस पकड़ी। बस, स्वच्छ और लंबी यात्रा के लिए अत्यंत आरामदायक थी। हमने अपने साथ हल्का सामान रखा लेकिन उत्तर भारत की सर्दी को ध्यान में रखते हुए पर्याप्त ऊनी वस्त्र भी जरूर साथ में रख लिए।

यात्रा महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश से होकर गुजरी। रास्ते भर बदलते भू-दृश्य - कहीं सूखी जमीन, कहीं खेतों की हरियाली, कहीं नदियाँ, कहीं पहाड़, कहीं घने जंगल और कस्बे - भारत की विविधता और विशालता का एहसास कराते रहे। हम यात्रियों से बातचीत करते, भजन सुनते हुए यात्रा का आनंद लेते रहे। यह इस जीवन की सबसे लंबी दूरी की यात्रा थी, जो बस से एक बार में की गई।

दूसरा दिन: प्रयागराज पहुँचना और पहला अनुभव

लगभग 31 घंटे की यात्रा के बाद शाम 5:00 बजे नैनी पहुँचे। पूरा शहर एक अस्थायी आध्यात्मिक नगरी में परिवर्तित हो चुका था - चारों ओर तंबू, रोशनी और मंत्रों की ध्वनि। श्रद्धालु, साधु, विदेशी यात्री (पर्यटक), परिवार - सब आस्था में लीन नजर आए।

भीड़ भरी गलियों से 3-4 किलोमीटर पैदल चलकर हम एक मित्र के घर पहुंचे, जिसने हमारे ठहरने की व्यवस्था की थी। वहीं पर हम लोग तरोताजा होकर जलपान आदि किया और हम दोनों बाइक से त्रिवेणी संगम की ओर चल पड़े। मार्ग में हमने सोमेश्वर महादेव मंदिर के दर्शन के लिए विश्राम किया। सोमेश्वर महादेव मंदिर हमारा पहला आध्यात्मिक पड़ाव था। यह एक शांत मोहल्ले में स्थित छोटा लेकिन बहुत प्राचीन और मान्यता रखने वाला मंदिर है, जो भगवान शिव को समर्पित है। यहाँ का शिवलिंग बहुत प्राचीन है, और मंदिर को सिद्ध पीठ माना जाता है - जहाँ सच्चे मन से मांगी गई मन्नतें पूरी होती हैं।

इसके पश्चात हम लोग त्रिवेणी संगम पर जाने वाले सभी रास्तों पर विचार विमर्श के साथ ही प्रशासन द्वारा रोके गए और चालू रास्तों की जानकारी लेकर त्रिवेणी संगम पर जाने के लिए पांटून पुल के माध्यम से झूंसी होते हुए

जाने का निर्णय किया। इसी के अनुरूप बाइक से हम लोग पांटून पुल संख्या 29 तक गए और अपने मित्र को सहयोग के लिए धन्यवाद देकर विदा किया, क्योंकि इसके आगे यातायात के साधन प्रतिबंधित थे। फिर हम पैदल चलते हुए अस्थायी घाटों पर बनाए गए पांटून पुल से नदी को पार करते हुए झूंसी पहुँचे। झूंसी से गंगा नदी को पार करने के लिए 15-20 पांटून पुल बनाए गए थे, जो गंगा नदी के विभिन्न घाटों पर स्नान के लिए जाते थे, किन्तु हमारा लक्ष्य तो त्रिवेणी संगम पहुँचना था। हम लोग व्यवस्था में लगे हुए पुलिस के सहयोग से दूसरे पांटून पुल से होते हुए त्रिवेणी संगम पहुँच गए।

त्रिवेणी संगम पहुँचकर अद्भुत आनंद की अनुभूति हुई, ऐसा लगा जैसे वर्षों से संजोए हुए सभी मनोरथ पूर्ण हो गए । यहाँ का दृश्य अवर्णनीय था - नदियाँ हजारों दीपों की रोशनी में चमक रही थीं, और चारों ओर भक्ति गीतों की ध्वनि गूँज रही थी। विशाल एलईडी स्क्रीन पर पौराणिक कथाएँ दर्शाई जा रही थीं।

गंगा, यमुना और सरस्वती का यह संगम स्थल विश्व का सबसे पवित्र स्थान माना जाता है। मेले की भव्य व्यवस्था देखकर हम दंग रह गए - स्वच्छ शौचालय, चिकित्सालय-तंबू, बहुभाषी संकेत-पट्ट और सशक्त सुरक्षा व्यवस्था।

हम विभिन्न अखाड़ों की ओर बढ़े, जहाँ विभिन्न संप्रदायों के साधु/संत अपने रंग-बिरंगे पंडालों में निवास कर रहे थे। कहीं वेद मंत्रोच्चार हो रहे थे, कहीं प्रवचन, और कहीं ध्यान में लीन साधु। चारों ओर भक्ति का वातावरण अद्भुत था।

रात 10 बजे के करीब हम एक पुलिस चौकी के पास बैठ गए और वहाँ के कर्मठ पुलिसकर्मियों से संवाद किया। उन्होंने 20 घंटे की ड्यूटी और मेले के संचालन की चुनौतियों की बातें साझा की। उनकी निष्ठा, संयम और सेवा-भाव प्रेरणास्पद थे।

उस रात्रि हमने विश्राम नहीं किया – हम चंद्रप्रकाश से आलोकित गलियों में चलते रहे, इस दिव्य ऊर्जा को आत्मसात करते हुए।

तीसरा दिन: पवित्र स्नान और मंदिर दर्शन

प्रातः 4:15 बजे शाही स्नान के लिए हम पुनः संगम पहुँचे। संगम का जल बर्फ जैसा ठंडा था, लेकिन जैसे ही हमने डुबकी लगाई, ऐसा लगा मानो समस्त कष्ट मिट गए हों, एक अद्भुत, अलौकिक, अविस्मरणीय आनंद की अनुभूति हो रही थी। यह क्षण पूर्ण आत्मसमर्पण का प्रतीक था। पुण्य स्नान के बाद, हमने त्रिवेणी संगम का पवित्र जल भी दो पात्रों (डिब्बों) में भरा, ताकि हमारे परिचितजन जो पुणे से प्रयागराज नहीं आ पा रहे थे, वे भी महाकुंभ का लाभ उठा सकें।

इसके पश्चात हमने पास ही स्थित बड़े हनुमानजी के मंदिर में दर्शन किए। यहाँ भगवान श्री हनुमानजी की शयन मुद्रा में मूर्ति है - जो अत्यंत दुर्लभ है। यह मंदिर धरातल से नीचे स्थित है और गंगा की बाढ़ में प्रायः जलमग्न हो जाता है, जिसे भक्तगण माँ गंगा का आशीर्वाद मानते हैं।

हमने सुबह 5:15 बजे मंगल आरती में भाग लिया। शंख, घंटे और भजनों की सामूहिक ध्वनि ने हृदय और मन को भीतर तक छू लिया।

वापसी की राह थोड़ी थकाऊ लग रही थी। हम लगभग 3-4 किलोमीटर पैदल चले। एक ठेले पर गरम चाय और मठरी ली, फिर एक ई-रिक्शा से एक मित्र के घर के पास, मेडिकल कॉलेज चौराहे तक पहुँचे। दोस्त के घर पहुँचकर चाय-नाश्ता किया। हमने थोड़ी देर विश्राम के साथ ही दिल्ली चुनाव के नतीजे देखने का आनंद लिया। दिल्ली विधानसभा चुनाव परिणाम देखे - भाजपा ने जीत दर्ज की। और यह दिन आध्यात्मिक होने के साथ-साथ राजनीतिक रूप से भी अविस्मरणीय बन गया।

इसके बाद दोपहर में खाना खाया और दोपहर 2:30 बजे हमने वापसी की तैयारी की, लेकिन प्रयागराज की भीड़ से निकलना कठिन था। दो दोपहिया (टू-व्हीलर) से नैनी बस स्टैंड पहुँचने में दो घंटे लगे - हर ओर यातायात, बैरिकेडिंग और पदयात्री थे। हमारी बस संध्या 7:00 बजे प्रस्थान करने वाली थी, परंतु यात्रियों की देरी से 7:30 बजे शुरू हुई। भीड़ और जाम के कारण पहले तीन घंटे में हमारी बस मुश्किल से 30-50 किलोमीटर ही चल पाई।

चौथा दिन: पुणे की ओर वापसी

हम इतने थके हुए थे कि पिछली रात 7:30 बजे ही सो गए और प्रातः 10:00 बजे उठे। बस दो बार रुकी, परंतु

हमें ज्ञात ही नहीं हुआ। दोपहर 1:00 बजे, सादा भोजन (रोटी, दाल फ्राई, और मिक्स वेज) लेकिन स्वादिष्ट भोजन किया और चाय पी। फिर पुनः थोड़ी और नींद ली। शाम को चाय ली और रात्रि में छत्रपति संभाजीनगर में खाना खाया और चाय पी।

पाँचवां दिन: पुणे वापसी

सुबह 4:00 बजे हम पुणे पहुँचे। ठंडी सुबह थी और नगर निद्रा में लीन था। तन अवश्य थका था, परंतु मन शांत, हल्का और आनंदित था। महाकुंभ ने हमें भीतर से बदल दिया था। एक नई स्पष्टता, शांति और परमात्मा से जुड़ाव महसूस हो रहा था।

अंतिम विचार

महाकुंभ मेला 2025 सिर्फ एक यात्रा नहीं, अपितु एक आध्यात्मिक जागरण था। पवित्र संगम में डुबकी, देवालयों के दर्शन, हजारों श्रद्धालुओं की संगति, साधुओं और कर्मयोगी पुलिसकर्मियों से संवाद - हर क्षण अर्थपूर्ण था।

हम केवल चित्र और स्मृतिचिह्न नहीं, अपितु अंतर्मन की शांति और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से सघन जुड़ाव लेकर लौटे हैं। इस यात्रा ने यह साक्षात्कार कराया कि भारत की आध्यात्मिक आत्मा आज भी जीवंत और सशक्त है - और हम उसका भाग बनकर कृतार्थ हैं।

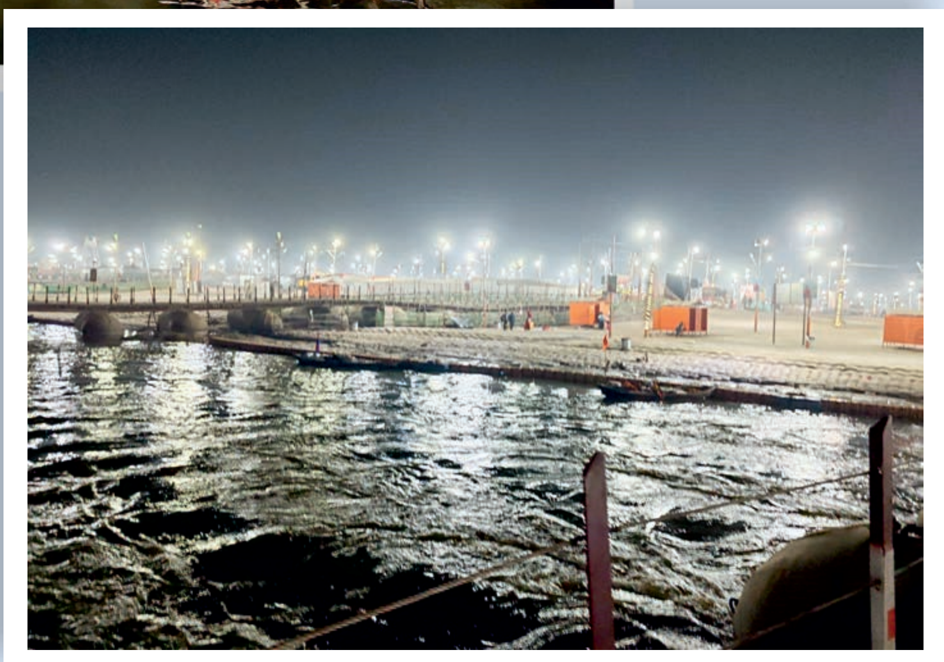

कविता

ग़ज़ल

राजेश कुमार त्रिपाठी

धूप साये से डरी बैठी हैं, इस कलयुग में
एक जुगनु की ज़रूरत है, उजाले के लिए

सिर्फ़ रोटी की सियासत से, भला क्या होगा
भूख लगनी भी ज़रूरी हैं, निवाले के लिए

बात फूलों की चली है तो, चमन से कह दो
चंद काँटे भी ज़रूरी हैं, यूँ छाले के लिए

सर झुकाने का सलीक़ा नहीं आया लेकिन
हाज़िरी मन की रही मेरी, शिवाले के लिए

सर्द रातों में कहीं, बर्फ की चादर ओढ़े
उसका अहसास ही काफ़ी है, दुशाले के लिए

हर्फ़ दर हर्फ़, ग़ज़ल ढूँढ रही है पैकर
दर्द रिसना भी ज़रूरी है, रिसाले के लिए

बुज़दिली तारी है, कुछ यूँ भी ज़माने में यहाँ
साथ आयेगा न कोई भी, जियाले के लिए

राज़ उठते हैं कदम रोज़, ठहर जाते हैं
क्या ज़रूरी है सफ़र, पाँवों में छाले के लिए

अनुक्रमणिका

अब और नही सहना है

अक्षय फराकटे

अखबार का वह एक कोना,
आजकल मन को बहुत सताता है ।
हर दिन बढ़ती स्त्री अत्याचार की कहानी,
एक और नई कहानी बनकर बताता है।

सवाल तो हजारों उठते हैं मन में ,
कि यह कर, वे कौनसा पुरुषार्थ जताते हैं ?
परस्त्री माता समान समझने की शिक्षा पाने वाले,
उसी पर नजर डालने से नहीं कतराते हैं।

निकलती है निषेध की रैलियाँ,
जगह-जगह निदर्शन चलते हैं ।
संसद में बैठे वह जनसेवक,
सिर्फ एक दूसरे पे उंगली उठाते हैं ।

भूमि ये वीरांगनाओं की,
इसे कभी नहीं भूलना है।
हर नारी को आगे बढ़कर,
अब खुद के लिए लड़ना है।

खूब लड़ी थीं रानी लक्ष्मीबाई,
अपनी झाँसी बचाने के लिए।
पत्थर भी न रोक सके सावित्री को,
स्त्री-शिक्षा की नींव रखने के लिए।

नारी - तू बन दुर्गा,
इन महिषासुरों का वध करने,
तू बन झांसी की रानी,
अपने अस्तित्व की रक्षा करने ।

तू उठा ले तलवार अपने आत्म-सम्मान
और आत्मरक्षा की,
क्योंकि अत्याचार का यह श्राप,
अब और नहीं सहना है ।

अनुक्रमणिका

कर्मयोग

अस्मिता गारगोटे

कर्म का एक कमरा है दफ्तर में,
जहाँ मैं रोज जाती हूँ...उम्मीदों का थैला नहीं
...बस खुद को साथ ले जाती हूँ।

वहाँ एक कुर्सी है जो मुझे पहचानती है,
पर कभी बुलाती नहीं ।
कुछ लोग भी हैं वहाँ जो मुस्कुराते हैं,
पर आँखें कुछ और कहती हैं।

जो तारीफों से चाय मीठी करते हैं,
और फिर चुपचाप किसी और की शक्कर बढ़ा देते हैं।
दफ्तर में सब आते हैं अपने-अपने रथ पर,
कोई जी-हुजूरी के घोड़े पर,
कोई जज्बातों के पहियों पर।

कहीं गॉसिपिंग की होड़ है मची,
तो कहीं जलन की मीठी परछाई।
मैं चुप हूँ...शायद थोड़ी देर के लिए गूंगी भी,
पर अंदर बहुत कुछ बोलता है कर्मयोग की जुबान में..
“कर्म कर, मन ना बाँध,फल आए तो धन्यवाद,
ना आए तो भी प्रसाद”
ना मुझे प्रमोशन की बेड़ियाँ चाहिए,
ना ईमेल की तालियाँ।

बस इतना चाहती हूँ कि
काम करते वक्त...मन काँपे नहीं ।
कर्म ही मेरा कद है, और चुप्पी मेरी गरिमा।
खुशामदी की भीड़ में, मैं अकेली नहीं
बस अलग चलती हूँ।जो चला गया, वो साथ कभी था
ही नहीं,जो रुका है, वो मोह नहीं समझ है कहीं।

कभी-कभी कोई कहता है “तू जुड़ती क्यों नहीं,
घुलती क्यों नहीं?" मैं बस मुस्कुरा देती हूँ ...
“मैं जुड़ी हूँ...पर बिना गाँठ के"
जो बंध जाते हैं वो अक्सर फैसलों में उलझ जाते हैं।

मैं जुड़ी हूँ...पर बंधी नहीं ।
भीतर से पूरी, बाहर से सहज।
तो हाँ, मैं भी हूँ इस सर्कस में, पर जोकर नहीं,
हर चाल जानती हूँ, पर चालबाज नहीं ।

कर्म मेरा रंग, मोह मेरा भ्रम,
शांति ही मेरी जीत बाकी सब धुंध।
कोई नाम ले, ना ले—कोई पद दे, ना दे

मैं रोज उस कमरे में कर्मयोगी बनकर जाती हूँ
और शाम को, आत्म-सम्मान के साथ घर लौट आती हूँ।

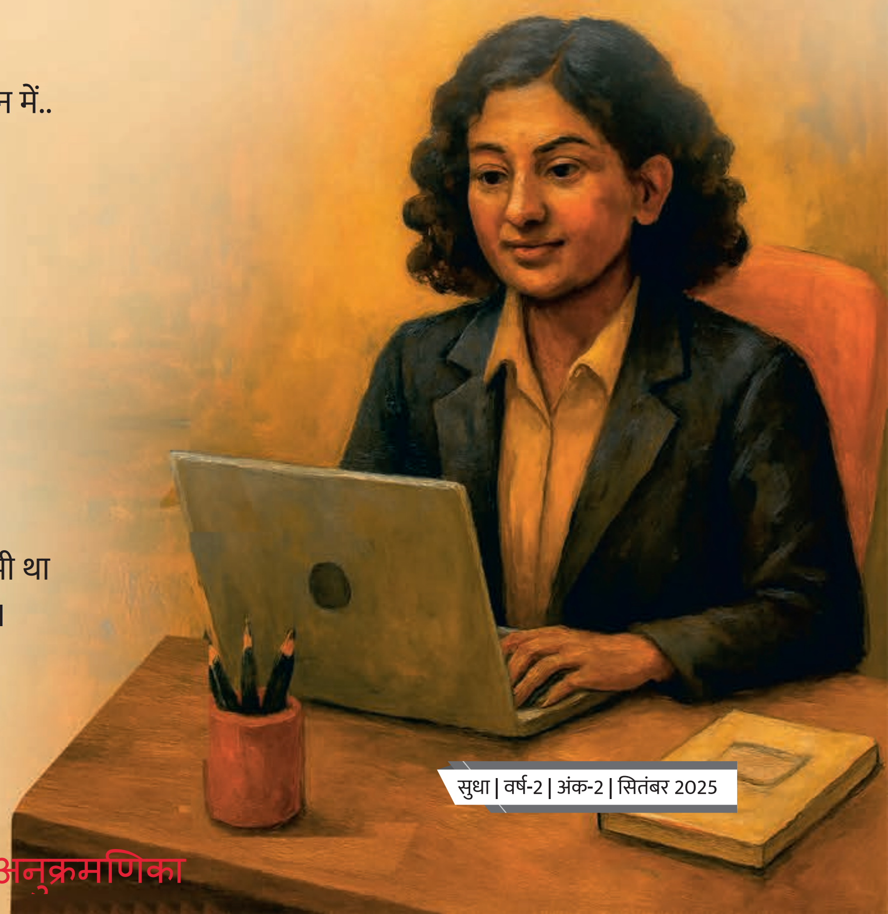

छत्रपती संभाजी - स्वराज का छावा

नितीन कराळे

छावा था शेर का, कभी झुक न सका,
वीरों का योद्धा, कभी हार न सका।
धर्म के लिए मर मिटने वाला धर्मवीर था,
हर जुल्म से टकराने वाला, एक कर्मवीर था।

गर्व था उस मिट्टी को, जहाँ तूने लिया जन्म,
कभी मुगलों के आगे झुका नहीं,
सभी जानते यह मर्म।
मराठों का तू अजेय राजा, था सब पर भारी,
हर जंग लड़ी तूने, युद्धभूमि में तेरी तलवार भारी।

कवि कलश वो महाकवि, शब्दों का था वीर,
जिसकी लेखनी ने रचा, सच का क्रांतिकारी धीर।
यारी निभाई ऐसी, कभी साथ न छोड़ा,
दोस्ती का धर्म निभाया, विश्वास कभी न तोड़ा।

औरंगजेब, मुगलों का था बादशाह सही,
पर तेरे सामने उसकी चाल भी ढही।

डर था राजा छत्रपति का,
खाई थी कसम, "ताज ना पहनूँगा,
जब तक न हो संभा का सिर कलम"।

छत्रपती शिवा का पूत तू,
माँ जिजाऊ का लाडला तू,
दूध पिया धाराऊ का तू,
मौत सामने– फिर भी ना झुका तू।
अपनों ने किया बगावत, धोखा दिया उन्हीं हाथों ने,
धड़ के हुए टुकड़े, पर रुका नहीं – धर्म और स्वराज
के खातिर दी जान तूने।

जंग जंग में स्वराज का नाम, इतिहास की शान बना,
ना उम्मीद टूटी, ना इरादा झुका
– हिंदवी स्वराज बना।
ना डर से डोला, ना लालच में बिका,
तलवार और धर्म दोनों में समता दिखा।

इतिहास के हर पन्ने में तुम्हारा ही नाम,
हर शब्द से ही तुम्हारा प्रण और काम।
तप, त्याग, तेज और तपस्वी वीरता की मिसाल,
तू न था बस योद्धा – तू था स्वराज का ढाल।

जिंदा है तू आज भी, हर हिंदुस्तानी की शान में,
हर हर महादेव, जय धर्मवीर! जय संभाजी!
– गूंजे हर वीर की जान में।

हिंदवी स्वराज का दीपक तू,
जो अब भी दिव्यमान है,
हर हिंदुस्तानी हृदय में
आज भी तू प्रकाशमान है।

अनुक्रमणिका

बचपन

नीलिमा साहू

कितना प्यारा, कितना सच्चा होता था ये मन,
जब था बचपन
बेबाक मुस्काते थे, इठलाते थे,
छोटी-छोटी बातों में रूठ जाते थे
एक टॉफी और गुब्बारे से मान जाते थे,
कितना सरल, कितना निश्छल-सा था,
ये मन, जब था बचपन।

न फिक्र थी ज़माने की ना किसी के रूठ जाने की,
जो बात चुभे दिल को,
बेझिझक सबको जतला देते थे ।
रो-रोकर दिल का हाल बयां कर देते थे,
कुछ ऐसा सा था बचपन।

कितना प्यारा, कितना सच्चा होता था ये मन,
जब था बचपन।

तितली रंग बिरंगी,
वो पतंग कितनी प्यारी लगती थी,
वो दोस्तों संग गुड्डे-गुड़ियों, खो-खो का खेल,
और बर्फ-पानी की धमा-चौकड़ी में शाम ढलती थी,
सारे खेल ये अजब से लगते थे,
वो छुटपन के दिन ही गजब से लगते थे।
कितना प्यारा कितना सच्चा होता था ये मन,
जब था बचपन।
पर जैसे-जैसे उम्र की दहलीज़ पर
कदम हमने ये बढ़ाए,
ज़िंदगी जीने के नए पैतरे अपनाए।
वो सरलता, वो मासूमियत धीरे-धीरे कहीं खो गई,
बेबपरवाह ज़िंदगी जीने की कला हमसे दूर हो गई।

अब समझ आया, वो प्यारा दौर क्यों खास था,
जहाँ खुशी और उल्लास का एहसास था
जो वक़्त के साथ खो गया,
और दूर हमसे हो गया
हमारा प्यारा और सरल बचपन।

अब समझ आया, वो प्यारा दौर क्यों खास था,
जहाँ खुशी और उल्लास का एहसास था
वक़्त के साथ जो खो गया,
हमारा बचपन दूर हमसे हो गया
कितना प्यारा, कितना सच्चा होता था ये मन,
जब था बचपन।

चित्र सौजन्य: श्री विवेकानंद पाटील

अनुक्रमणिका

मेरा प्यारा भारत

जयश्री पोकळे

उत्तर में है धवल हिमालय,
दक्षिण में सागर धोता चरण,
गंगा जमुना गले की माला,
पश्चिम में है कच्छ का रण,
जग के सभी देशों में सुंदर, ऐसा प्यारा मेरा भारत।

यहाँ हर कदम पर धरती रंग बदलती,
और बोली में हैं इन्द्रधनुष-सी रंगोली,
आकाश ने तानी है नीली चादर,
जग के सभी देशों में सुंदर, ऐसा प्यारा मेरा भारत।

सर्दी गर्मी और बरसात,
आते पंक्ति में एक के बाद,
देते इस धरा को फूल फलाहार,
खेतों को ढकती फसल की पीली चूनर,
जग के सभी देशों में सुंदर, ऐसा प्यारा मेरा भारत।

धरती का सुंदर स्वर्ग कश्मीर,
देवों की भूमि केरल यहाँ,
मरू का काठिन्य भी लगे सहज,
ऐसी पावन है यह धरा,
हँसते मुस्काते लोग यहाँ के जैसे हैं गुलाल अबीर,
जग के सभी देशों में सुंदर, ऐसा प्यारा मेरा भारत।

हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई रहते यहाँ जैसे हैं भाई,
दहशी जितना ही प्रयत्न करें पर हम में कभी न दरार आई,
मोर, पपीहा, बुलबुल, कोयल करते खुशी से झूम गुँजारव,
जग के सभी देशों में सुंदर, ऐसा प्यारा मेरा भारत।

हमने जग को सिखलाया कि मानव सारे हैं समान,
संस्कृति हमारी यह भी सिखलाती
कि मेहमानों को मानो भगवान,
और बढ़ाई गणित की कीमत
बहुत ही महत्तम शून्य देकर,
जग के सभी देशों में सुंदर, ऐसा प्यारा मेरा भारत।

प्रियतम हमें है मातृभूमि, हम सभी इसे करते हैं वंदन,
सौभाग्य मेरा, करूँ मातृभाषा में,
प्यारे राष्ट्र का मैं गुण वर्णन,
मेरा देश है विविधता की एकता का सागर,
जग के सभी देशों में सुंदर, ऐसा प्यारा मेरा भारत।

सच और झूठ

अमित गुप्ता

दो अनोखे बाल सखा हैं,
नाम हैं जिनके सच और झूठ,
कहने को तो... हैं वो मीत,
पर स्वभाव से हैं बिल्कुल विपरीत

एक समय था जब हर ओर,
सच का ही बोलबाला था,
झूठ देख - देखकर जलता था,
क्योंकि उसका मन तो काला था

सच का बढ़ता प्रभुत्व,
झूठ को रास ना आया,
धीमे जहर की भांति धीरे-धीरे,
उसने अपना प्रभाव बढ़ाया

समय उड़ता गया, फिजा बदलने लगी,
सच मंद पड़ता गया, झूठ की पैठ बढ़ने लगी

पहले.. झूठ ने कान भरे, फिर फैलाया घातक पंजा,
मार दुलत्ती झूठ ने सच को, सबके मन में कसा
शिकंजा अब झूठ प्रभाव जमा चुका है,
इस कदर अपना जाल बिछा चुका है,
कि अपने ही आँसुओं में सिसककर,
टूट चुका है सच.. अंदर-ही-अंदर

मन की गहराइयों में उतरकर,
झाँककर देखो तो जरा अंदर,
मिल जाएगा सच, बैठा हुआ,
डरा सहमा... किसी कोने में दुबककर
जो कभी सच दिखाता था आईना,
वो भी आज झूठ के हाथों बिक गया है,
इसीलिए सच सामने होते हुए भी इंसान,
झूठ को ही सच मानने को मजबूर हो गया है

समय बदल गया है, माहौल बदल गया है,
भौतिकता के चक्रव्यूह में फंसकर,
आज इंसान बदल गया है

हद से गुजर जाए जब, अति का भी अंत होता है,
झूठ कितने भी रंग बदल ले, मगर
ताज तो अंत में.. सच के सर ही होता है ॥

अनुक्रमणिका

कथा कहानी

अनुक्रमणिका

जब दोस्त बना बॉस

योगेश सिंह

पुणे में स्थित एक राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र में दो युवा वैज्ञानिक – अनिल और सुनील, एक ही टीम में काम करते थे। दोनों ने साथ में कई वर्षों तक जटिल तकनीकी प्रणालियों पर काम किया था। रात-रातभर जागकर कोडिंग करना, डेटा एनालिसिस करना, और बॉस के फीडबैक के बाद फिर से मॉडल बनाना

– ये सब उन्होंने एक साथ किया था।

उनकी दोस्ती सिर्फ ऑफिस या काम तक सीमित नहीं थी, बल्कि छुट्टियों में एक-दूसरे के घर जाना, चाय के दौरान गपशप लगाना, और छोटी-छोटी बातों पर हँसना – यह सब उनकी दिनचर्या का हिस्सा था। लेकिन एक दिन, उनके जीवन ने मोड़ ले लिया।

संस्थान को एक नई टीम के लिए एक प्रोजेक्ट लीड की नियुक्ति करनी थी, जो एक उन्नत आपदा पूर्वानुमान प्रणाली पर काम करने वाली थी। अनिल और सुनील दोनों ने आवेदन किया। दोनों के पास गहरी तकनीकी जानकारी, प्रोजेक्ट मैनेजमेंट का अनुभव था, लेकिन अनिल के स्पष्ट दृष्टिकोण को देखते हुए समीक्षा समिति ने उसे चुना।

अनिल को पदोन्नति मिल गई। वह अब प्रोजेक्ट मैनेजर था, लेकिन उस दिन के बाद, सब कुछ बदल गया। सुनील ने उसे बधाई दी, लेकिन उसकी आवाज में एक अजीब-सी खामोशी थी। धीरे-धीरे, वह अनिल से बात कम करने लगा। चाय के समय भी वह दूसरों के साथ बैठने लगा। कभी जो सुनील को, अनिल के बिना ऑफिस में अधूरापन महसूस होता था, अब वह उससे दूरी बना रहा था।

अनिल समझ गया कि सुनील को लग रहा है कि दोस्ती अब बराबरी की नहीं रही। अब वह उसका "बॉस" था, लेकिन अनिल ने अपना व्यवहार नहीं बदला। वह आज भी सुनील को "भाई" कहकर ही बुलाता था। उसके काम की सराहना करता था। बैठकों में उसके विचारों को महत्व देता था।

एक दिन, एक बड़ी तकनीकी समस्या आई। मॉडल में डेटा फ्लो का गलत विश्लेषण हो रहा था। पूरी टीम अटक गई थी। अनिल ने सुनील को बुलाया।

"भाई, तुम्हारे पास कुछ ना कुछ आइडिया होगा? तुमने तो इस मॉडल के शुरुआती दिनों में सबसे ज्यादा काम किया था।"

सुनील ने थोड़ी देर चुप रहकर कहा, "तुम्हारे बिना ये टीम अधूरी लगती थी। लेकिन तुमने मुझे नहीं बदला लेकिन मैंने तुम्हारे साथ खुद को बदल लिया। माफ करना।"
अनिल ने मुस्कुराते हुए कहा, "तुम्हारी दोस्ती मेरे लिए किसी पद से ज्यादा महत्वपूर्ण है। पदोन्नति एक उपलब्धि है, लेकिन दोस्ती एक विरासत है। काम की दुनिया में तकनीक बदलती है, लेकिन इंसानियत और साझेदारी की भावना हमेशा बनी रहती है। चलो, फिर से साथ मिलकर इस समस्या को हल करते हैं।"
उस दिन, उन्होंने सिर्फ मॉडल नहीं ठीक किया, बल्कि एक टूटे रिश्ते को भी जोड़ा|

बड़प्पन

डॉ. धनंजय झालटे

राघव अपने कार्यालय से निकला और कार में बैठते वक्त उसे याद आया कि उसकी पत्नी ने उसे सुबह ऑफिस निकलते समय आवाज दी थी कि, “अजी सुनो! ऑफिस से आते समय कुछ सब्जियाँ लेते आना, और हाँ, ये ध्यान रखना कि आजकल हर जगह महंगाई बढ़ गई है, तो थोड़ा मोलभाव करके लाना।”

'महंगाई' यह शब्द उसकी कान में लगातार गूंज रहा था। तभी वह सोचने लगा कि सच में आजकल बहुत महंगाई बढ़ गई है, अच्छी सैलरी होने के बावजूद भी, सभी खर्च माह के अंत में खाते को खाली करने लगते हैं और मैं थोड़ा बहुत ही बचत कर पाता हूँ। ये सभी बातें उसके दिमाग में चल रही थीं। तभी उसने सोचा कि घर जाने के लिए शॉर्टकट रास्ते से चला जाए। कई बार वह माह के अंतिम सप्ताह में यही करता है। सोचता है कि कुछ बचत कर लूँ।

ऑफिस से निकलकर तीसरी मोड़ पर उसने अपनी कार मोड़ ली। संकीर्ण रास्तों से निकलकर वह जब एक मुख्य रास्ते पर मुड़ ही रहा था, तभी उसका ध्यान रास्ते के किनारे एक व्यक्ति पर गया, जो अपनी साइकिल पर लदी प्याज की बोरी, जिसको उसने पुरानी ट्यूब से बांधकर साइकिल पर लादकर लाया था, उसे वह खोलकर नीचे उतार ही रहा था तभी राघव को कार के अंदर से ही उसके पास कुछ सब्जियाँ भी दिखाई दीं, जो उसने पहले से ही टाट की थैली को मोड़कर उसपर रखी हुई थी। राघव ने पास में ही कार पार्क की और उतरकर उस सब्जी वाले के पास जा पहुँचा।

“दादा, बताओ, भिंडी कैसे दिए?” राघव ने स्मार्ट-की से कार लॉक करते हुए पूछा।

पैंतालीस-पचास साल का वह व्यक्ति कड़ी धूप और हवा से झुलसे चेहरे का पसीना रुमाल से पोंछते हुए बोला, “बीस रुपये का पाव और तीस का आधा किलो।” उसने भिंडी के साथ रखे हुए प्याज और हरे धनिया के दाम भी उसी क्रम में बता दिए।

राघव पाव, आधा, एक किलो का भाव जोड़ने लगा, तभी उसके कान में उसकी पत्नी के द्वारा बोला गया 'महंगाई-महंगाई' शब्द गूंजने लगा। “क्या दादा, बहुत महंगा दे रहे हो, थोड़ा सस्ता लगा देना।” राघव बोला।

“अपने खेत का है साहब, ताजा,” सब्जीवाले ने प्याज की बोरी से लगी डोरी खोलते हुए कहा।

“अरे, खुद के खेत का है, तो थोड़ा कम में ही देना चाहिए, बाकी दुकानदार लोग खरीदकर बेचते हैं, तो उनका महंगा बेचना जायज है, लेकिन ये तो तुम्हारे खेत का ही तो है, इसलिए तुम थोड़ा सस्ता लगाना।” राघव ने अपनी पत्नी के द्वारा बताई गई मोलभाव वाली बात को ध्यान में रखकर बोल दिया।

“साहब, अपने खेत का हुआ तो क्या हुआ? खेती में खर्चे भी तो लगते हैं और हाँ, साहब, हम फसल और सब्जियों की कई दिनों-महीनों तक देखभाल करते हुए उन्हें बढ़ाते रहते हैं, दिन-रात मेहनत करते हैं, खेती में एक फसल के बाद दूसरी फसल बोने की तैयारी के लिए इतने काम रहते हैं, जिसके कारण हम अपना पूरा माल थोक-बाजार में बेच देते हैं और दुकानदार लोग वहीं से खरीदकर फुटकर में बेचकर एक दिन में हमसे कई गुना कमाते हैं।” सब्जीवाले ने राघव का अगला सवाल आने से पहले ही “भाव नहीं मिलता है, तो तुम लोग खुद क्यों नहीं अपना माल बेचते हो?” इस कई लोगों द्वारा पूछे गए सवाल का स्पष्टीकरण भी राघव के सामने रख दिया।

“अरे, तुम अपने माल के मालिक हो। अपनी मर्जी से बेचो और मुनाफा ही मुनाफा कमाओ,” राघव ने कहा।

“कैसा मुनाफा साहब! 'मुनाफा' यह शब्द तो किसान के लिए बना ही नहीं है। किसान ना मुनाफा देखता है ना घाटा जोड़ता है। वह तो केवल खेती में किए गए खर्च को वापस

प्राप्त करने के लिए प्रयास करता है।" उसने बोतल से अपनी हथेली पर थोड़ा पानी लेकर हरे धनिये पर छिड़कते हुए कहा।

"ऐसे कैसे? बीच में तो प्याज बहुत महंगे बिक रहे थे। अच्छा खासा भाव मिला ही होगा?" राघव ने टीवी पर सुनी न्यूज को लेकर अपनी बात रखी।

"हाँ साहब! सही में, दाम तो बढ़े थे। पर क्या करें? इस बार कितनी मेहनत के बाद प्याज की फसल अच्छी हुई थी। कटाई के समय प्याज भाव भी खा रहा था। लगा था इस बार कुछ तो मुनाफा मिलेगा, लेकिन सब पानी में चला गया। बाजार में जाने से एक दिन पहले ही बेमौसम बादल साहब आ धमके। उस रात खूब बारिश हुई और पूरा प्याज भीग गया। दो दिन बाद प्याज मार्केट में ले गया, तब तक कीमतें कई सीढ़ियाँ नीचे उतर चुकी थीं। क्या करता उसी दाम में बेच आया। मुनाफे का तो छोड़ दीजिए, साहब। खर्चे का भी जोड़ पूरा हो जाए तो भी हम उसी को मुनाफा मान लेते हैं।", सब्जीवाला बोरी से नीचे उँड़ेले हुए प्याज के ढेर में से खराब प्याज अलग करते हुए अपनी बेबसी, दुःख राघव के सामने रख देता है।

राघव को उसकी इतनी बातें सुनकर वास्तविकता समझ में आ गई। उसको यह बात ध्यान में आ गई कि किसी दुकान, मार्केट में जाने के बाद कोई भी दुकानदार घाटे में जाकर कोई वस्तु नहीं बेचता। वह केवल मुनाफे को जोड़ता रहता है, लेकिन यहाँ एक किसान कई बार मुनाफा तो दूर की बात है, वह केवल अपनी लागत को पुनः प्राप्त करने के लिए संघर्ष करता दिखाई देता है और खर्च निकल जाए तो उसी में संतुष्ट हो जाता है कि मेरा घाटा तो नहीं हुआ।

"दादा एक किलो प्याज, आधा किलो भिंडी दे देना।" राघव ने मोलभाव किए बिना कहा।

सब्जीवाले दादा ने तराजू में एक के बाद एक प्याज और भिंडी का वजन किया। राघव ने देखा कि सब्जीवाले दादा सब्जी तोल रहा थे, तब सब्जी रखा पल्ला जमीन की तरफ अधिक झुका हुआ था। उसने मन ही मन में सोचा कि आजकल दुकान में जाओ तो एक ग्राम भी ज्यादा कोई नहीं देता है, लेकिन ज्यादा केवल किसान ही दे सकता है, यही किसान का बड़प्पन है। राघव ने सब्जी थैली में रखी और चलने लगा, तभी किसान ने अपनी साइकिल में लटकाई थैली में रखे मक्के के दो भुट्टे निकले और राघव की थैली में डाल दिए।

"अरे वाह! दादा, भुट्टे, मेरी बेटी को बहुत पसंद है, इसके कितने हुए?" राघव ने पूछा।

"रहने दो साहब, मेरा दोस्त का लड़का यहाँ पास में ही रहता है, उसके लिए लाए थे। उसी में से आपको दिए और आप मेरे पहले ग्राहक थे इसलिए आपको दिए, आप अपने बच्चों के लिए ले जाना।"

राघव कार में बैठकर घर की ओर बढ़ने लगा, तब उसके मन में 'महंगाई' शब्द की बजाए "साहब खर्चे का भी जोड़ पूरा हो जाए तो भी हम उसी को मुनाफा मान लेते हैं" यही शब्द गूंज रहे थे। यह "कितना बड़प्पन" है। तभी उसे अपने दोस्तों के साथ कुछ साल पहले एक सप्ताहांत में देखी किसान की व्यथा का यथार्थ चित्रण करने वाली 'गोष्ट छोटी डोंगराएवढी' फिल्म याद आ गई, उस समय फिल्म को देखकर उसकी आँखे नम भी हुई थीं। तब उसके मित्र ने उससे कहा था कि "रोजमर्रा की कई समस्याओं से जूझते किसान की व्यथा को समझना हो, तो 'गाभ्रीचा पाऊस', 'पांगिरा' जैसी फिल्में जरुर देखना।" आज तो उसने प्रत्यक्ष उस व्यथा को खुद एक किसान से सुना था। राघव उसी समय निश्चय कर लेता है कि अब आगे से कहीं भी किसान सब्जी बेचता दिखे, तो सब्जी उसी से खरीदेगा और सब्जी लेते समय उससे मोलभाव भी नहीं करेगा, क्योंकि उसने सोचा कि इतना तो 'बड़प्पन' हम दिखा ही सकते हैं।

सफलता के पीछे छुपी जिंदगी की पहेली

राहुल बोराडे

रात का अंधेरा गहराने लगा था। और आकाश अपने कमरे की खिड़की के पास बैठा आसमान की ओर देख रहा था। वो सितारे जो कभी उसे खूबसूरत और चमकदार लगते थे, आज आकाश के दिल में एक अजीब-सी उलझन पैदा कर रहे थे। उसकी जिंदगी में सब कुछ होते हुए भी कुछ कमी-सी थी। क्या यही जिंदगी है? क्या यही वो पहेली है जिसका जवाब वह तलाशने की कोशिश कर रहा था?

आकाश एक बेहद सफल व्यक्ति था। वो एक बड़ी कंपनी का मुख्य कार्यकारी अधिकारी था, साथ ही उसके पास आलीशान घर, महंगी गाड़ियाँ, और हर वो चीज थी जो किसी भी सामान्य व्यक्ति की ख्वाहिश होती है। लेकिन उसके दिल के किसी कोने में एक खालीपन था, जो उसे हर रोज खाए जा रहा था।

आकाश को अक्सर अपना बचपन याद आता था। वो दिन, जब जिंदगी बहुत सरल और मासूम थी। वो अपने दोस्तों के साथ बिना किसी फिक्र के खेलता। उसके पास बड़े सपने नहीं थे, बस छोटी-छोटी खुशियाँ थीं।

उसे याद था कि कैसे वो अपने बाबा के साथ गाँव के मेले में जाता था, खिलौने खरीदता था, और माँ के हाथों का बना खाना खाकर खुश हो जाता था। वो दिन इतने सरल थे, जैसे सीधी राहों से भरे हुए। लेकिन जैसे-जैसे आकाश बड़ा होता गया, जिंदगी की ये सरलता कहीं खो गई। उसने अपने व्यवसायिक जीवन, अपने सपनों, और अपनी महत्वाकांक्षाओं के पीछे भागना शुरू किया।

आकाश ने मेहनत की, संघर्ष किया, और अंततः सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता चला गया। उसका नाम हर अखबार और टीवी चैनल पर आने लगा। लोग उसकी तारीफें करते नहीं थकते थे। उसे सब कुछ मिल गया, लेकिन फिर भी वो अंदर से खुद को अकेला महसूस करता था।

हर दिन उसे यही सवाल सताता, 'क्या यही असली जिंदगी है? जो इतनी जटिल और उलझनों से भरी हुई है।'

एक दिन अचानक आकाश को अपने बचपन का दोस्त रोहित याद आया। रोहित, जो उसके साथ स्कूल में पढ़ता था, लेकिन बाद में वो किसी छोटे शहर में जाकर बस गया था। आकाश ने वर्षों से उससे कोई संपर्क नहीं किया था। आज अचानक उसे लगा कि उसे रोहित से बात करनी चाहिए।

आकाश ने तुरंत उसका नंबर ढूँढा और उसे फोन किया। दूसरी तरफ से एक खुशमिजाज आवाज आई, "अरे, आकाश! इतने सालों बाद कैसे याद किया?"

आकाश ने हल्की मुस्कान के साथ जवाब दिया, "बस यूँ ही, अचानक तुम्हारी याद आ गई। तुम कैसे हो?"

रोहित ने हँसते हुए कहा, "मैं अच्छा हूँ, यार। छोटे से गाँव में बस गया हूँ, खेती करता हूँ। जिंदगी मस्त कट रही है। तुम सुनाओ, कैसे हो?"

आकाश को सुनकर थोड़ी हैरानी हुई। वो सोचने लगा कि कैसे रोहित एक छोटे से गाँव में, बिना किसी बड़ी सफलता के, खुश रह सकता है? उसने पूछा, "तुम्हें कभी

नहीं लगा कि तुम्हें कुछ बड़ा करना चाहिए था? जैसे मैंने किया?"

रोहित ने कुछ देर चुप रहकर कहा, "आकाश, जिंदगी की सबसे बड़ी सीख यही है कि बड़ी चीजों के पीछे भागते-भागते हम छोटी खुशियों को भूल जाते हैं। तुमने दुनिया जीत ली, लेकिन क्या खुद को भी जीत पाए?"

रोहित की बातों ने आकाश के दिल को छू लिया। उसे लगा जैसे कोई उसकी उलझन का जवाब दे रहा हो। आकाश ने कहा, "तुम सही कह रहे हो, रोहित। मेरे पास सब कुछ है, लेकिन फिर भी मुझे लगता है कि मैंने कुछ खो दिया है।"

रोहित ने हँसते हुए कहा, "जिंदगी एक पहेली है, आकाश। जितना तुम इसे सुलझाने की कोशिश करोगे, उतना ही उलझते जाओगे। इस पहेली का असली जवाब सिर्फ यही है कि इसे खुलकर जिओ, बिना किसी शर्त के। खुशी, दुख, सफलता, असफलता - ये सब सिर्फ रास्ते के हिस्से हैं। जिंदगी का असली मजा तो इसमें है कि तुम इसे कैसे जीते हो।"

आकाश के मन में एक नई रोशनी जली। उसने महसूस किया कि रोहित सही कह रहा था। जिंदगी की असली पहेली का मतलब इसका सुलझना नहीं, बल्कि इसे जिया जाना है।

उसकी कमरे में एक पुराना गाना बज रहा था। पृष्ठभूमि में चल रहे उस गाने की मधुर धुन ने आकाश को शांति और खुशी का एहसास कराया। उसने सोचा कि जिंदगी को बहुत सीधा और खुला जीने की जरूरत है, बिना किसी उलझन के।

उसके दिल में कुछ पंक्तियाँ गूँजने लगीं, जैसे कोई गीत उसे जिंदगी का असली अर्थ समझा रहा हो

"जिंदगी हँसने, गाने के लिए है पल दो पल,

इसे खोना नहीं, खोके रोना नहीं,

प्यारे तू गम ना कर............"

आकाश ने अब ठान लिया था कि वो अपनी जिंदगी के हर पल को पूरी तरह जिएगा, न कि उसे उलझनों में खोने देगा।

अनुक्रमणिका

कलाकारी

अनुक्रमणिका

किशोर पाटील

राष्ट्रीय एकता: माध्यम- डिजिटल

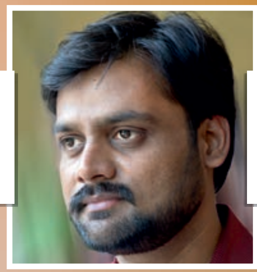

विवेकानंद पाटील

चार्ली चैप्लिन: माध्यम-चारकोल

प्रशांत खैरनार

वाराणसी घाट-माध्यम- जलरंग

निरंजन पाटगांवकर

शंकर महादेवन: माध्यम-एम - सील

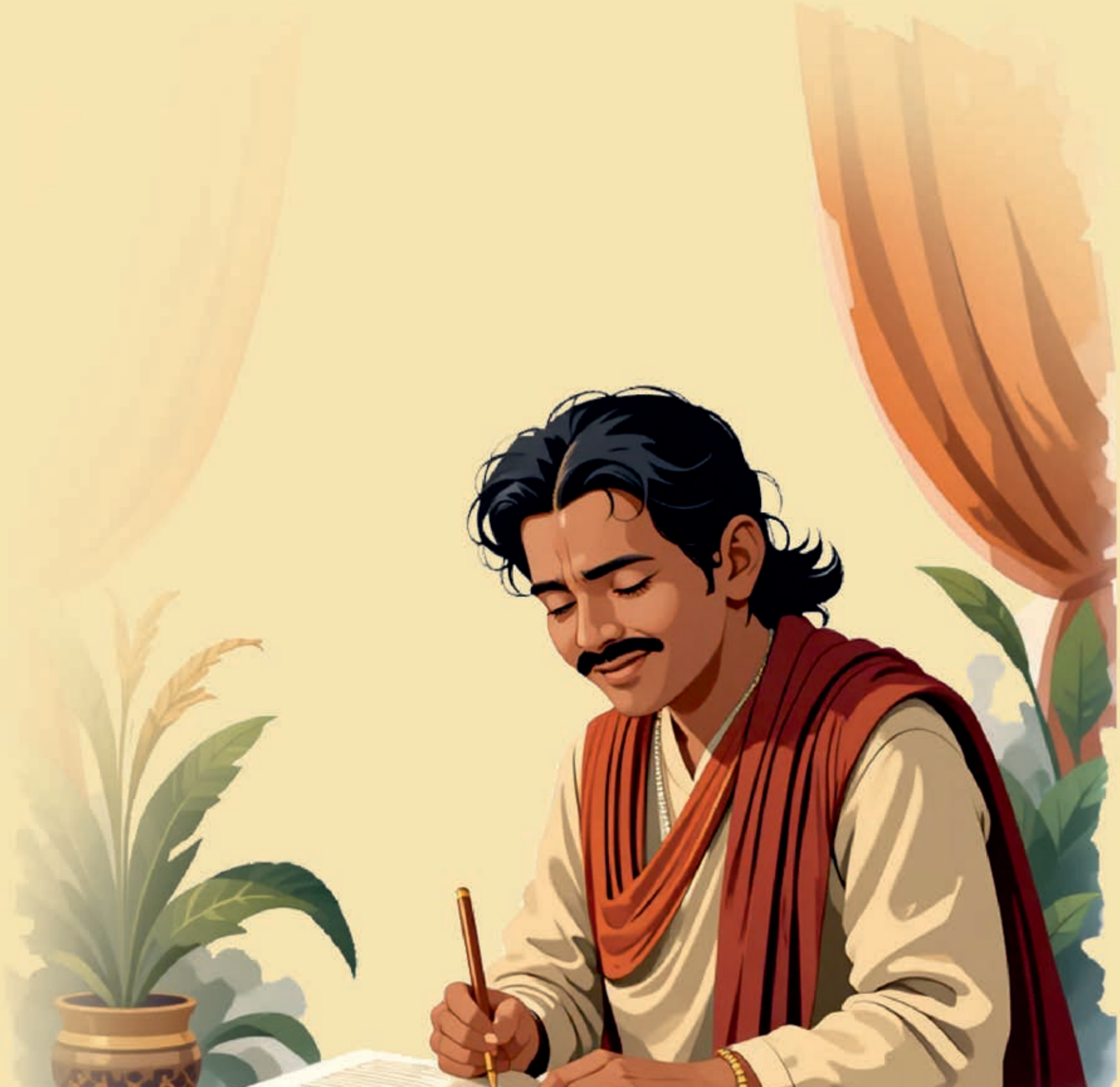

गैर-तकनीकी लेख संकलन

अनुक्रमणिका

मानव – क्या संसाधन मात्र है !

राजेश कुमार त्रिपाठी

आज के समाज में कोई भी संस्था मूलत: तीन संसाधनों पर केंद्रित है - मानव, पूंजी एवं यंत्र। यंत्र और पूंजी हम विभिन्न स्रोतों से प्राप्त कर सकते हैं और कोई भी संस्था इनके महत्त्व को अनदेखा नहीं कर सकती, किन्तु इन दोनों के अलावा जो तीसरा संसाधन है जिसे हम मानव संसाधन कहते हैं, वस्तुत: वही परिवर्तन का मुख्य आधार है। दरअसल, मानव को संसाधन कहना ही अपने आप में मानव के महत्त्व को घटाने की बात है। मानव सिर्फ एक संख्या नहीं है, बल्कि भावनाओं से भरा, विचारों से परिपूर्ण और जटिलताओं से परिपूर्ण एक ऐसा स्तम्भ है, जिसको समझना इतना आसान नहीं होता और शायद, यही कारण है कि पूरे विश्व में कोई भी संस्था बिना मानव संसाधन के नहीं चलती है और मानव संसाधन ही वह बिन्दु है जो संस्थाओं में बदलाव लाती है। वह किसी संस्था को ऊँचाइयों पर ला सकती है और वहीं पर अगर सही ढंग से इसका प्रबंधन नहीं किया गया तो वह संस्था के लिए एक बोझ भी बन सकती है।

मैंने अपने जीवन काल में, मानव संसाधन क्षेत्र में पिछले अठाईस वर्षों में भाँति-भाँति के प्रयोग देखे हैं। एक संस्था की कार्य-संस्कृति ही उसको एक अलग पहचान देती है। और शायद यही वजह है कि अधिकतर संस्थाएँ इनके विकास पर बल देती है। इनकी प्रगति को ध्यान में रखते हुए, तरह-तरह के नियम और कानून बनाती हैं। जो संस्था मानव को एक संख्यामात्र की तौर पर आँकती है, वो संस्था भावहीन होती है और बहुत लंबे अवधि तक आगे नहीं बढ़ पाती है। इसीलिए हमें मानव संसाधन को एक संसाधन मात्र ना समझकर उसको एक परिपूर्ण व्यक्तित्व के तौर पर लेकर चलना चाहिए, उसकी भावनाओं का आदर करना चाहिए, उसके विचारों का विश्लेषण करना चाहिए और उसके स्वाभिमान को जिंदा करना चाहिए। तभी हम उसके भीतर का संसाधन निकाल सकते हैं, जो बाकी अन्य संसाधनों से कहीं उत्तम होगा। यह प्रक्रिया एक निरंतर प्रक्रिया होती है जो स्थान, समय और संस्कृति के अनुसार बदलती रहती है और एक नई ऊर्जा का विकास करती है, एक ऐसी ऊर्जा जो दूसरी किसी भी अन्य ऊर्जा से बेहतर होती है।

इन्ही विचारों के साथ, मैं सी-डैक के तमाम कर्मचारी एवं नेतृत्व का आभार व्यक्त करता हूँ और यह उम्मीद रखता हूँ कि हम सभी मिलकर अपने संस्था को नई ऊर्जा देंगे, एक नई पहचान देंगे और अंत में इस शेर से मैं अपनी बात को समाप्त करता हूँ।

डॉ. राहत इंदौरी ने कहा है -

"ये कैंचियाँ हमें उड़ने से खाक रोकेंगी,

के हम परों से नहीं हौसलों से उड़ते हैं..."

अनुक्रमणिका

कारपूलिंग : एक सतत परिवहन समाधान

देवाशीष ताम्रकार

जनसंख्या वृद्धि और बढ़ती जनसंख्या घनत्व, विशेष रूप से महानगरीय क्षेत्रों में, सड़कों पर वाहनों की संख्या में प्रति वर्ष कुछ प्रतिशत वृद्धि हो रही है। यह सड़कों पर यातायात की गंभीर समस्या पैदा कर रही हैं और ईंधन की बढ़ती कीमतें स्थिति को बदतर बनाती जा रही हैं। वाहनों के उपयोग से प्रदूषण होता है, जिसका हमारे पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

कारपूलिंग को आमतौर पर कार- शेयरिंग, राइड-शेयरिंग और लिफ्ट शेयरिंग के रूप में भी जाना जाता है। कार, यात्रा का साझाकरण है ताकि एक से अधिक व्यक्ति एक ही कार में यात्रा कर सकें।

कारपूलिंग का अर्थ है एक समान गंतव्य तक जाने वाले अलग-अलग लोग, एक ही वाहन का उपयोग कर गंतव्य तक पहुँचे। यह एक लोकप्रिय और प्रभावी तरीका है, जो यातायात के जाम, पर्यावरणीय चिंताओं और आर्थिक दबावों जैसी विभिन्न परिवहन समस्याओं का समाधान करता है। कारपूलिंग द्वारा वाहन की क्षमता का अधिकतम उपयोग करने से सड़क पर गाड़ियों की संख्या कम होती है और यात्रियों के बीच सामाजिक संबंध भी बनते हैं।

पर्यावरणीय प्रभाव

कारपूलिंग का सबसे बड़ा लाभ पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव है। जब सड़क पर कम गाड़ियाँ होती हैं, तो ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन घटता है, जिससे वायु गुणवत्ता में सुधार होता है और कार्बन फुटप्रिंट कम होता है। पर्यावरण संरक्षण एजेंसी ईपीए के अनुसार, परिवहन प्रदूषण का एक बड़ा स्रोत है। सवारी साझा करके, व्यक्ति सामूहिक रूप से ईंधन की खपत को कम कर सकते हैं और शहरी अवसंरचना पर बोझ कम कर सकते हैं।

इसके अलावा, कारपूलिंग यातायात की भीड़ को कम करता है, जो बर्बाद ईंधन का एक प्रमुख स्रोत है। सड़क पर कम कारों का मतलब है कम सुस्ती और सुचारू यातायात प्रवाह, कम ईंधन की खपत में यात्रा करना। यह न केवल ऊर्जा संसाधनों का संरक्षण करता है बल्कि शहरी क्षेत्रों में बेहतर वायु गुणवत्ता में भी योगदान देता है, जिससे समुदायों के समग्र स्वास्थ्य में वृद्धि होती है।

आर्थिक लाभ

कारपूलिंग से आर्थिक दृष्टिकोण से भी कई लाभ होते हैं। यात्री ईंधन, टोल और पार्किंग फीस जैसे खर्चों पर बचत कर सकते हैं। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए फायदेमंद है जो लंबे सफर करते हैं या शहरी क्षेत्रों में काम करते हैं, जहाँ पार्किंग महंगी और सीमित होती है या रोजाना एक ही स्थान पर आना जाना होता है। इसके अलावा, कारपूलिंग के कारण यातायात जाम कम होने से यातायात में लगने वाला समय की भी बचत होती है, जिससे सार्वजनिक धन की बचत होती है।

सामाजिक लाभ

कारपूलिंग का एक और महत्वपूर्ण लाभ यह है कि इससे सामाजिक पारस्परिक जुड़ाव को भी बढ़ावा मिलता है। एक ही गाड़ी में यात्रा करने से लोग नए लोगों से मिलते हैं, दोस्ती करते हैं और समुदाय की भावना को बढ़ाते हैं। यह सामाजिक पहलू यात्रा को अधिक आनंददायक बना सकता है और इससे विशेष रूप से

इसके अलावा, कारपूलिंग उन व्यक्तियों के लिए परिवहन विकल्प प्रदान करके समावेशिता को बढ़ावा दे सकती है, जिनके पास वाहन नहीं होता है या जिनकी सार्वजनिक परिवहन तक पहुँच नहीं होती। राइड-शेयरिंग की सुविधा प्रदान करके, समुदाय यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि अधिक लोग सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक गतिविधियों में भाग ले सकें।

चुनौतियाँ और समाधान

हालाँकि कारपूलिंग के कई लाभ हैं, लेकिन इसके सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं, जैसे कि समय-निर्धारण और विश्वसनीय साझेदारों को खोजना। लेकिन आधुनिक तकनीक ने विभिन्न एप्प और प्लेटफार्मों के माध्यम से संभावित कारपूलिंग पार्टनर्स के साथ जुड़ना आसान बना दिया है। ये उपकरण यात्रा के मार्ग और समय के आधार पर लोगों को मिलाने में मदद कर सकते हैं।

नियोक्ता और स्थानीय सरकारों को कारपूलिंग के लिए लोगों को प्रोत्साहित करना चाहिए। सामुदायिक जागरूकता अभियानों के माध्यम से भी कारपूलिंग के लाभों को उजागर किया जा सकता है।

निष्कर्ष

संक्षेप में, कारपूलिंग एक स्थायी और व्यावहारिक समाधान है, जो आज की कई परिवहन समस्याओं का समाधान करता है। यह पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने, लागत बचाने और सामाजिक संबंधों को बढ़ावा देने में मदद करता है। कारपूलिंग को प्रोत्साहित कर समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

जैविक खेती : भारतीय खेती का भविष्य

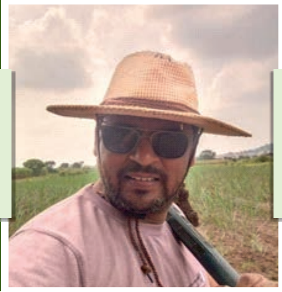

तानाजी नारायण झेंडे

ना रासायनिक जहर, ना बुरी हवा

सिर्फ ताजगी और सेहत का मजा।

जैसा कि हम सभी जानते हैं, भारत एक विशाल देश है और यहाँ की लगभग 60 से 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर हैं। हालाँकि, कुछ दशकों पहले की पारंपरिक कृषि और आज की आधुनिक कृषि पद्धतियों के बीच बहुत बड़ा अंतर आ गया है।

आजकल "जैविक खेती" एक चर्चा का विषय बन गई है। हर जगह इस शब्द को लेकर उत्सुकता देखी जा रही है। आखिर जैविक खेती होती क्या है? इसके क्या फायदे हैं? और हमें इसकी ओर क्यों बढ़ना चाहिए? ये सवाल आज की जागरूक और शिक्षित नई पीढ़ी को सोचने पर मजबूर कर रहे हैं। यह पीढ़ी नए प्रयोग करने को तैयार है और प्रकृति के अनुकूल जीवन जीना चाहती है।

आज की भागदौड़ और प्रतिस्पर्धा की दुनिया में किसान अधिक उत्पादन के लिए रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग कर रहे हैं। लेकिन इसके दुष्परिणाम — चाहे वो पर्यावरणीय हों, मानव स्वास्थ्य से जुड़े हों या मिट्टी की उर्वरता से — नजरअंदाज किए जा रहे हैं।

जैविक खेती: क्या है और क्यों जरूरी है?

आज के समय में, 'जैविक खेती' शब्द हर जगह बहुत लोकप्रिय हो रहा है, जैविक खेती क्या है? इसके फायदे क्या हैं? और, इसे क्यों करनी हैं? जैविक खेती ने पूरी दुनिया को सोचने पर विवश कर दिया है। नई पीढ़ी पढ़ी-लिखी, जागरूक है और नए-नए प्रयोग करना चाहती है। तो चलिए, आज जानते हैं, एक बहुत ही पुरानी खेती करने की तकनीक, जो प्राकृतिक चीजों से उत्पन्न होती है। आज के समय में सभी जगह होड़ लगी हुई है कि कैसे हम रासायनिक उर्वरक का उपयोग करके ज्यादा-से-ज्यादा उत्पाद ले सकें। मगर इसके जो परिणाम हमारे स्वास्थ्य, प्रकृति और पर्यावरण पर होते हैं, इस पर किसी का ध्यान नहीं है।

आज के समय में किसानों के बीच जैविक खेती तेजी से लोकप्रिय हो रही है। यह खेती की एक ऐसी विधि है, जिसमें रासायनिक और कीटनाशकों का इस्तेमाल ना करके रसायन मुक्त प्राकृतिक तरीकों से फसल उगाई जाती है। इससे ना केवल मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है, बल्कि यह स्वास्थ्य के लिए भी अधिक लाभदायक होती है।

1. जैविक खेती

जैविक खेती ऐसी कृषि पद्धति है, जिसमें रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकों की बजाय प्राकृतिक साधनों का उपयोग किया जाता है। इसमें गोबर की खाद, वर्मी कम्पोस्ट, हरी खाद और जैविक कीटनाशकों से फसल उगाई जाती है। इससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है और पर्यावरण भी प्रदूषित नहीं होता।

अनुक्रमणिका

1. रासायनिक खेती

वर्तमान में विश्व की लगभग 98.5% कृषि भूमि पर रासायनिक खेती की जा रही है। भारत में पिछले 75 वर्षों (1950-2025) में रासायनिक खेती ने खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि जरूर की, लेकिन अत्यधिक और असंतुलित उपयोग ने पर्यावरण की गुणवत्ता को गंभीर रूप से नुकसान पहुँचाया है। इससे जैव विविधता में कमी, मिट्टी की उर्वरता में गिरावट, खाद्य गुणवत्ता में हानि, और मानव या पशु स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़े हैं।

3. जैविक खेती के लाभ

➢जैविक खादों के प्रयोग से मिट्टी, चारा और खाद्यान्न की गुणवत्ता में वृद्धि होती है।

➢मिट्टी की जलधारण क्षमता बेहतर होती है, जिससे सिंचाई की आवश्यकता कम हो जाती है।

➢उत्पादन की लागत 80% तक कम हो सकती है।

➢निर्यात योग्य उत्पादों की मांग अधिक होती है, जिससे किसानों को बेहतर मूल्य मिलता है।

➢मानव स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित और पौष्टिक खाद्य सामग्री उपलब्ध होती है।

➢धीरे-धीरे जैविक खेती की ओर रुख करने से फसलों की उत्पादकता और गुणवत्ता में भी सुधार होता है।

➢ यह भूमि के जल स्तर को बनाए रखने में सहायक है और निर्यात के लिए जैविक उत्पादों की बिक्री भी तेजी से होती है।

4. तुलना: जैविक बनाम रासायनिक खेती

विवरण	जैविक खेती	रासायनिक खेती
मृदा स्वास्थ्य	बढ़ता है	घटता है
पर्यावरणीय स्थिरता	हाँ	पर्यावरण के लिए हानिकारक
मानव स्वास्थ्य	लाभदायक	नकारात्मक प्रभाव
उत्पादन क्षमता	धीरे-धीरे बढ़ती है	वर्ष दर वर्ष घटती है
जैव विविधता संरक्षण	होता है	नहीं होता
खाद्य की गुणवत्ता	अधिक पौष्टिक और सुरक्षित	विषैले तत्व हो सकते हैं
लागत	किफायती	महंगी
निर्यात क्षमता	अधिक, अंतरराष्ट्रीय मांग भी अधिक	कई देशों में प्रतिबंधित
स्वास्थ्य संबंधी बीमारियाँ	कोई गुंजाइश नहीं	कैंसर जैसी बीमारी की संभावना

5.प्रेरणास्पद उदाहरण : सिक्किम – भारत का पहला जैविक राज्य

वर्ष 2016 में सिक्किम सरकार ने एक ऐतिहासिक कदम उठाया। राज्य में रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकों के प्रयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया। इस निर्णय ने सिक्किम को भारत का पहला पूर्णतः जैविक राज्य बना दिया। इस नीति के चलते ना केवल फसलें सुरक्षित तरीके से उगाई जाने लगीं, बल्कि वहाँ के लोगों का स्वास्थ्य भी बेहतर हुआ और राज्य में जैविक पर्यटन को भी बढ़ावा मिला।

निष्कर्ष :

आज के समय में हमें ना केवल अपने स्वास्थ्य और पर्यावरण की चिंता करनी है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी सुरक्षित और स्वच्छ वातावरण देना हमारा दायित्व है। जैविक खेती एक ऐसी दिशा है, जो इस लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी मदद कर सकती है।

"एक कदम जैविक खेती की ओर — समृद्धता, स्वास्थ और स्वावलंबिता की ओर!"

हमारे जीवन में खेलों का महत्व

अरुण वर्मा

खेल हर व्यक्ति के जीवन के लिए बहुत जरूरी है, जो उसे स्वस्थ और शारीरिक रूप से मजबूत बनाए रखता है। जीवन के हर पड़ाव में इसका बहुत महत्व है। यह लोगों के व्यक्तित्व को भी निखारता है। नियमित रूप से खेलने से हम मजबूत बनते हैं। शारीरिक गतिविधियों के कारण रक्तचाप भी ठीक रहता है और रक्त वाहिकाएँ साफ रहती हैं। रोजाना की गतिविधियों से शुगर लेवल भी कम होता है और कोलेस्ट्रॉल भी कम होता है, ऐसा मेरा अनुभव है। नियमित रूप से खेलने और अपने खुद के डाइट प्लान का पालन करने से मैंने 15 महीनों में 19.5 किलो वजन कम किया है।

इस वर्ष हमने सी-डैक में खेल महाकुंभ 2025 का आयोजन किया था, जिसमें लगभग 300-400 सदस्यों ने खेलों में हिस्सा लिया था, जो एक अच्छी सदस्यों ने भाग लिया। कैरम, लॉन टेनिस, शतरंज, शॉटपुट, तैराकी, टेबल टेनिस सभी प्रकार के खेल सी-डैक में आयोजित किए गए। खेल महाकुंभ-सी-डैक के बाद हमारी सी-डैक टीम ने एनसीएल द्वारा आयोजित आरपीएल में भाग लिया। कुल 8 टीमों ने सीजन बॉल पर इस टूर्नामेंट में भाग लिया। हमारी टीम ने पहली बार सीजन बॉल टूर्नामेंट में भाग लिया। हमारी सी-डैक टीम चैंपियन की तरह खेली और उसने टूर्नामेंट की सर्वश्रेष्ठ टीम एआरएआई टीम को हराया।

मुझे क्रिकेट और संगीत बहुत पसंद है। हमारे देश में क्रिकेट एक धर्म की तरह है। अगर हम इतिहास में जाएँ, तो हमारा भारतीय क्रिकेट संघ दुनिया में इतना लोकप्रिय नहीं था, लेकिन 1983 में श्री कपिल देव के नेतृत्व में जब हमने विश्व कप के फाइनल में दुनिया की

संख्या थी। खेलों में क्रिकेट हमारे देश में एक बहुत लोकप्रिय खेल है। खेल महाकुंभ सी-डैक में कुल 16 टीमों ने भाग लिया, जिसमें पुरुषों की 12 और महिलाओं की 4 टीमें थीं। सी-डैक क्रिकेट इतिहास में यह एक रिकॉर्ड है। एथलेटिक्स में भी बहुत सारे

सर्वश्रेष्ठ टीम वेस्टइंडीज को हराया तो हमारी टीम लोकप्रिय हो गई और उस समय से हमारी क्रिकेट टीम ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हम सभी को गौरवान्वित किया है।

एक समय था जब हमारा देश हॉकी में चैंपियन था। श्री ध्यानचंद को हॉकी का जादूगर कहा जाता था।

1993 में हमारी क्रिकेट टीम विश्व चैंपियन बनी। उसके बाद से हमारी पीढ़ी क्रिकेट में रुचि दिखा रही है। मैं भी क्रिकेट का बहुत बड़ा प्रशंसक हूँ, लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि हमारी आने वाली पीढ़ी को फुटबॉल, हॉकी और सभी प्रकार के खेलों में रुचि लेनी चाहिए। जो हमारे देश को विश्व स्तर पर और अधिक योगदान देगा। जीत और हार खेल का हिस्सा है, लेकिन हमें हमेशा अपनी टीम का समर्थन करना चाहिए। हमें खो-खो, कबड्डी जैसे खेलों को बढ़ावा देना चाहिए। ये खेल टीम गेम और कम खर्च वाले हैं।

एक और बात जो मैं खुशी से साझा करना चाहता हूँ, वह यह है कि हमारे देश में हम सभी अधिकतम क्रिकेट प्रेमी हैं, जिसका एक उदाहरण ये भी है कि विश्व का सबसे बड़ा क्रिकेट का दिन और रात का स्टेडियम हमारे देश गुजरात में बना है। यहाँ बैठ कर एक साथ 1 लाख 30 हजार दर्शक क्रिकेट का खेल देख सकते हैं, स्टेडियम का नाम नरेंद्र मोदी स्टेडियम है।

अंत में मैं यही कहना चाहता हूँ कि स्वस्थ रहें, खुश रहें, खेलों का आनंद लें और भाग भी लें।

पैसों का प्रवास

नितीन कराळे

भारतीय मुद्रा में समय के साथ विभिन्न सिक्के और नोट चलन में आए और बंद हुए। पैसे का प्रवास 1957 से शुरु हुआ, भारत में दशमलव प्रणाली (Decimal System) अपनाई गई, जिसमें 1 रुपये को 100 पैसे में विभाजित किया गया। इससे पहले 1 रुपये में 16 आने और 1 आने में 4 पैसे होते थे। 1 पैसा का सिक्का भारतीय मुद्रा इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा। "Naya Paisa" नाम से यह सिक्का जारी हुआ। पुराने और नये पैसे में भ्रम ना हो इसलिए "नया" शब्द जोड़ा गया। शुरु में सिक्के ब्रॉन्ज (bronze) या कांस्य धातु से बने होते थे। बाद के वर्षों में एलुमिनियम (silver) और अन्य धातुओं का प्रयोग होने लगा।

1 पैसा: 1 पैसा का सिक्का 1 अप्रैल 1957 में जारी किया गया। उसी समय भारत ने दशमलव प्रणाली अपनाई। 1990 के दशक में यह पैसा धीरे-धीरे बाजार से गायब होने लगा।

वजन: लगभग 1.5 ग्राम आकार: छोटा और चौकोर

डिजाइन: आगे की ओर "भारत", "India" और अशोक स्तंभ तथा पीछे की ओर "1 पैसा", "One Paisa", और वर्ष

2 पैसे: यह सिक्का एल्यूमिनियम या कांस्य जैसी धातुओं से बना था। 2 पैसे का सिक्का 1957 से लेकर लगभग 1970 के दशक तक उपयोग में था।

वजन: कांस्य- ~2.95 ग्राम, एल्यूमिनियम: ~0.75 ग्राम आकार: गोलाकार की तरह

डिजाइन: आगे की ओर "भारत", "India"और अशोक स्तंभ तथा पीछे की ओर " 2 पैसा", "Two Paisa", और वर्ष

5पैसा: 5 पैसा सिक्का 1957 के दशक में जारी किया गया। वर्ष 1957–1964 तक इसे "नया पैसा" कहा जाता था। शुरू में, कांस्य मिश्र धातु, बाद में एल्यूमिनियम से बनता था, ताकि सिक्के हल्के हों। बढ़ती महंगाई के कारण 5 पैसे की क्रय बहुत कम हो गई। 1990 के बाद, इसका चलन धीरे-धीरे बंद कर दिया गया।

वजन: ~1 ग्राम से ~3 ग्राम आकार: लगभग 22–23 मिमी

डिजाइन: सामने की ओर अशोक स्तंभ और "भारत" और "India" लिखा होता था। पीछे की ओर बीच में "5 पैसे" लिखा होता था। नीचे वर्ष अंकित होता था, जैसे 1977। कभी-कभी "नया पैसा" शब्द भी अंकित होता था, खासकर 1957–1964 के बीच।

10 पैसा: 10 पैसा का सिक्का 1957 में जारी किया गया। इसे भी (1957–1964 तक) "नया पैसा" कहा जाता था। 1990 के बाद 10 पैसे का चलन धीरे-धीरे कम होने लगा। 2011 में इसे आधिकारिक रूप से बंद कर दिया गया।

वजन: कांस्य: ~5 ग्राम, एल्यूमिनियम: ~2–3 ग्राम
डिजाइन:कांस्य मिश्र धातु, बाद में एल्यूमिनियम
आकार: शुरुआती में गोल फिर स्कैलप्ड 10 किनारों वाला, लगभग 23-26 मिमी

डिजाइन विवरण: सामने की ओर अशोक स्तंभ "भारत" और "INDIA" पीछे की ओर बीच में " 10 पैसे" नीचे वर्ष, कभी-कभी ऊपर "नया पैसा"

20 पैसा: 1968 में पहली बार भारत सरकार ने 20 पैसे का सिक्का जारी किया। 1968 के दशक के बाद 20 पैसे की वैल्यू लगभग खत्म हो गई। 2011 में सरकार ने इसे आधिकारिक रूप से बंद कर दिया। डिजाइन- कांस्य मिश्र धातु बाद में एल्यूमिनियम

आकार- शुरुआत में गोल फिर षट्कोणीय, लगभग 24-26 मिमी

वजन: कांस्य: ~5 ग्राम, एल्यूमिनियम: ~2–3 ग्राम
डिजाइन विवरण: सामने की ओर अशोक स्तंभ "भारत" और "INDIA", पीछे की ओर बीच में " 20 पैसे" नीचे वर्ष, कभी-कभी ऊपर "नया पैसा"

25 पैसे (चवन्नी): 25 पैसे का सिक्का चवन्नी के रूप में जाना जाता था। 2011 में भारत सरकार ने इसे आधिकारिक रूप से बंद कर दिया।

डायमीटर: लगभग 19–23 मिमीआकार: शुरुआती गोल, कुछ वर्षों में थोड़ा मोटा और भारी था, बाद के सालों में पतला और हल्का डिजाइन: सामने की ओर अशोक स्तंभ "भारत" और "INDIA", पीछे की ओर "25 पैसे" हिंदी और अंग्रेजी में, नीचे वर्ष (जैसे 1985), कुछ सिक्कों में गेहूँ की बालियाँ या फूल जैसी डिजाइनें भी होती थीं।

वजन: ~5 ग्राम, एल्यूमिनियम- ~2.5 ग्राम

50 पैसे (अठन्नी): 50 पैसे का सिक्का अठन्नी के रूप में प्रचलित था। शुरू में, ताम्र-निकेल मिश्रधातु से बना, बाद में, निकेल मिश्रित पीतल से बना, फिर लोहे पर आधारित जंग-रोधी इस्पात से बनाया गया, आखिरी सिक्के हल्के और चमकदार स्टील जैसे दिखते थे।

डायमीटर: लगभग 19-33 मिमी
आकार : शुरुआत में, गोल और मोटा, बाद में: पतला और छोटा गोल सिक्का डायमीटर: ~24-27 मिमी वजन: पुराने सिक्के: ~5-6 ग्राम, नए सिक्के (स्टील वाले): ~3.5 ग्राम कुछ सिक्कों में गेहूँ की बालियाँ या फूल जैसी डिजाइनें भी होती थीं। 30 जून 2011 को भारतीय रिजर्व बैंक ने इसे लीगल टेंडर (वैध मुद्रा) से बाहर कर दिया।

1 रुपया: 1 रुपया का सिक्का 1957 में जारी किया गया। 1 रुपये के सिक्के तो ब्रिटिश इंडिया और उससे पहले भी चलते थे (चांदी के मोटे सिक्के)!

डिजाइन - 1957–1970: ताम्र-निकेल मिश्रधातु, 1980–1990: (निकेल-पीतल), 2000– फेरिटिक स्टेनलेस स्टील और कभी-कभी बाई-मेटल आकार: शुरुआती सिक्के: गोल और भारी

वजन: पुराने सिक्के: ~28 मिमी, ~6-8 ग्राम तक
नए सिक्के: ~22-25 मिमी, ~4.85 ग्राम

1 रुपये का नोट- भारत में पहला 1 रुपये का नोट ब्रिटिश राज के समय 30 नवंबर 1917 को जारी हुआ था। आजादी के बाद, पहला स्वतंत्र भारत का ₹1 का नोट 1949 में आया। 1 रुपये का नोट भारत का

एकमात्र ऐसा नोट है, जिसे भारतीय रिजर्व बैंक नहीं, बल्कि भारत सरकार जारी करती है। इसलिए उस पर रिजर्व बैंक गवर्नर के नहीं, बल्कि वित्त सचिव के हस्ताक्षर होते हैं। रंग: पुराने नोट – नीला या हरा, बाद के संस्करण – बैंगनी, गुलाबी या स्लेटी नीला मूल तत्व: "भारत सरकार" और "Government of India" लिखा होता है। अशोक स्तंभ का चिन्ह, नोट का क्रमांक लिखा होता है दाहिने ओर हस्ताक्षर और नीचे वर्ष 1970–80 वाले 1 रुपये नोटों में जलचिन्ह (Watermark) और गोल आकार में डिजाइन।

1994 में 1 रुपये के नोटों की छपाई बंद कर दी गई। 2015 में, कई सालों बाद 1 रुपये का नया नोट फिर से जारी हुआ।

2 रुपया - 2 रुपये का सिक्का 1980 के दशक में प्रचलित हुआ। इससे पहले 2 रुपये का नोट चलता था। धातु : 1982 में ताम्र-निकेल मिश्र धातु 1990 में निकेल-पीतल, 2006 के बाद दो धातुओं वाले, बीच में स्टील और किनारे पर पीतल की रिंगआकार : शुरुआती डिजाइन: 10-भुजाओं वाला, बाद में: गोल और स्कैलप्ड, अब: गोल, चिकना और हल्का वजन:

पुराने सिक्के: 26-27 मिमी डायमीटर, ~6-7 ग्राम, नए सिक्के: हल्के (~4.5 ग्राम), छोटे (~25 मिमी)

2 रुपये का नोट भारत में 1950 के दशक से चलता था। अंतिम बार 1995 में छपा, इस पर भी वित्त सचिव के हस्ताक्षर होते थे। रिजर्व बैंक नहीं छापता था।

5 रुपया: 5 रुपये का सिक्का 1990 के दशक में जारी किया गया। पुराने जमाने में (1950s–1990s) 5 रुपये का नोट खूब चला।

दौर	आकार	वजन
पुराने	~26-27 मिमी	~9-10 ग्राम
नए	~25 मिमी	~6 ग्राम

भारत में 5 रुपये का पहला नोट 1917 में जारी किया गया था। हरा रंग, अशोक स्तंभ भारत सरकार और रिज़र्व बैंक के हस्ताक्षर महात्मा गांधी की तस्वीर साइज : लगभग 117 मिमी × 63 मिमी

10 रुपया – 10 रुपये का सिक्का 2005 में जारी किया गया। रंग - चांदी जैसा (स्लेटी), व्यास ~27 मिमी, वजन: ~7.7 ग्राम, आकार: गोल, किनारा कुछ खुरदुरा

1930 के दशक में पहली बार 10 रुपये का नोट आया, रंग : नारंगी/ब्राउनिश, आकार: 123 मिमी × 63 मिमी

20 रुपया: - 20 रुपये का नोट 1972 में पहली बार जारी किया गया। तब से लेकर अब तक कई डिजाइन और रंगों में आया।

रंग- संतरी (ऑरेंज), आकार-127 मिमी × 63 मिमी

सामने- महात्मा गांधी, अशोक स्तंभ, आरबीआई गवर्नर के हस्ताक्षर, पीछे एलोरा की गुफाएँ (यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट)

सुरक्षा विशेषताएँ - वॉटरमार्क, रंग बदलने वाली संख्या, सिक्योरिटी थ्रेड, माइक्रो टेक्स्ट

100 रुपये: 100 रुपये का नोट विभिन्न डिजाइनों में उपलब्ध ₹100 का नोट ब्रिटिश राज में भी चलता था (1800 के आखिरी हिस्से में)। स्वतंत्र भारत में ₹100 का

नोट 1950 से नियमित रूप से चलन में है।

रंग - नीला-हरा, नीला-बैंगनी टोन, बैंगनी रंग, अशोक स्तंभ, साधारण सुरक्षा फीचर, ग्रामीण भारत, उद्योग, खेती, महात्मा गांधी की तस्वीर, माइक्रो प्रिंटिंग, रानी की वाव (गुजरात) की तस्वीर

200 रुपये: 200 रुपये का नोट 25 अगस्त 2017 में जारी किया गया।

रंग - चमकीला पीला-केसरिया, आकार - 146 मिमी × 66 मिमी, सामने - महात्मा गांधी, अशोक स्तंभ,

आरबीआई गवर्नर के हस्ताक्षर, पीछे - सांची स्तूप (मध्य प्रदेश), सुरक्षा विशेषताएँ- रंग बदलने वाला इंक, वाटरमार्क, माइक्रो टेक्स्ट, सिक्योरिटी थ्रेड, उभरा हुआ प्रिंट

500 रुपये - 500 रुपये का नोट 2016 में नए डिजाइन के साथ जारी किया गया। 8 नवंबर 2016 में पुराने ₹500 और ₹1000 के नोट अमान्य घोषित 1996- महात्मा गांधी की फोटो, बेहतर सुरक्षा वर्तमान

₹500 का नोट (2016 से अब तक):- रंग - पत्थर जैसा स्लेटी)

2000- बैकग्राउंड में परंपरागत चित्र जैसे "रेड फोर्ट" साइज - 150 मिमी × 66 मिमी, सामने -महात्मा गांधी, अशोक स्तंभ, आरबीआई गवर्नर के हस्ताक्षर, पीछे - लाल किला - झंडा फहरते हुए

अनुक्रमणिका

1000 रुपये - 1000 रुपये का नोट 8 नवंबर 2016 में प्रचलन से हटाया गया।

रंग हल्का गुलाबी/बैंगनी

साइज 177 मिमी × 73 मिमी

सामने महात्मा गांधी, अशोक स्तंभ, (आरबीआई) गवर्नर के हस्ताक्षर

पीछे भारत की आर्थिक गतिविधियों के प्रतीक

सुरक्षा विशेषताएँ सिक्योरिटी थ्रेड, रंग बदलने वाली स्याही, वॉटरमार्क, माइक्रो टेक्स्ट

2000 रुपये - 2000 रुपये का नोट 2016 में जारी किया गया। 2023 में ₹2000 नोट का छपाई बंद, धीरे-धीरे चलन से हटाया जा रहा है।

रंग मैजेंटा (गुलाबी-बैंगनी)

साइज166 मिमी × 66 मिमी

सामने महात्मा गांधी, अशोक स्तंभ, आरबीआई गवर्नर के हस्ताक्षर

पीछे मंगलयान (इसरो का पहला मार्स मिशन)

सुरक्षा विशेषताएँ वाटरमार्क, सिक्योरिटी थ्रेड, रंग बदलने वाली इंक, उभरा प्रिंट, माइक्रो टेक्स्ट

अनुक्रमणिका

फिलैटली'- एक अनोखी रुचि

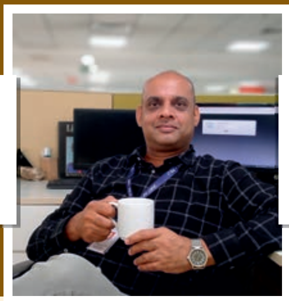

डॉ. अतिउर रहमान खान

भाग I - भूमिका

बचपन में मैं अपने रुचि के बारे में कई बार दूसरों से पृथक रहा हूँ। इस दौरान अंग्रेजी का फैंटम, हिंदी का चाचा चौधरी जैसी कॉमिक्स और बांगला में फेलुदा सीरीज जैसी कहानियों को पढ़ने की अपेक्षा मेरी रुचि डाक टिकट संग्रह और बागवानी की ओर अधिक बढ़ती गई। मेरी डाक टिकट संग्रह की इस रुचि को अंग्रेजी में 'फिलैटली' कहते हैं।

जैसे फिलैटली में डाक टिकटों और डाक इतिहास, आदि के साथ साथ अन्य संबंधित सामग्रियों (स्टाम्प लगे लिफाफों, पोस्टमार्क, पोस्टकार्ड) को इकट्ठा करना, उनका अध्ययन करना और उनकी सराहना करना शामिल हैं; ठीक वैसे फिलेटेलीस्ट वह व्यक्ति होता है, जो डाक टिकटों और संबंधित वस्तुओं का संग्रह और अध्ययन करता है। फिलैटली का वैकल्पिक शब्द "टिम्ब्रोमेनिया", "टिम्ब्रोफिली" और "टिम्ब्रोलॉजी" धीरे-धीरे उपयोग से बाहर हो गए, क्योंकि 1860 के दशक के दौरान प्रचलित शब्द "फिलैटली" को स्वीकृति मिली।

एक नौसिखिया फिलेटलिस्ट के रूप में मुझे लोगों से उनके पास रखे विभिन्न पत्रों के साथ प्राप्त डाक टिकटों को मांगने में अद्भुत आनंद होता था। इसके अलावा, मैं डाक टिकट प्रदर्शनियों में जाया करता और अपने शौक की मूल्यवान वस्तुओं को संग्रहीत करता। टिकट पुस्तक या एल्बम का उपयोग करके मैने अपने संग्रह को प्रदर्शित और संरक्षित करने का कार्य आरंभ किया। बचपन से किशोरावस्था तक यह एक बेहद रोमांचकरी एवं संतुष्टिदायक अनुभूति रही।

भाग II - फिलैटली- एक ज्ञानवर्धक रुचि

बहुत से लोगों को डाक टिकट संग्रह करना इसलिए पसंद आता है, क्योंकि इससे उन्हें अतीत से जुड़ने, विभिन्न देशों, घटनाओं और वस्तुओं के बारे में जानने का अवसर मिलता है। एक शौक के रूप में टिकट इकट्ठा करना अत्यन्त जानकारीपूर्ण और लाभकारी होता है, जिसके कई ऐतिहासिक, सामाजिक, भोगोलिक, और शैक्षणिक पहलू भी हैं।

डाक टिकट जमा करते-करते मैंने अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक एवं शैक्षणिक जानकारी एकत्र की। हालाँकि भारतीय डाकघर की स्थापना 1837 में हुई थी, एशिया का पहला चिपकने वाला टिकट, 'सिंध डॉक', 1852 में सर बार्टले फ्रेरे द्वारा पेश किया गया था, जो सिंध प्रांत के ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासक थे। 1854 में ब्रिटिश राज के गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी ने भारत में पहला राष्ट्रव्यापी डाक टिकट प्रस्तुत किया था। हमें गर्व है कि भारत पहला एशियाई देश है जिसने अपना डाक टिकट जारी किया। स्वतंत्र भारत का पहला डाक टिकट 21 नवम्बर 1947 को जारी किया गया था, जिस पर भारतीय ध्वज के साथ "जय हिन्द" का नारा अंकित था तथा इसका मूल्य साढ़े तीन आना था।

भारतीय डाक इतिहास में यह गौर करने वाली बात है कि 1965 में 15 नए पैसे में चाय का चित्रण करने से लेकर 2017 में 100 रुपये के स्टांप पर कॉफी का चित्रण करने तक, केवल कृषि क्षेत्र में ही हमें कितने विविध कृषि उत्पादों एवं फसलों पर डाक टिकट देखने को मिलता है। भारत सरकार ने काली मिर्च, दालचीनी, इलाइची, लौंग, चाय, कॉफ़ी, नारियल जैसी कृषि

उत्पादों पर भी कई डाक टिकट निकाले हैं। उदाहरण स्वरूप, भाग III में 1983 वाला कपास का स्टाम्प दिखाया गया है, जबकि 2023 में डाक विभाग द्वारा महाबलेश्वर स्ट्रॉबेरी, बिहार के शाही लीची और गिर के केसर आम जैसे स्वादिष्ट फलों के टिकट भी जारी किए गए थे।

1947 में जारी किए गए पहले स्वतंत्र डाक टिकटों की संख्या तीन थीं। इनमें अशोक स्तंभ, (भारत का राष्ट्रीय प्रतीक), भारतीय राष्ट्रीय ध्वज और एक विमान को दर्शाया गया था। तब से भारत ने 3000 से अधिक डाक टिकट जारी किए हैं। 15 अगस्त 1948 को भारत के स्वतंत्रता दिवस की पहली वर्षगांठ के अवसर पर गांधीजी को भारत के टिकटों पर चित्रित होने वाले पहले भारतीय के रूप में सम्मानित किया गया। अगर सामाजिक पहलू की बात करें तो अपने संग्रह से संग्रहकर्ता डाक टिकट इकट्ठा कर के और ज्ञान को साझा करने के लिए क्लबों में शामिल हो सकते हैं तथा प्रदर्शनियों में भाग ले सकते हैं, जहाँ वह अन्य संग्राहकों के साथ टिकटें खरीद या आदान-प्रदान कर सकते हैं।

आधुनिक भारत में विभिन्न प्रयोजनों के लिए कई प्रकार के टिकटों का उपयोग किया जाता है, जिनमें निश्चित टिकट, स्मारक टिकट, गैर-न्यायिक स्टाम्प पेपर, न्यायिक टिकट, राजस्व टिकट, और ई-स्टाम्प शामिल हैं।

मेरा डाक टिकट संग्रह

मैंने अपने द्वारा संग्रहीत निश्चित (डेफिनिटिव) और स्मारक (कमेमरेटिव), दोनों प्रकार के ही डाक टिकटों को यहाँ दर्शाने का प्रयास किया है। निश्चित डाक टिकट (definitive stamps):एक निश्चित स्टाम्प का डिजाइन सरल और सादा होता है, आमतौर पर इसमें कोई कैप्शन (संक्षिप्त विवरण) नहीं होता है, जबकि एक कमेमरेटिव स्टाम्प बड़ा, सुंदर होता है और इसमें एक कैप्शन होता है। यह बहुत बड़ी मात्रा में, कई सालों तक मुद्रित होता है और डाक प्रणाली का मुख्य साधन है।

वन्य जीवन टिकट (1975) उड़ता हुआ बगुलेअंडे सेते हुए; ग्रामीण अर्थव्यवस्था (1979)

उदाहरण स्वरूप, ऊपर दर्शाई गई वन्य जीवन वाली टिकट (1975) में मध्यम आकार का उड़ता हुआ बगुले को दर्शाया गया है; दुसरा, अंडे सेते हुए; और कृषि द्वारा ग्रामीण अर्थव्यवस्था का चित्रण (1979)।

स्मारक डाक टिकट :

इसके ठीक विपरीत, महत्वपूर्ण घटनाओं या विभिन्न क्षेत्रों में प्रमुख हस्तियों को चिह्नित करने के लिए जारी किए जाने वाले यह स्मारक डाक टिकट छोटी मात्रा में मुद्रित होते हैं और इनका जारी होने का समय भी कम होता है, जिसके बाद यह ना तो उपलब्ध होते है और ना ही इसकी कोई कानूनी निविदा रह जाती है। इसके अलावा, स्मारक टिकट प्रकृति के पहलुओं, सुंदर या दुर्लभ वनस्पतियों और जीवों, पर्यावरण संबंधी विषयों, कृषि गतिविधियों, राष्ट्रीय/ अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों, खेलों आदि को प्रदर्शित करने के लिए जारी किए जाते हैं।

अमीर खुसरो की याद में 24 अक्टूबर 1975 को भारतीय डाक और तार विभाग द्वारा "व्यक्तित्व टिकट श्रृंखला" के भाग के रूप में डाक टिकट जारी किया गया था। इसमें खुसरो का एक चित्र था, जिसमें वे बैठे हुए मुद्रा में थे और उनके हाथ में एक पांडुलिपि थी।

अमीर खुसरो (1975) | रिवर राफ्टिंग (1992) | राहुल (1993) | मालवीय-जी की 100वीं जयंती (1961)

राहुल सांकृत्यायन, एक लेखक, निबंधकार, नाटककार, इतिहासकार और बौद्ध धर्म के विद्वान थे, जिन्होंने हिंदी और भोजपुरी में लिखा है। "हिंदी यात्रा साहित्य के जनक" के रूप में जानने वाले, सांकृत्यायन ने हिंदी यात्रा वृत्तांत को साहित्यिक रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1992 में इनका भी डाक

अनुक्रमणिका

स्मारक टिकट जारी हुआ।

इसके अलावा, डाक विभाग ने 27 दिसंबर 2011 को भारतीय इतिहास के एक प्रमुख व्यक्ति मदन मोहन मालवीय की 150वीं जयंती के अवसर पर एक स्मारक डाक टिकट जारी किया। इस डाक टिकट पर मालवीय की तस्वीर है और यह टिकट "भारत के महान पुरुष और महिलाएँ" श्रृंखला का हिस्सा है।

मेरे डाक संग्रह से कुछ महत्वपूर्ण और लोकप्रिय भारतीय टिकट:

भारतीय डाक विभाग की ओर से जारी विभिन्न टिकटों में प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक भारत की झलकियाँ बखूबी दर्शाई गई हैं। इन विविध टिकटों का उपयोग भारत की समृद्ध सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक विरासत के साथ-साथ कुछ महत्वपूर्ण वैज्ञानिक प्रगति के विभिन्न आयामों और कई प्रतिष्ठित हस्तियों को दर्शाने के लिए किया जाता रहा है।

मध्यकालीन भारत को दर्शाते डाक टिकट:

हम इस भाग में दिल्ली सल्तनत और मुगलकाल साहित्य सहित मध्यकालीन मूर्तिकला को दर्शाती विभिन्न मूल्यवर्ग की टिकटें देख सकते हैं।

मध्यकालीन मूर्तिकला (1967)

बहादुर शाह जफर (1975)

1967 के टिकट मध्यकालीन भारत में मूर्तिकला की बारीकियों और सुंदरता को दर्शाते हैं। दूसरा टिकट उस भाग 4 श्रृंखला (1965-75) का हिस्सा है, जो पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए जारी किया गया था। और दूसरी वाली, बहादुर शाह जफर को चित्रित करने वाला भारतीय डाक टिकट इस अंतिम मुगल सम्राट और कवि की स्मृति में जारी किया गया था । 24 अक्टूबर 1975 को जारी की गई यह डाक टिकट उनकी कविताओं का स्मरण कराते हुए इस उर्दू कवि की जन्म की जन्म द्विशताब्दी का प्रतीक है।

ब्रिटिश काल को दर्शाने वाले टिकट:

भारतीय डाक सेवा ने 27 सितंबर 1980 को स्कॉटिश चर्च कॉलेज, कोलकाता की 150वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में एक स्मारक टिकट जारी किया गया। अंग्रेजी माध्यम वाले इस संस्थान की स्थापना तत्कालीन गवर्नर-जनरल विलियम बेंटिक की मदद से की गई थी। एशिया के सबसे पुराने कला एवं विज्ञान महाविद्यालय को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 2006 में "उत्कृष्टता की सम्भावना वाला महाविद्यालय" माना गया।

स्कॉटिश चर्च कॉलेज, कोलकाता (कलकत्ता)

कला, संस्कृति और साहित्य को दर्शाते डाक टिकट:

भारतीय डाक विभाग की विभिन्न व्यापारों और शिल्पों को याद करने वाली श्रृंखला का हिस्सा "बुनकर" टिकट में एक भारतीय बुनकर को काम करते हुए दिखाया गया है। श्रृंखला के अन्य टिकटों की तरह यह टिकट भी बुनाई की कला से जुड़े जटिल विवरणों और कौशल को दर्शाता है, जो इस पारंपरिक शिल्प के सांस्कृतिक महत्व और आर्थिक महत्व को उजागर करता है। इसी तरह, भारतीय डाक टिकट पर कपास का पौधा कपास उत्पादन के महत्व तथा भारत के कृषि और आर्थिक विकास के साथ इसके संबंध को दर्शाता है। कपास के पौधे की मुहर संभवतः कपास के आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व का प्रतीक है।

अनुक्रमणिका

काम पर भारतीय बुनकर, बुनाई की कला को उजागर करते हुए।
कपास क्रांति

राष्ट्रीय व्यक्तित्वों को दर्शाते डाक टिकट:

दिलचस्प बात यह है कि भारतीय डाक द्वारा जारी 60 प्रतिशत टिकट पर महात्मा गांधी का चित्र अंकित है। यह टिकट गांधीजी की छवि को दर्शाने वाले निश्चित टिकटों की श्रृंखला का हिस्सा है तथा इसे स्मारक या विशेष टिकट के रूप में जारी नहीं किया गया है। इन टिकटों का इस्तेमाल अक्सर रोजमर्रा के डाक संचार के लिए किया जाता था और इन्हें भारतीय परिचय के प्रतीक के रूप में व्यापक रूप से पहचाना जाता है।

आधुनिक भारत में औद्योगिक एवं तकनीकी प्रगति को दर्शाते टिकट:

महात्मा गांधी (1988)

इन डाक टिकटों में आधुनिक भारत के कई प्रेरक विषय पाए जाते हैं, जो दूध उद्योग, परिवार नियोजन, सौर ऊर्जा, मत्स्यपालन और कृषि में भारत की प्रगति को प्रदर्शित करते हैं।

श्वेत क्रांति परिवार नियोजन सौर ऊर्जा मत्स्य पालन कृषि

भारतीय डाक टिकट के अलावा मैं विदेशी टिकटों का भी अच्छा-खासा संग्रह बनाने में सफल रहा। यूरोप, अमेरिकी महाद्वीप, अफ्रीका एवं ऑस्ट्रेलिया, प्रशांत क्षेत्र सहित बहुत सारे देशों के डाक टिकट मैंने जमा किए हैं।

महारानी विक्टोरिया डाक टिकट श्रृंखला

यूरोपीय देशों के कई डाक टिकटें:

औपनिवेशिक शक्ति होने के कारण यूरोपीय देशों के पुराने टिकटों पर ज्यादातर राजाओं और रानियों की तस्वीरें छपी होती थीं। इनमें से कुछ टिकटें लोकप्रिय होने के साथ-साथ दुर्लभ भी हैं। जैसे कि पेनी राशिवाली महारानी विक्टोरिया की तस्वीर वाली टिकटों की श्रृंखला।

स्वीडन स्पेन
स्विट्जरलैंड रोमानिया

दूसरी ओर, दिलचस्प बात यह है कि यूरोप के कई देशों के नाम अंग्रेजी में नहीं लिखे हैं। उदाहरण के लिए: स्वेरिग (स्वीडन), एस्पाना (स्पेन), हेल्वेटिया (स्विट्जरलैंड), रोमाना (रोमेनिया), नोर्गे (नॉर्वे), ऑस्टररिच (ऑस्ट्रिया), डोइचु (जर्मनी) और आयरलैंड (आयर) इत्यादि।

ऑस्ट्रिया नॉर्वे जर्मनी पोलैंड

उसी तरह से, "ऑस्टररिच" का अंग्रेजी अनुवाद ऑस्ट्रिया है। ऑस्ट्रिया देश का यह जर्मन नाम है, जिसका अर्थ है "पूर्वी क्षेत्र"। इसी तरह नॉर्वे को (नौर्ग), जर्मनी को (डोइचु) और पोलैंड को पोलस्का लिखा जाता है।

किसी देश का दो भागों में विभाजन होना अथवा एक नए एकीकृत देश का निर्माण होने पर भी डाक टिकटों में एक दिलचस्प आयाम जुड़ सकता है। जैसे 1993 से चेकोस्लोवाकिया एक अखंड देश ना रहते हुए दो राष्ट्रों में विभाजित हो गया था। इसीलिए इतने वर्ष बाद पुराने नाम वाला डाक टिकट अत्यंत रोमांचकारी और दुर्लभ बन गया है।

चेकोस्लोवाकिया

अमेरिकी महाद्वीपों से कुछ डाक टिकटें:

मैंने उत्तर और दक्षिण अमेरिका दोनों के ही अनेक डाक टिकटें प्रदर्शनियों में देखे हैं और भिन्न स्रोतों से संग्रह भी किए हैं। कोलकाता में मेरे मित्रों और कुछ पहचान वालों से मैंने अमेरिकी डाक टिकट लेकर अपना संग्रह बढ़ाया था।

उत्तर अमेरिका

संयुक्त राज्य अमेरिका - कनाडा

दक्षिण अमेरिका

अफ्रीका के डाक टिकट:

नब्बे के दशक में अफ्रीकी डाक टिकटों का संग्रह करना आसान नहीं था। मेरे संग्रह में मुझे कांगो, मोजाम्बिक, मिस्र, माली, युगाण्डा, जिम्बाब्वे, इत्यादी अफ्रीकी देश के टिकट ज्यादा पसंद है। इनमें अधिकतर स्मारक डाक टिकटें हैं। मोरक्को, दक्षिण अफ्रीका, नाईजीरिया, जाम्बिया जैसों देशों के डाक टिकट भी हैं।

भाग IV

डाक टिकट दुर्लभ क्यों हो जाते हैं?

डाक टिकट के विशेषताओं में एक है उसका दुर्लभ हो जाना। एक स्टैम्प कई मायनों में कीमती बन जाता है। डाक टिकटों के दुर्लभ होने के क्या कारण होते हैं? मुद्रण त्रुटियों और विविधताएँ, सीमित उत्पादन से आई कमी, कम उपयोग के कारण दुर्लभता इत्यादि डाक टिकट के दुर्लभ होने के कुछ कारण होते हैं। ये टिकट अक्सर संग्रहकर्ताओं के लिए उपलब्ध नहीं होते।

रंग, छिद्रण या अधिक मुद्रण में सूक्ष्म अंतर एक टिकट को अलग कर सकता है और उसे मूल्यवान बना सकता है। यदि कोई टिकट जारी किया गया था, लेकिन व्यापक रूप से उपयोग नहीं किया गया होगा, तो परिणामस्वरूप उसके कम उदाहरण मौजूद होंगे, जिससे इसकी दुर्लभता बढ़ जाएगी।

डाक टिकटों का ऐतिहासिक या सांस्कृतिक मूल्य हो सकता है, जिससे संग्रहकर्ता उन्हें पसंद करते हैं। फलस्वरूप वे स्वाभाविक रूप से दुर्लभ हो जाते हैं। मांग और रुझान के कारण संग्रहकर्ता की रुचि और वर्तमान रुझानों के आधार पर टिकटों के मूल्यों में उतार-चढ़ाव आ सकता है।

इसके अलावा, एक डाक टिकट की स्थिति, विशेष रूप से, अगर यह पुराना (अप्रयुक्त) है, तो इसके मूल्य को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकता है। अतीत के उच्च-मूल्य वाले टिकट अक्सर दुर्लभ होते हैं, क्योंकि इतनी अधिक डाक राशि की सीमित आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, विशिष्ट देशों

या क्षेत्रों के टिकट संग्रहकर्ता की रुचि और ऐतिहासिक संदर्भ के आधार पर अधिक मूल्यवान हो सकते हैं, तो उत्पत्ति का देश भी एक कारण हो सकता है।

कुछ विदेशी दुर्लभ डाक टिकट:

आइए, मेरे संग्रह से कुछ दुर्लभ विदेशी डाक टिकट देखें और उनके बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करें।

एशिया:

अदन अब एक स्वाधीन देश नहीं है; वर्तमान में यह यमन गणराज्य के भीतर एक शहर और प्रांत है, जिसे 1990 में उत्तर और दक्षिण यमन के एकीकरण के बाद बनाया गया था। इस घटना के उपरांत अदन का डाक टिकट दुर्लभ श्रेणी में आता है।

श्रीलंका (सीलोन):

आधुनिक श्रीलंका का पुराना नाम सिलम था जो 1505 के बाद अंग्रेजों द्वारा सीलोन के रूप में लिपिबद्ध किया गया था। 1972 में श्रीलंका नाम द्वारा प्रतिस्थापित किए जाने तक सीलोन का ही प्रयोग किया जाता रहा। सीलोन नाम वाले डाक टिकटें भी दुर्लभ हैं।

पाकिस्तान:

1971 मे बांग्लादेश और पाकिस्तान के विभाजन से पहले जब वे एक एकीकृत देश थे तब एक देश के तौर पर उनके डाक टिकट पर राष्ट्र का नाम बंगाली लिपि में भी लिखा हुआ होता था।

सोवियत संघ:

इन डाक टिकटों पर सोवियत संघ का नाम अंकित है, जो रूस सहित कई राष्ट्रों में विघटित हो गया है। यही कारण है कि संग्राहक ऐसे डाक टिकटों को दुर्लभ मानते हैं।

यूरोप:

आयरलैंड के यह निश्चित डाक टिकट, उस नियमित श्रृंखला में से है जो 1922 और 1937 के बीच आयरिश मुक्त राज्य द्वारा तथा 1937 से आयरलैंड गणराज्य द्वारा जारी किए जाते थे। यह आयरलैंड के प्रथम टिकटों में से एक है, जिसमें 'आयर' (Eire) लिखा होता था। वर्तमान में 'आयर' लिखे डाक टिकट नहीं पाए जाते।

आयरलैंड का मानचित्र: पहला आयरिश डाक टिकट

भूतपूर्व चेकोस्लोवाकिया (वर्तमान 'चेक गणराज्य' और 'स्लोवाकिया'):

चेक गणराज्य और स्लोवाकिया अब दो अलग-अलग देश हैं। ये दोनों 1 जनवरी 1993 को चेकोस्लोवाकिया से अलग होकर बने थे। परिणामस्वरूप, समय बीतने के साथ चेकोस्लोवाकिया के नाम वाले डाक टिकट दुर्लभ होते जा रहे हैं।

उत्तरी अमरीका:

न्यूफाउंडलैंड डोमिनियन के पहले डाक टिकट 1857 में जारी किए गए थे। जब न्यूफाउंडलैंड 1949 में कनाडा के साथ संघ में शामिल हुआ, तो नए प्रांत ने अपने स्वयं

के टिकट जारी करना बंद कर दिया और कनाडा के बाकी हिस्सों में पहले से ही उपयोग में आने वाले टिकटों को अपना लिया, हालाँकि डाक के लिए न्यूफाउंडलैंड के मौजूदा टिकट अभी भी वैध हैं।

अफ्रीका:

दक्षिणी रोडेशिया 1923 में स्थापित दक्षिणी अफ्रीका में एक स्वशासित ब्रिटिश क्राउन कॉलोनी थी, जिसमें

जेम्बेजी नदी के दक्षिण में ब्रिटिश साउथ अफ्रीका कंपनी के क्षेत्र शामिल थे। यह 1965 में स्वतंत्र हो गया, लेकिन इस स्वतंत्रता को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा मान्यता नहीं दी गई। 1980 में इसका नाम बदलकर जिम्बाब्वे कर दिया गया और इसे अंतर्राष्ट्रीय मान्यता भी मिली।

भाग V - उपसंहार:

टिकट संग्रह एक आनंददायक शौक होने के साथ-साथ उसके कई लाभ भी हैं। यही कारण है कि यह सबसे अधिक पोषित और सराहनीय रुचियों में से एक है। इसका एक शैक्षणिक लाभ यह है कि डाक टिकट संग्रह करते-करते इतिहास, भूगोल और विभिन्न इलाके और उनकी संस्कृतियों के बारे में जानने का यह एक शानदार तरीका हो सकता है। विशेष कर उन देशों के बारे में जिनका हम नाम तक नहीं सुने होते हैं। ये सच में ज्ञानवर्धक है। एक मनोरंजक शौक के तौर पर यह सभी आयु के लोगों के लिए रोमांचकारी और फायदेमंद हो सकता है।

फिलैटली का तात्पर्य डाक टिकटों के संग्रह और अध्ययन से है। एक शौक के रूप में डाक टिकटों को इकट्ठा करना, प्राप्त करना, व्यवस्थित करना, सूचीबद्ध करना, भंडारण करना, प्रदर्शित करना और फुर्सत में किया जाने वाला एक अनोखा और बहुत ही रोमांचक काम है।

टिकट संग्रह के इस शौक को हमें अपनाना चाहिए और हमारे बच्चों को इसका महत्व बताना चाहिए, ताकि वो मोबाइल और टीवी से थोड़ा दूर हो सकें और इंटरनेट से मदद लेते हुए इस रुचि को आगे बढ़ा सकें। ई-मेल, सोशल नेटवर्किंग और इंटरनेट की दुनिया में इस शौक को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है, जहाँ पत्रों द्वारा संचार बहुत सीमित है और व्यक्तिगत पत्राचार के लिए पत्र भेजना खत्म हो रहा है।

भारत में फिलैटेलिक/ स्टाम्प सोसायटी और क्लब ने भारत में सच्चे फिलैटेलिक को जीवित रखने के लिए बहुत कुछ किया है, लेकिन हम भारत में विभिन्न फिलैटेलिक सोसायटी के इतिहास के बारे में बहुत कम जानते हैं, जिन्होंने भारत में फिलैटली की नींव रखी। संभवतः, कोलकाता में स्थित बंगाल की 'फिलैटेलिक सोसायटी' भारत में स्थापित पहली और अपने तरह की सबसे पुरानी संस्था थी, जिसकी स्थापना फरवरी 1894 में हुई थी।

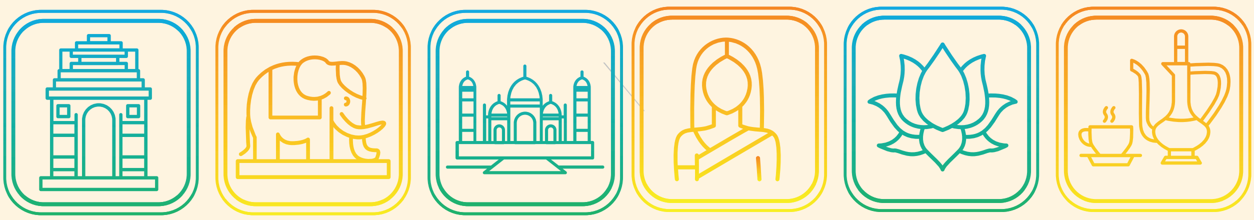

अनुक्रमणिका

पारिवारिक स्तंभ

अनुक्रमणिका

नानी के घर जाऊँगा

यायिन सिंह पुत्र श्री योगेश सिंह

नानी के घर जाऊँगा, मोटा होकर आऊँगा
ननिहाल में है ऐसा दबदबा मेरा,
जहाँ ना है कोई रोकटोक,
ना ही है पढ़ाई का टेंशन,
खाना-पीना राजाओं जैसा,
खुशियाँ है अपार।

चलती-फिरती अजाँ देखी है,
मैंने सर्वना तो नहीं देखा,
पर नानी माँ है देखी,
बहुत ताकत है इन झुर्रियों वाले हाथों में,
ना बिगड़ने देती है और ना बिखरने।

यह जगह है जन्नत जैसी,
जहाँ गम को भी हमने,
खुशियों में बदलते देखा है,
लाड़ लुटाते हैं, दुखों को दूर भगाते हैं,,
कुछ ऐसा घर है मेरी नानी का।

पाँच प्रहरी

रश्मि ताम्रकार पत्नी श्री देवाशीष ताम्रकार

वर्त्तमान समय में, पर्यावरण प्रदूषण जीवन के लिए एक भीषण समस्या है। आधुनिक विज्ञान ने प्रगति तो बहुत की है पर इसका दूसरा पहलू प्रदूषण भी है। भूमि एवं जल प्रदूषण के साथ-साथ जीवन का मुख्य आधार प्राणवायु भी दूषित हो गई है। जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण, खनन, औद्योगिकीकरण और फैशन के कारण निर्वनीकरण या वन-कटाई में बहुत वृद्धि हुई है। वृक्षों की कटाई का दुष्प्रभाव मुख्यतः अल्प-वर्षा, अति-वर्षा एवं वायु प्रदूषण है। वृक्ष वर्षा एवं वायु दोनों के संरक्षण के लिए अति आवश्यक हैं। वृक्ष ही प्राणवायु ऑक्सीजन का विस्तार एवं संचार करते हैं। अच्छी वर्षा और शुद्ध वायु के प्रमुख होने के कारक इन वृक्षों को सनातन धर्म में देवतुल्य माना गया है। ऐसे ही देवतुल्य वृक्षों में नीम, पीपल, आँवला, बरगद और आम हैं, जिन्हें प्रकृति के पाँच प्रहरी के रूप में वरदान प्राप्त है।

नीम - भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही नीम की रोग प्रतिरोधक क्षमता तथा औषधीय गुणों का ज्ञान है। नीम की लकड़ी, पत्ते, छाल, फल, फूल एवं जड़ सभी औषधीय गुणों से भरपूर है। आरोग्य वर्धन, निरोगता के साथ-साथ नीम का वृक्ष शुद्ध वायु और अच्छी वर्षा प्रदान करने में उपयोगी है। जब-जब नीम के वृक्षों की बहुमुखी प्रतिभा पर अनुसंधान किया गया, यह मानव स्वास्थ्य और कल्याण के लिए सबसे अधिक लाभकारी पेड़ों में से एक सिद्ध हुई है।

"अरिष्टं निम्बं प्रसिद्धं, सर्व रोग निवारणी।"

अर्थात, "परिपूर्ण, सम्पूर्ण और अविनाशी नीम प्रसिद्ध है, और सभी रोगों को दूर करने वाला है।"

पीपल - पीपल का पेड़ हिंदू, बौद्ध और जैन धर्मों में सबसे पवित्र वृक्षों में से एक है। इसे दीर्घायु, ज्ञान और सुरक्षा का प्रतीक माना जाता है । पीपल का वृक्ष दुनिया में सबसे अधिक ऑक्सीजन देने वाले पेड़ों में से एक है और हवा को शुद्ध करने की अपनी क्षमता के लिए जाना जाता है। पीपल के पत्ते औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं , जो अस्थमा, मधुमेह और त्वचा रोगों जैसी विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए उपयोग किया जाता है। पीपल एक विशाल सदाबहार वृक्ष है, जिसकी जड़ें गहरी होती हैं, जो मृदा अपरदन में सहायक है।

पीपल की कल्याणकारी विशेषताओं के कारण ही श्रीमद्भगवद्गीता में स्वयं भगवान कृष्ण ने कहा था

"अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां "

अर्थात, "मैं (श्री कृष्ण) सभी वृक्षों में पीपल का वृक्ष हूँ।"

आँवला - आँवले का पेड़ अपने विशेष रासायनिक सद्गुणों एवं औषधीय प्रभाव से प्राचीन काल से ही पूज्य है। इसे अमृत फल तथा कल्प वृक्ष भी कहा जाता है। आँवले का फल परम औषधि है, जिसमें विटामिन 'सी' की अत्यधिक मात्रा पाई जाती है तथा कार्बोहाइड्रेट, फास्फोरस, कैल्शियम, लोहा एवं अन्य विटामिनों के भी धनी होते हैं। इसका पेड़ सूखे एवं ऊष्ण वातावरण में न्यूनतम पानी से भी जीवित रहता है। इसके प्रभाव से वायु शुद्ध होती है और वायु प्रदूषण के निवारण में उपयोगी है।

"आमलकी स्वकीयां निकषा वातावरणं शुद्धं सकारात्मकं च करोति। "

अर्थात, आँवले का पेड़ अपने आसपास के वातावरण को शुद्ध और सकारात्मक बनाता है।

बरगद - बरगद या वटवृक्ष भारत में ना केवल पर्यावरण के लिए, अपितु धार्मिक और आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से भी बहुत महत्वपूर्ण है। बरगद का पेड़

अधिक मात्रा में ऑक्सीजन प्रदान करता है। यह प्रदूषण को कम करने में मदद करता है, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ प्रदूषण अधिक होता है। यह मिट्टी के कटाव को रोकने में भी सहायक है। इसका प्रयोग आयुर्वेदिक चिकित्सा में विभिन्न रोगों के उपचार के लिए किया जाता है। इसकी छाल, पत्ते, फल और जड़ें औषधीय गुणों से भरपूर होती हैं, जो मधुमेह, दस्त, बवासीर, ल्यूकोरिया जैसी बीमारियों के इलाज में उपयोगी है। यह एक राष्ट्रीय वृक्ष है और इसे संरक्षित करना महत्वपूर्ण है। वटवृक्ष का अस्तित्व सृष्टि के प्रारम्भ से ही है।

"वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालमुकुन्दं मनसा स्मरामि। "

अर्थात, मैं मन से उस बाल मुकुंद श्री कृष्ण का स्मरण करता हूँ जो बरगद के पत्ते के आवरण में सो रहा है।

आम - आम का पेड़ भारतीय संस्कृति, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। आम का पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित कर ऑक्सीजन प्रदान करता है। वायु को शुद्ध करता है और गर्मी कम करने में मदद करता है। आम को "फलों का राजा" कहा जाता है। यह भारत का सबसे प्रमुख फल है और देश के कुल फल उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनाता है। इसके पत्तों को शुभ कार्यों, त्योहारों और धार्मिक अनुष्ठानों में उपयोग किया जाता है। इसकी लकड़ी का उपयोग हवन-पूजा में होता है।

"आम्रः अस्ति फलश्रेष्ठः"

अर्थात, आम फलों में श्रेष्ठ है।

"वृक्षः पृथिव्यां रत्नमिव अस्ति।"

इसका अर्थ है, 'पेड़ पृथ्वी पर रत्न के समान है। प्रकृति की रक्षा के लिए इनका संरक्षण और संवर्धन अति आवश्यक है, क्योंकि वृक्ष ही प्रकृति के प्रहरी है।'

महेश्वर - एक अविस्मरणीय स्मृति

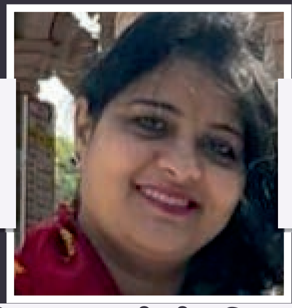

सरिता गुप्ता पत्नी श्री अमित गुप्ता

महेश्वर, मध्य प्रदेश राज्य का एक ऐतिहासिक शहर है जो नर्मदा नदी के किनारे स्थित है। यह मध्य भारत के

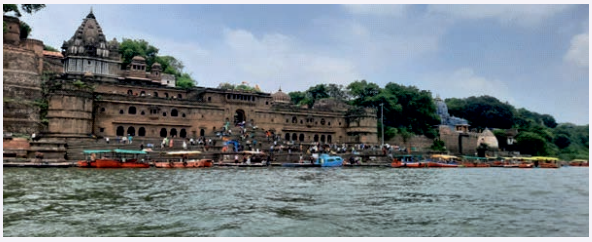

मध्य प्रदेश राज्य के खरगोन ज़िले में स्थित एक कस्बा है। यह राज्य की व्यावसायिक राजधानी इंदौर से 91 किमी दूर स्थित है। यह शहर अपनी धार्मिक महत्व, प्राचीन किलों, और विशेष रूप से देवी अहिल्याबाई होल्कर के शासनकाल के दौरान इसके समृद्ध इतिहास के लिए जाना जाता है। महेश्वर को प्राचीन काल में माहिष्मति के नाम से जाना जाता था।

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, महेश्वर महान मराठा रानी राजमाता अहिल्या देवी होल्कर की राजधानी हुआ करता था। उन्होंने शहर को कई

इमारतों और सार्वजनिक कार्यों से सुशोभित किया, और यह उनके महल के साथ-साथ कई मंदिरों, एक किले और नदी के किनारे बने घाटों का घर भी है।

18वीं शताब्दी में देवी अहिल्याबाई होल्कर ने महेश्वर को अपनी राजधानी बनाया और इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यहाँ देवी अहिल्याबाई द्वारा बनवाए गए सुंदर घाट हैं। महेश्वर कई मंदिरों और धार्मिक स्थलों का घर है, जिनमें राजराजेश्वर मंदिर और अहिल्याबाई का निवास स्थान भी शामिल है।

महेश्वर 5वीं शताब्दी से हथकरघा बुनाई का केंद्र रहा है । महेश्वर भारत की बेहतरीन हथकरघा कपड़ा परंपराओं में से एक का घर है। यह रंगीन माहेश्वरी साड़ियों की बुनाई के केंद्र के रूप में विख्यात है। यह मजबूत मराठा नेता रानी देवी अहिल्या बाई होल्कर के शासन में लोकप्रियता में बढ़ा । अहिल्या बाई शाही मेहमान के लिए शाही उपहार चाहती थीं। इसलिए

मांडू और सूरत के बुनकरों को काम पर रखा गया और माहेश्वरी साड़ी और पगड़ी बुनी गई। ऐसा कहा जाता है

अनुक्रमणिका

कि अहिल्या बाई ने खुद पहली साड़ी डिजाइन की थी। इन साड़ियों को शाही दरबार की महिला सदस्यों द्वारा पहना जाता था। इन साड़ियों को शाही मेहमानों को उपहार में भी दिया जाता था।

यह मराठा होल्कर शासनकाल के दौरान 6 जनवरी 1818 तक मालवा की राजधानी रहा, जब मल्हार राव होल्कर तृतीय ने इसे इंदौर स्थानांतरित कर दिया। महेश्वर किले में देवी अहिल्याबाई की राजगद्दी और ऐतिहासिक वस्तुओं का संग्रह है। नर्मदा नदी महेश्वर के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और यहाँ नौका विहार का भी आनंद लिया जा सकता है।

आप यहाँ से 40 किमी दूर मांडू (मांडव) जा सकते हैं। मांडू विंध्यांचल पर्वतमाला में समुद्र तल से 2,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। मांडू पत्थरों में रचा-बसा एक मध्ययुगीन किला-नगर है, जो कवि-राजकुमार बाज बहादुर के अपनी सुंदर पत्नी रानी रूपमती के प्रति प्रेम के लिए जाना जाता है।

ये यात्रा निसंदेह बहुत यादगार रही। अगर आपको मौका मिले तो आपको इसका अनुभव अवश्य करना चाहिए।

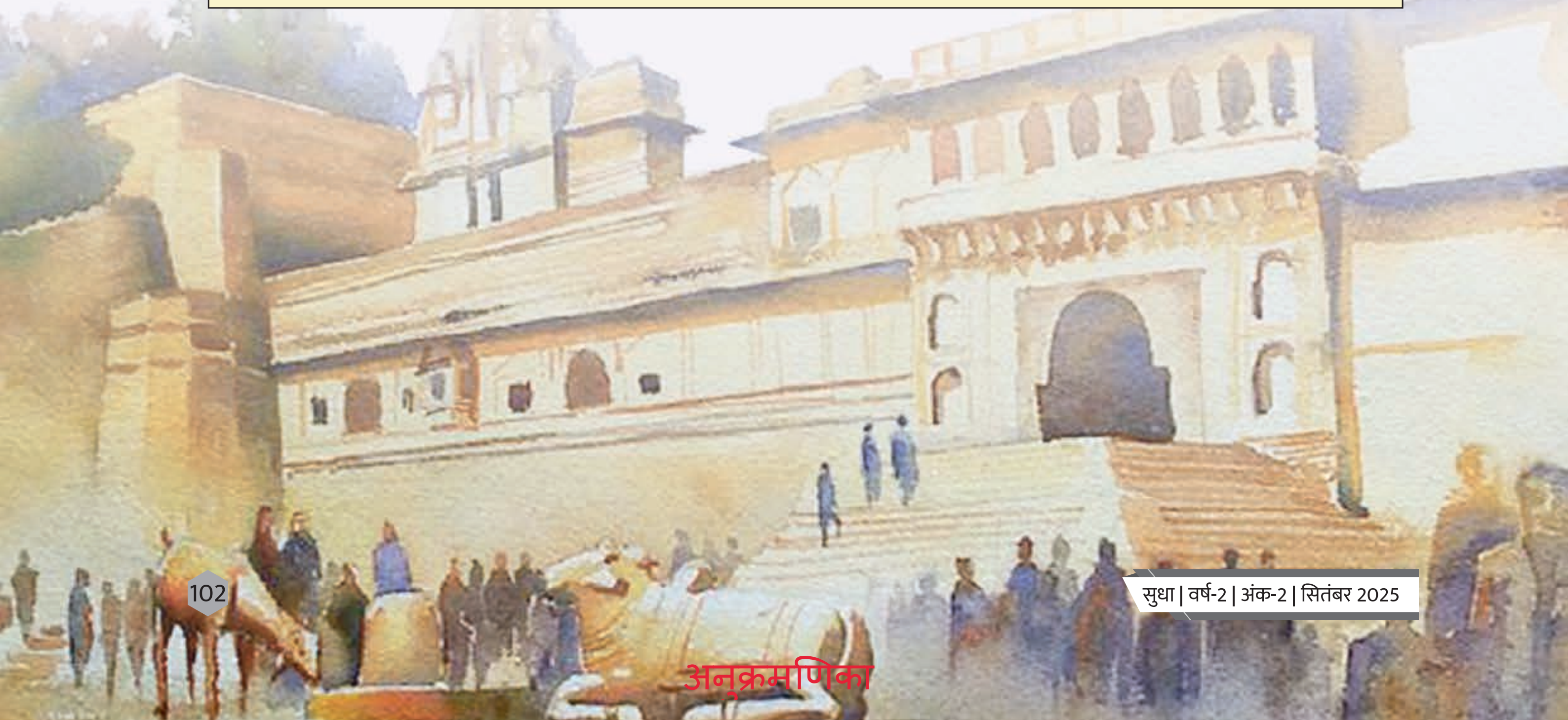

हरे चारे के उत्पादन के लिए कम लागत वाली आधुनिक हाइड्रोपोनिक्स प्रौद्योगिकी

सुचिता विकास गुप्ता
पत्नी श्री विकास गुप्ता

राजेश मुरुमकार

पशुओं को उनके आहार में आवश्यक मात्रा में हरा चारा प्रदान करने के लिए हाइड्रोपोनिक्स के माध्यम से चारा का उत्पादन करना फायदेमंद है। हाइड्रापोनिक्स प्रौद्योगिकी कम समय में हरे चारे के उत्पादन के लिए एक विकल्प के रूप में उभरी है। यह तकनीक आपको कम जगह, कम समय और कम पानी में हरे चारे का उत्पादन करने की अनुमति देती है।

हाइड्रोपोनिक्स क्या है?

हाइड्रोपोनिक्स बिना मिट्टी के केवल पानी या पोषक तत्वों से भरपूर पानी का उपयोग करके एक ट्रे में हरे चावल को उगाने और अंकुरित करने की प्रक्रिया है। जब जानवरों के लिए आवश्यक मात्रा में हरा चारा उपलब्ध नहीं होता है, तब सबसे अच्छा विकल्प हाइड्रोपोनिक्स तकनीक का उपयोग करके आठ से दस दिनों में चारा तैयार करना है। इस तकनीक से चारा उत्पादन के लिए शेडनेट, फॉगर प्रणाली, टाइमर, प्लास्टिक ट्रे आदि की 50 से 75 प्रतिशत क्षमता चाहिए। इसके लिए उपकरणों की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, एक शेड का निर्माण करना आवश्यक है। अच्छी गुणवत्ता वाले बीज जैसे मक्का, गेहूँ, जौ आदि । चारा बनाने के लिए उपयोग किया जाना चाहिए। मक्के के बीज अपेक्षा से अच्छा चारा प्रदान करते हैं।

हाइड्रोपोनिक्स विधि

मक्का चारा उत्पादन के लिए अच्छा होना चाहिए और इसकी अंकुरण क्षमता 80 प्रतिशत से कम नहीं होनी चाहिए।

सबसे पहले, आपको अच्छी तरह से धोने की आवश्यकता है।

3 फीट की ट्रे के लिए 2 किलो मक्के की आवश्यकता होती है।

बीजों के अंकुरित होने के लिए 24 से 30 घंटों के लिए छोड दें।

24 से 30 घंटे के बाद मक्के को ट्रे में समान रूप से फैला दें और इसे ट्रे रैक के आधार पर रखें।

2 मिनट के लिए हर 2 घंटे में पानी भरें। रोजाना 250 से 300 मिलीलीटर पानी दें।

उपरोक्त विधि से, 20 से 30 सेंटीमीटर ऊँचाई का हरा मक्का चारा 7 से 9 दिनों में तैयार हो जाएगा।

हाइड्रोपोनिक्स के लाभ

जानवर पूरा खाना खाते हैं, जिस कारण ये बर्बाद नहीं होता।

जलवायु चाहे जो भी हो, फसलें साल भर उगाई जा सकती हैं।

यह पाचन क्रिया को भी बढ़ाता है।

भोजन कम जगह, कम पानी और कम समय में किया जा सकता है।

समय और संसाधनों की बचत होती है ।

कीट रोगों के कारण नहीं होते हैं।

पानी का उपयोग कम किया जाता है।

इसे बनाते समय निम्नलिखित सावधानियाँ बरतें-

1. अच्छी गुणवत्ता वाले बीजों का उपयोग करें।

2. कमरे साफ और अच्छी तरह हवादार रखा जाना चाहिए।

3. ठंडे पानी का प्रयोग ना करें।

4. बीज अच्छी तरह से और पानी में भिगो दें।

5. सही सामग्री का उपयोग करें। क्षतिग्रस्त बीजों को

काट कर फेंक दें।

इस विधि में अधिक धूप की आवश्यकता नहीं होती है। इसलिए, तो उत्पादित चारे की गुणवत्ता बेहतर होती है यदि हाइड्रोपोनिक रैक को छाया में जमाकर रखें।

पशुओं को खिलाना

फिलहाल, जानवरों को कितना खिलाया जाए ? इस बारे में कोई जानकारी नहीं है। लेकिन आमतौर पर दूध देने वाले और मुर्गी पालन करने वाले जानवरों को इस प्रकार चारा दिया जा सकता है:

पशुधन - प्रति दिन 10 से 12 किलो

मांस - प्रति दिन 6-8 पाउंड

औसतन, 20 फीट के एक शेड में 10 पशुओं का चारा उत्पादित किया जा सकता है।

राज्य में पशुधन की संख्या को देखते हुए, हर साल हरे चारे की 76 प्रतिशत, सूखे चारे की 34 प्रतिशत और पशु आहार की 43 प्रतिशत कमी हैं। प्रचुर मात्रा में चारे की कमी पशुपालन और डेयरी को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है, इसलिए हाइड्रोपोनिक्स द्वारा चारे का निर्माण करना फायदेमंद है।

क्र. सं.	विवरण	संख्या/सामान का वजन	दर, रू.	कीमत, रू.
1.	लुबी मोटर	11	3500	3500
2.	यूपीवीसी पाईप 42 मि.मी.	33 मी.	550	18150
3.	यूपीवीसी पाईप 38 मि.मी.	6 मी.	350	2100
4.	यूपीवीसी पाईप 20 मि.मी.	6 मी.	250	1500
5.	रेगुलेटर व्हॉल्व	2	200	200
6.	वेग/गति नियंत्रण व्हॉल्व	5	50	250
7.	पीव्हीसी पाईप 38 मि.मी.	6 मी.	110	220
8.	टी 38 मि.मी.	75	60	4500
9.	टी 25 मि.मी.	48	50	2400
10.	टी 20 मि.मी.	24	40	960
11.	एल्बो	4	50	200
12.	एंड कैप	4	16	64
13.	जेट स्प्रिंक्लर्स	30	10	300
14.	टाईमर	1	1500	1500
15.	ट्रे	72	80	5760
16.	ऑटोमाइजेशन	1	7000	7000
			एकूण (कुल)	48670

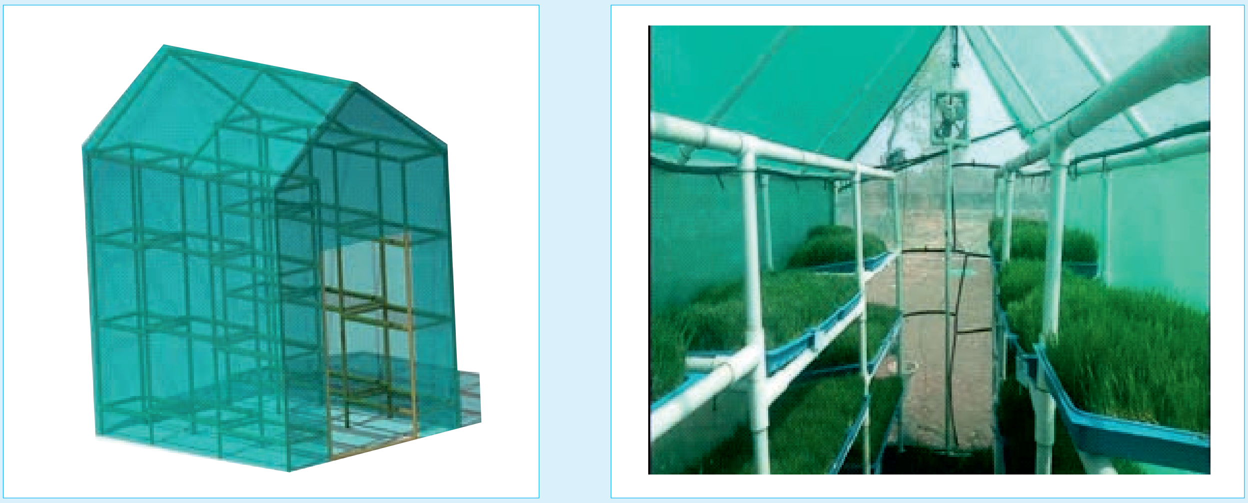

हायड्रोपोनिक संरचना

हरित आवरण बढ़ाने के लिए हाइड्रोपोनिक्स का उपयोग

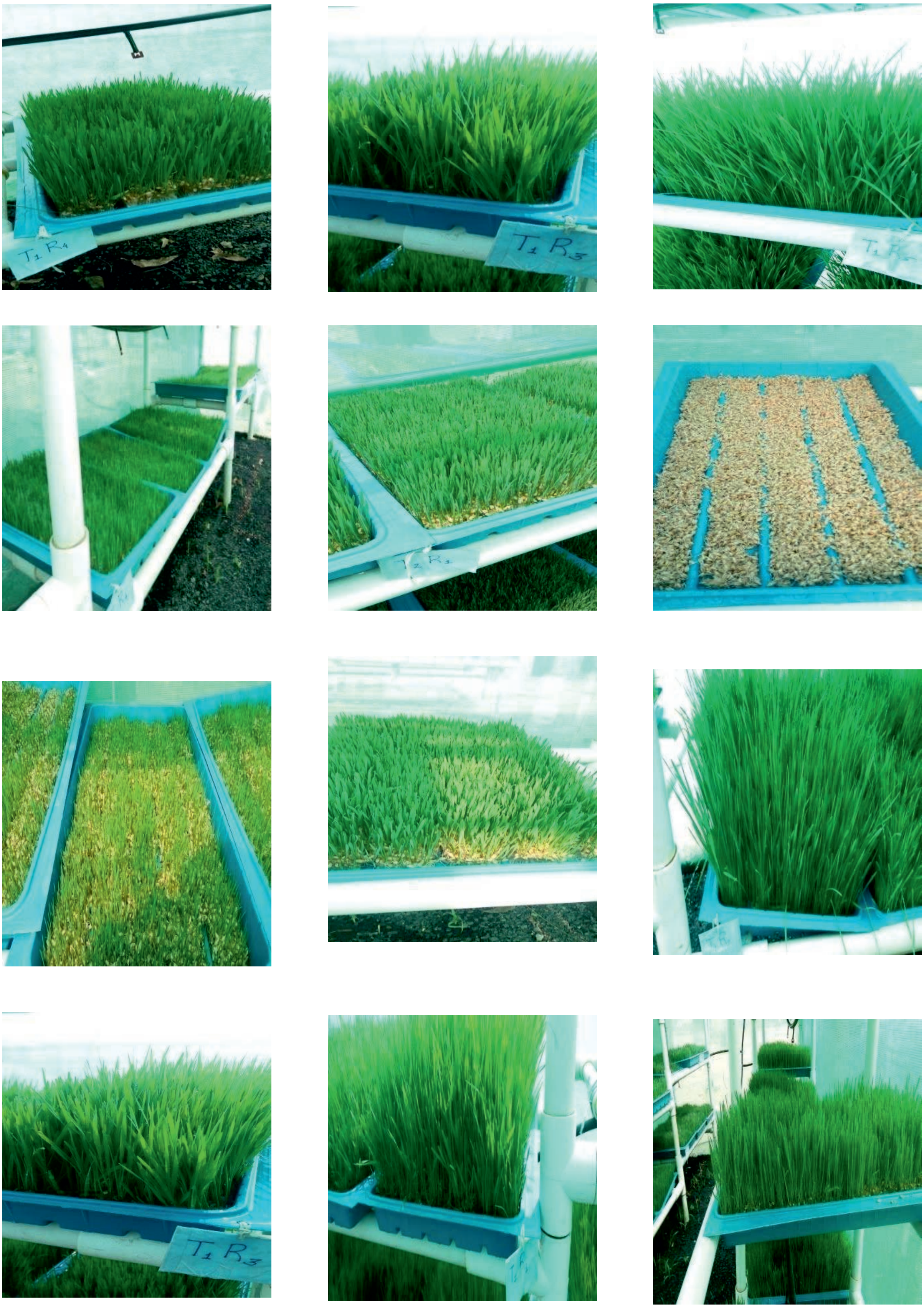

हाइड्रोपोनिक्स प्रौद्योगिकी का उपयोग करके गेहूँ के चारे का उत्पादन

कु. श्रुति आरना गुप्ता
पुत्री श्री मनीष कुमार गुप्ता

चि. अभीष्ट ताम्रकार
पुत्र श्री देवाशीष ताम्रकार

कु. नाइशा कवडीकर
पुत्री सुश्री नेहा गुप्ता

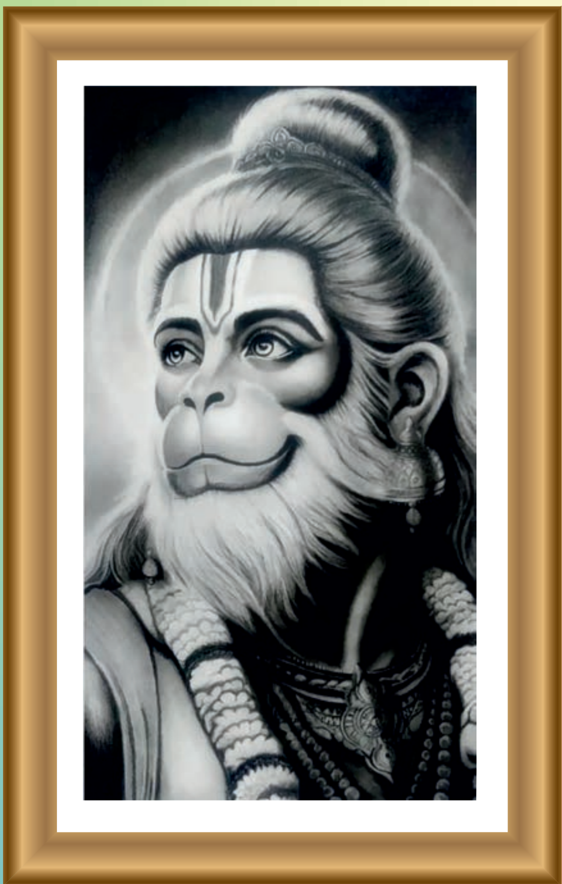

चि. गुरुप्रसाद डोंगरे
भाई सुश्री प्रियंका डोंगरे

अनुक्रमणिका

कु. लास्या येनिशेट्टी
पुत्री सुश्री स्वप्ना येनिशेट्टी

कु. पूर्वा गोडबोले
पुत्री सुश्री सायली गोडबोले

कु. अक्षिता बोराडे
पुत्री श्री राहुल बोराडे

चि. परम तांबे
पुत्र सुश्री प्रितम तांबे

चि. प्रेम पाटिल
पुत्र श्री विवेकानंद पाटिल

कु. सिया गोडबोले
पुत्री सुश्री सायली गोडबोले

मोहम्मद नूह खान
पुत्र डॉ. अतिउर रहमान खान

कु जिया शोभानी
पुत्री सुश्री दीप्ति शोभानी

सीडैक पुणे केंद्र स्तरीय हिंदी पखवाड़ा प्रतियोगिता परिणाम वर्ष-2024

प्रतियोगिता : स्वरचित कविता प्रतियोगिता

दिनांक: 03.09.2024

विजेता

श्री ओम जाधव – प्रथम
श्री अक्षय विलास फराकटे – द्वितीय
श्री सुबोध पाण्डेय - तृतीय
सुश्री शैला सागर एकसंबेकर – प्रोत्साहन
श्री तेजस विलास मुर्डीव – प्रोत्साहन
सुश्री भाग्यश्री वाघ – प्रोत्साहन

प्रतियोगिता : शब्द पहेली

दिनांक: 04.09.2024

विजेता

सुश्री श्रद्धा काळेले – प्रथम
सुश्री माधुरी लोहिया - द्वितीय
सुश्री सायली धीवार – तृतीय
सुश्री हर्षा उगवे - प्रोत्साहन
सुश्री मौमिता चौधुरी – प्रोत्साहन
सुश्री नंदिनी जगताप – प्रोत्साहन

प्रतियोगिता: पावर प्वाइंट प्रस्तुति (पीपीटीज़)

दिनांक: 05.09.2024

विजेता:

श्री नितेशकुमार हरणे – प्रथम
श्री सुबोध पाण्डेय – द्वितीय
श्री दिनेश सूर्यवंशी– तृतीय
श्री ऋषभ राज सिंह – प्रोत्साहन
सुश्री अनीता एस - प्रोत्साहन

प्रतियोगिता: एक पंक्ति हिंदी में

दिनांक 06.09.2024

विजेता

सुश्री नीलिमा बोड़खे
श्री अंकुर भुषण गजभिये
श्री अक्षय सुनिल कल्याणकर
श्री सोहम प्रशांत रंगदल
सुश्री सुमन हर्ष
श्री कौशल किशोर शर्मा
श्री वैभव बापुराव कल्याणकर
श्री गोकुल पंडित ठाकरे
सुश्री प्रणौती दत्तात्रय तोडकर
श्री निगोद दयाल धुरके

प्रतियोगिता: वीडियो प्रस्तुति (परिचर्चा/वार्ता)

दिनांक: 09.09.2024

विजेता

श्री सुबोध पाण्डेय– प्रथम
श्री अक्षय विलास फराकटे – द्वितीय
श्री नितिन कराळे – तृतीय
सुश्री शिवानी परदेशी – प्रोत्साहन

प्रतियोगिता: स्वरचित लेख
(दिए गए विषय में से किसी एक पर)

दिनांक: 10.09.2024

विजेता

सुश्री नीलिमा साहू – प्रथम

श्री अक्षय विलास फराकटे – द्वितीय
श्री प्रथमेश तानाजी कदम– तृतीय
सुश्री चारुलता सावरकर - प्रोत्साहन
सुश्री हर्षा उगवे – प्रोत्साहन

प्रतियोगिता: विज्ञापन प्रस्तुति
दिनांक: 11.09.2024
विजेता
श्री किशोर पाटील – प्रथम
सुश्री रचना विश्वास पाटोळे – द्वितीय
श्री निरंजन पाटगांवकर – तृतीय
श्री तुषार फेगडे– प्रोत्साहन
सुश्री अनिता एस– प्रोत्साहन
सुश्री लक्ष्मी प्रसन्ना– प्रोत्साहन

प्रतियोगिता: हिंदी भाषा प्रश्नोत्तरी
दिनांक: 11.09.2024
विजेता
सुश्री नीलिमा साहू – प्रथम
सुश्री सुनैना शर्मा – प्रथम
श्री नितेशकुमार हरणे – प्रथम
श्री सुबोध पाण्डेय – प्रथम
सुश्री हर्षा उगवे – द्वितीय
श्री संदीप कुमार मिश्र – द्वितीय
सुश्री मानसी मुस्कान – द्वितीय
सुश्री जयश्री पवार – द्वितीय
सुश्री नेहा गुप्ता – तृतीय
सुश्री मौमिता चौधुरी – तृतीय
सुश्री विनीता तिवारी – तृतीय
सुश्री सायली गोडबोले – तृतीय

प्रतियोगिता : सूत्र-संचालन कला प्रस्तुति
दिनांक: 12.09.2024
विजेता
सुश्री नीलिमा साहू – प्रथम
श्री जयवंत कराळे – द्वितीय
श्री ऋषभ राज सिंह – तृतीय
सुश्री समृद्धि गडदरे – प्रोत्साहन

प्रतियोगिता: हिंदी अनुवाद सह टंकण
दिनांक: 13.09.2024
विजेता
सुश्री नीलिमा साहू – प्रथम
सुश्री जयश्री पोकळे – द्वितीय
सुश्री सुनैना शर्मा – तृतीय
सुश्री भाग्यश्री दत्तात्रय भोकरे – प्रोत्साहन
सुश्री शारदा दीक्षित – प्रोत्साहन
श्री विनोद पाचे – प्रोत्साहन
सुश्री मौमिता चौधुरी – प्रोत्साहन
सुश्री स्नेहा काळगी – प्रोत्साहन
सुश्री नंदिनी विक्रांत जगताप – प्रोत्साहन
सुश्री शीतल विशाल निमजे – प्रोत्साहन

प्रतियोगिता: अंताक्षरी
दिनांक: 13.09.2024
विजेता
1. **श्री विनीत सिंह** - प्रथम (टीम - सुरताल)
2. **श्री समृद्ध वाजपेयी** - प्रथम
3. **सुश्री पूर्वी तोमर** - प्रथम
4. **सुश्री भाग्यश्री भोकरे** - प्रथम
5. **श्री वर्धमान पारख** – द्वितीयटीम - सरगम (संयुक्त रूप से)
6. **सुश्री सुनैना शर्मा** – द्वितीय
7. **सुश्री जयश्री पोकळे** – द्वितीय
8. **सुश्री नीलिमा साहू** – द्वितीय
9. **सुश्री हर्षा उगवे** – द्वितीयटीम - ढोल (संयुक्त रूप से)
10. **श्री संदीप मिश्र** – द्वितीय
11. **सुश्री जयश्री संजय पवार** – द्वितीय
12. **सुश्री मानसी मुस्कान** – द्वितीय

सीडैक मुख्यालय स्तरीय हिंदी पखवाड़ा पतियोगिता में पुणे केंद्र से विजेता

सूत्र-संचालन प्रस्तुति
सुश्री नीलिमा साहू, पुणे केंद्र – प्रथम

विज्ञापन प्रस्तुति
श्री किशोर पाटील, पुणे केंद्र, – द्वितीय

स्वरचित लेख
श्री अक्षय विलास फराकटे, पुणे केंद्र, – द्वितीय

वीडियो प्रस्तुति
श्री अक्षय विलास फराकटे, पुणे केंद्र, तृतीय
सर्वश्रेष्ठ आयोजन सहयोग ख क्षेत्र -पुणे

सीडैक वार्षिक हिंदी पत्रिका सुधा में प्रकाशित लेख हेतु नकद पुरस्कार

तकनीकी लेख संकलन
सुश्री नेहा गुप्ता
डॉ विकास कुमार एवं **श्री दीपक यादव**
(संयुक्त रूप से)

साहित्य यात्रा
श्री किशोर पाटिल

भाषा विमर्श
डॉ अतिउर रहमान खान
श्री तेजस विलास मुर्डीव

यात्रा संस्मरण
श्री तानाजी झेंडे एवं **श्री अरुण वर्मा**
(संयुक्त रूप से)

कविता
सुश्री नीलिमा साहू
श्री राजेश कुमार मीणा

कथा/कहानी
श्री समीर गोडांबे
श्री राहुल बोराडे

कला (चित्रकारी)
श्री प्रशांत खैरनार
श्री विवेकानंद शिवशंकर पाटील

पारिवारिक स्तम्भ के अंतर्गत दिया गया प्रोत्साहन पुरस्कार
कु. देवांशी खरे पुत्री **श्री मनोज खरे** - मेरी माँ (कविता)
कु. आरना गुप्ता पुत्री **श्री मनीष गुप्ता**- चित्रकारी
कु. जिया सोभनी पुत्री **सुश्री दीप्ति सोभनी**- चित्रकारी
चि. आयुष बोराडे पुत्र **श्री राहुल बोराडे**- चित्रकारी
कु. लास्या येनिशेट्टी पुत्री **सुश्री येनिशेट्टी**- चित्रकारी
कु. पूर्वा पुत्री **सुश्री सायली गोडबोले**- चित्रकारी
चि. यायिन सिंह पुत्र **श्री योगेश सिंह** - चित्रकारी
कु. श्रुति पाटिल पुत्री **श्री किशोर पाटील**- चित्रकारी
चि. परम तांबे पुत्र **सुश्री प्रितम तांबे**- चित्रकारी

न्यूनतम 20,000 शब्द हिंदी में लिखने हेतु नकद पुरस्कार विजेता
सुश्री माधवी पुळेकर - ₹ 5000 प्रथम
सुश्री जयश्री पोकळे - ₹ 5000 प्रथम
श्री अरुण वर्मा - ₹ 3000 द्वितीय

राजभाषा शील्ड पुरस्कार 2024
श्री नितेशकुमार हरणे - प्रथम
सुश्री माधवी पुळेकर - द्वितीय
श्री अरुण वर्मा - तृतीय

अनुक्रमणिका

“ हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।

-माखनलाल चतुर्वेदी ”

राजभाषा गतिविधियां

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा- हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

C-DAC/Branding and Communication/Sudha/2025

सी-डैक
CDAC
प्रगत संगणन विकास केंद्र
CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING
सी-डैक इनोवेशन पार्क, स. न. 34/ब/1, पंचवटी, पाषाण, पुणे - 411008, भारत
C-DAC Innovation Park, S. No. 34/B/1, Panchavati, Pashan, Pune - 411008, India
फोन/Tel: +91-20-2550 3100, फैक्स/Fax : +91-20-2550 3131 www.cdac.in

बेंगलुरू / Bengaluru I चेन्नई / Chennai I हैदराबाद / Hyderabad I कोलकाता / Kolkata I मोहाली / Mohali I मुंबई / Mumbai I नई दिल्ली / New Delhi I नॉएडा / Noida I नॉर्थ ईस्ट (सिलचर) / North East (Silchar) I पटना / Patna I पुणे / Pune I तिरुवनंतपुरम / Thiruvananthapuram

अनुक्रमणिका